

किसोर । रगमगे मोहन दूल्है नवदुलहिन की जोर ॥ १ ॥ फूलन सोहे  
 सेहरो फूलन सजे है सिंगार । यह सुख देखे ही बने कहत न आवे पार ॥ २ ॥  
 हरखे सखा बराती व्याहन चढे है किसोर । नवपल्लव द्रुम फूले पुष्प अंब  
 के मौर ॥ ३ ॥ आगम ब्याह को जानि सबहिन कियो है सिंगार । लता  
 बेलि फल फूले केसू कुसुम अपार ॥ ४ ॥ जान बरात सबै सजे फागुन  
 भांड को भेख । गारिन के घोड़ा चले गावे गोपीभेख ॥ ५ ॥ उन्मद के  
 हाथी पै जोबन जोर को अंक । इन मस्ती आगे वे घोड़ा हाथी रंक ॥ ६ ॥  
 होहो होरी व्है रही आगे नकीब पुकार । हांसी तारी गारी ये सब प्यादेद्वार ॥  
 ७ ॥ अबीर गुलाल उड़े मानो छांगी चमर दुराय । पिचकारिन के छूटे  
 तिरछे तीर लगाय ॥ ८ ॥ सखी सखा सजि आयें गाल गुलाल लगाय ।  
 मदनमोहन हरि दूल्है देखत सबहि लुभाय ॥ ९ ॥ नर नारी सब फूले भूलो  
 कुल की लाज । उन्मद महीना होरी खेल मच्यो है आज ॥ १० ॥ यह  
 सुख कों को बरने केलि करे ब्रज मांय । द्वारकेस पद बंदों 'दास' रहे सिर नाँय  
 ॥ ११ ॥ ❀ ७०८ ❀ फागुन सुदी १४ ❀ मंगला दर्शन ❀ चौंकि परी गोरी  
 होरी में स्याम अचानक बांह गहीरी । समर छुड़ाय रिसाय चढ़ी भुव अनख  
 अधर कछु बात कहीरी ॥ १ ॥ चितेचिते हँसिके बसिके कसिकें भुजमें  
 रसरासि लहीरी । 'हित हरिवंश' बाल जाल छबि ख्याल रसाल हि देखि  
 रहीरी ॥ २ ॥ ❀ ७०९ ❀ सिंगार समय ❀ राग असावरी ❀ बरसाने ते राधिका  
 हो खेलन निकसी फाग । संग सखी सब बयस की हो जाको परम सुहाग ।  
 छबीली रस भरी । जाको है बड़भाग जाको गिरिधर सों अनुराग । छबीली रस  
 भरी ॥ १ ॥ सखीयूथ में यों लसें हो ज्यों उडुगन में चंद । मानो हेम लता  
 किधों हो कनक कदली वृंद ॥ २ ॥ सब बनिता बनिबनि चली हो जहाँ  
 खेलत बलवीर । नखसिख आभरन साजिके हो पहिरे नौतन चीर ॥ ३ ॥  
 सारी लहँगा और अंगिया हो भांति भांति बहुरंग । मधिनायक प्यारी

बनी हो नवसत साजे सु अंग ॥ ४ ॥ सारी स्वेत सुहावनी हो कंचनसो  
तन पाय । मनो दामिनिसी देह पर हो ज्होन रही लपटाय ॥ ५ ॥ अँगिया  
स्याम बिराजही हो कुच वामे न समात । मनो चकवा पींजरनते हो निकसन  
कों अकुलात ॥ ६ ॥ पाँय धरत लाली फिरे हो इत उत नहिं ठहेराय ।  
मनहु करोती काचकी हो तामे जावक रंग बनाय ॥ ७ ॥ पाँयन नूपुर गूजरी  
हो पायल हेम जराय । नख नग कंचन बीछिया हो राजे विविध बनाय ॥ ८ ॥  
चाल चले लटकनी हो मानो हँस गयंद । निरखि लग्यो मन लाल को हो  
सो परचो प्रेम के फंद ॥ ९ ॥ जंघ कदली करि-सूँड सम हो राजत यह  
आकार । प्रथु नितंब कटि पातरी हो लचकत लँहगा भार ॥ १० ॥ चुद्र-  
घंटिका बाजही हो चोकी हार हमेल । चूरी कंकन पहाँचिया हो मुंदरी  
अंगुरिन भेल ॥ ११ ॥ कुचजुग सोहे बाल के हो तापर मोतिनहार ।  
मानहु कनकपहारते हो चली गंग द्वैधार ॥ १२ ॥ कंबुग्रीव कंठी सुभग हो  
मोतिसरी और पोत । किधों त्रिवेनी संग व्है किधों दीपमालिका जोत ॥ १३ ॥  
चिबुक डिठोना सोहही हो वसीकरन को गेह । रसहि लुब्ध मधुकर मानो हो  
परचो कमल के नेह ॥ १४ ॥ अधर अरुन विद्रुम सरस हो बिंब वंधुक  
सुरंग । सुंदरमुख बीरी लिये लखि लाल भयो रंगरंग ॥ १५ ॥ दंतावलि यों  
लसति है हो कुंदकली ज्यों अनार । अरुनघनमे किधों दामिनी हो दमकत  
वारंवार ॥ १६ ॥ मोती नथमें जो जड़ी हो वामे मनिया लाल । मानो सुक्र  
द्वै भूलही हो गोद भूमि को बाल ॥ १७ ॥ अनियारे नैना बड़े हो वामे  
पुतरी स्याम । अही कारो मुरझाय के हो परचो सुधारसधाम ॥ १८ ॥ भौंह  
बंक चितवन चपल हो अञ्जन दीने नैन । मानो बिषसर साधिके हो धनुस  
चढायो मैन ॥ १९ ॥ मृगमद चंदन कुमकुमा हो तिलक कियो जु बनाय ।  
मानहु रवि ससि एकहि व्है के चढ़े राहु पर धाय ॥ २० ॥ श्रुति ताटंक  
जराय की हो फिरते मोती पोय । रवि पाछे उडुगन लगे हो यह अचरज

रीत ॥ ३८ ॥ व्योम विमानन छाड़यो हो सुर कुसुमन बरखात । यह जोरी  
 मो मन बसी हो गौर सामरे गात ॥ ३९ ॥ वल्लभ चरन प्रताप ते हो सरस  
 धमारे गाय । ब्रजभूसन जिय में बसे हो 'दास' निरखि बलि जाय ॥४०॥  
 ❀ ७१० ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ जहाँ रहत नहीं कछू कान, ऐसो  
 खेल होरी को । जहाँ कहियत परम बखान, ऐसो खेल होरी को । जहाँ  
 मिलवेकी अकुलान । जहाँ बोलत जान अजान । जहाँ खेलत में न अधान ।  
 जहाँ परत नहीं पहिचान । जहाँ रूप भेस उलटान । जहाँ परम निलजता ।  
 बान । जहाँ खेलन की रहठान । जहाँ अति आनंद बढान । जहाँ रहत  
 सबै ऋतु मान । जहाँ खेल लराई ठान । जहाँ तन मन धन बिसरान ॥४१॥  
 करि सिंगार घरनतें निकसी द्वारे ठाडी आय । खेलन कों नंदलाल सों ब्रज-  
 युवती सहज सुभाय ॥ १ ॥ गावत गीत सुहावने ऊंचे स्वर पिय हि सुनाय ।  
 सुनत सवन लै सखन कों आये ब्रजभूसन धाय ॥ २ ॥ मोहन-मन-बस  
 करनकों ब्रजयुवतिन रच्यो उपाय । नाचत गावत रसभरी अरु बाजे विविध  
 बजाय ॥ ३ ॥ बदन बिलोक्यो लाल को हँसि घूँघट पट सरकाय । उर  
 आनंद अतिही बढ्यो मन-भावन यह विधि पाय ॥ ४ ॥ मोहन के सिंगार  
 कों सब लीनो साज मँगाय । चोवा चंदन अरगजा अरु सुगंध गुलाल भराय  
 ॥ ५ ॥ लये सैन दै बात के मिस मोहन निकट बुलाय । परसि कपोलन  
 प्रेमसों पिय लीने अंग लगाय ॥ ६ ॥ बसन नये लै आपुने प्रीतमकों सब  
 पहिराय । आभूसन बहु भाँति के पहिराये देखि बताय ॥७॥ प्रथम कपोलनि  
 छिरकिकै लै चंदन बिंदु बनाय । मुरंग गुलाल अबीर सों करि चित्र रहत  
 मुसिकाय ॥ ८ ॥ पगिया पेचन छिरकिकै बागो इजार छिरकाय । सोभा  
 चित्र विचित्र की नैनन ही परत लखाय ॥ ९ ॥ अधिक गुलाल उडाय के  
 सबहिन की दृष्टि बचाय । मन भायो पियसों करै प्रति अंगन अंग मिलाय  
 ॥ १० ॥ मंडल मधि पिय राखिकै मिलि नाचत अति सरसाय । गावत

अति आनंद सों पिय छिन-छिन हृदैं अघाय ॥ ११ ॥ खेल रच्यो ब्रज-  
लाड़िले ब्रजयुवतिन पाय सहाय । दूर भये गुन गावहीं सब गोप सब्द  
उघटाय ॥ १२ ॥ रस-रसिकन मन अति बढ्यो हो तिहूं लोक रह्यो छाय ।  
श्रीवल्लभ पद कमल की 'जन रसिक' सदा बलि जाय ॥ १३ ॥ ❀७११❀  
❀ भोग सरे ❀ राग सारंग ❀ अहो खेलत वसंत पिय प्यारी । लाल सोधैं  
भरी पिचकारी ॥ ध्रु० ॥ पचरंग लिये गुलाल लाड़िली राधा ऊपर डारी ।  
केसर साख जवाद कुमकुमा भींजि रही रंग सारी ॥ १ ॥ गावत खेलत  
मिलत परस्पर देत दिवावत गारी । छीन लई मुरली पीतांबर रंग रह्यो  
अति भारी ॥ २ ॥ देत नहीं डहकावत सुंदरी हँसि-हँसि जात सुकुमारी ।  
फगुवा लेहु देहु पीतांबर कहत कुंवर हा हा री ॥ ३ ॥ बरनों कहा कहत  
नहिं आवे सौभा सिंधु अपारी । 'हित हरिवंस' लेहु बलि मुरली तुम जीते  
हम हारी ॥ ४ ॥ ❀ ७१२ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग काफ़ी ❀ समधाने तैं  
बामन आयो भर होरी के बीच भरुवा । घेर लियो घर माँझ लुगाइन मूँड  
लगाई कीच भरुवा ॥ १ ॥ काहू लई खिसकाय परदनी काहू कियो कज-  
रारो । पिसी पीठी गोंछन लपटाई बामन को कहा चारो ॥ २ ॥ काहू  
गुदी भगुला पहिरायो काहू गूलरी माला । तारी दै-दै महिगन गावैं  
हँसि-हँसि ब्रज की बाला ॥ ३ ॥ जसुमति लियो बचाय बापुरो निर्मल नीर  
न्हवायो । नये वसन पहिराय गुदी तैं भगुला आनि छिडायो ॥ ४ ॥ तब  
बामन निधरक ह्वै बैठ्यो पहरि ऊजरे कपरा । एक ग्वालिन ने आनि  
उडेल्यो सरी कीच को खपरा ॥ ५ ॥ देख विमल गह्यो चतुरंग ने भले-भले  
करि गावे । अति खिलवार मोधुवा पांडे खेले ही सुख पावे ॥ ६ ॥ पैज  
बांधि जो सुरपति नाचे तो ऐसी फाग न माचे । पेट फुलाय बदन टेढो  
करि विफरयो बामन नाचे ॥ ७ ॥ गहने जोड़ भाई दे पांडे हम तो फगुवा  
चाहैं । एकन कान पकरि गुलचायो काहू ऐंठी बांहें ॥ ८ ॥ जानि सासरे



को यह बामन मोहन कछु ब न कहहीं । 'कृष्णजीवन लछिराम' के प्रभु हरि सकुच-सकुच जिय रहहीं ॥ ६ ॥ ❀७१३❀ संध्या समय ❀ राग काफ़ी ❀ भरो रे न भरो रे न भरो रे लँगरवा । हा-हा मोहि जिनि भरो रे लँगरवा ॥ ध्रु० ॥ सब सखियन मिल केसर घोरयो भरि-भरि लाये करवा । भरि पिचकारी मेरे मुख पर डारी मेरी अंगिया भीजत बस करो रे लँगरवा ॥ १ ॥ बरजि रही बरज्यो नहिं मानत तोरयो उर को हरवा । उलटो मो पै फगुवा मांगे ह्वै रह्यो होरी को भरवा ॥ २ ॥ सुनि ये नाहक नाह लरैगो और कुटुम को डरवा । 'कृष्णजीवन लछिराम' के प्रभु प्यारे लेहुँगी बलैया पाँय परवा ॥ ३ ॥ ❀७१४❀ **होरी** (फागुन सुदी १५)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग देवगंधार ❀ आज माइ मोहन खेलत होरी । नौतन वेस काछि ठाढ़े भये संग राधिका गोरी ॥ १ ॥ अपने भामते आई देखन कों जुरि-जुरि नवल किसोरी । चोवा चंदन और कुमकुमा मुख मांडत लै रोरी ॥ २ ॥ छूटी लाज तब तन न सम्हारत अति विचित्र बनी जोरी । मच्यो खेल रंग भयो भारी या उपमा कों कोरी ॥ ३ ॥ देत असीस सकल ब्रजवनिता अंग-अंग सब भोरी । 'परमानंद' प्रभु प्यारी की छवि पर गिरिधर देत अंकोरी ॥ ४ ॥ ❀७१५❀ सेन दर्शन ❀ फगुवा नाचे पीछे सान्निध्य में ❀ राग कल्याण ❀ कोऊ भलो बुरो जिनि मानो अबै रंग होरी है । मनमोहन के मन मोहन कों श्री वृषभानकिसोरी है ॥ १ ॥ होरी में कहा-कहा नहिं कहियत यामें कहा कछु चोरी है । 'कृष्णजीवन लछिराम' के प्रभु सों जो कहिये सो थोरी है ॥ २ ॥ ❀७१६❀

### उत्सव डोल को (चैत्र वदी १)

❀ पहिले दर्शन खुलें पाछे भोग आये ❀ राग देवगंधार ❀ डोल माई झूलत हैं ब्रजनाथ । संग सोभित वृषभान नंदिनी ललिता विसाखा साथ ॥ १ ॥ बाजत ताल मृदंग भाँफ़ डफ़ रुंज मुरज बहु भाँत । अति अनुराग भरे

मिलि गावत अति आनंद किलकात ॥ २ ॥ चोवा चंदन बूका बंदन उड़त  
 गुलाल अबीर । 'परमानंददास' बलिहारी राजत हैं बलबीर ॥ ३ ॥  
 ❀७१७❀ राग देवगंधार ❀ भूलत डोल दोऊ अनुरागे । केसर और गुलाल  
 सों भीजे चोवा लपटे बागे ॥ १ ॥ ललितादिक मिलि भुलवत गावत एक  
 एक तैं आगे । बाजत ताल पखावज आवज मुरली संग सुहागे ॥ २ ॥ देत  
 असीस चलीं ब्रजसुंदरी फिर खेलेंगे फागे । 'कृष्णदास' प्रभु की छबि निर-  
 खत रोम-रोम रस पागे ॥ ३ ॥ ❀७१८❀ राग देवगंधार ❀ भूलत फूल भई  
 अति भारी । निर्मित वर हिंडोल विटप तर वृन्दाविपिनबिहारी ॥ १ ॥  
 सखी सकल अति मुदित भई हैं पहिरे विविध रंग सारी । भृकुटी भंग  
 लावन्य अंग प्रति कोटि मदन छबि टारी ॥ २ ॥ बरनन करिये कहा प्रेम  
 को रुचिदायक तहाँ गारी । 'व्यास' स्वामिनी की छबि निरखत प्रान संपदा  
 वारी ॥ ३ ॥ ❀७१९❀ राग देवगंधार ❀ मोहन भूलत बढ्यो आनंद । एक  
 ओर वृषभान नंदिनी एक ओर ब्रजचंद ॥ १ ॥ ललिता विसाखा भुलवत  
 ठाडी कर गहि कंचन डोल । निरखि-निरखि प्रीतम अरु प्यारी विहँसि  
 कहत मृदु बोल ॥ २ ॥ उड़त गुलाल कुमकुमा बंदन परसत चारु कपोल ।  
 छिरकत तरुनी मदनगोपाले आनंद हृदै कलोल ॥ ३ ॥ कहा कहौं रस  
 बढ्यो परस्पर त्रिभुवन बरन्यो न जाय । 'कुंभनदास' लाल गिरिधर की  
 बानिक अधिक सुहाय ॥ ४ ॥ ❀७२०❀ दूसरे दर्शन ❀ राग देवगंधार ❀ डोल  
 माई भूलत हैं नंदलाल । संग राजत वृषभान नंदिनी जोरी परम रसाल  
 ॥ १ ॥ गोवर्धन की सुभग सिखर पर रच्यो जो डोल विसाल । कदली  
 करन केतकी कुंजो बकुल मालती जाल ॥ २ ॥ नूतन चूत-प्रवाल रहे लसि  
 माधुरी सों उरभाय । कमल प्रसून पराग पुञ्ज भरि बहत समीर सुहाय ॥  
 ३ ॥ मधुप कीर कल कोकिल कूजत रस मकरंद लुभाय । सुनि-सुनि  
 स्रवन पुलकि पिय-प्यारी रहत कंठ लपटाय ॥ ४ ॥ निर्भर भरत सुगंध

सुवासित रंग-रंग जल लोल । उभय कूल कलहंस मंडली कूजत करत  
 कलोल ॥ ५ ॥ युवतीजन समूह मिलि गावत प्रमुदित लोचन लोल ।  
 बाजत ताल मृदंग होत रंग विलसत तारु कपोल ॥ ६ ॥ चोवा चंदन छिरकत  
 भामिनी अवलोकत रसभाय । विट्ठलनाथ ओरती उतारत 'दास' निरखि बलि  
 जाय ॥ ७ ॥ ❀ ७२१ ❀ भोग आये ❀ राग देवगंधार ❀ भूलत डोल नंदकिसोर  
 वाम भाग वृषभाननंदिनी पहिरे पीत पटोर ॥ १ ॥ बाजत ताल पखावज  
 आवज भालर मुरली घोर । उड़त गुलाल अबीर अरगजा कुमकुम जल चहुं-  
 ओर ॥ २ ॥ वृन्दावन फूली वन वेली कूजित कोकिल मोर । भूलत स्याम  
 भुलावत गोपी आनंद बढ्यो न थोर ॥ ३ ॥ अति अनुराग भरी सब सुंदरी करि  
 अंचल की छोर । कमलनैन मुख सरद चंद्र युवतीजन नैन चकोर ॥ ४ ॥  
 सुर विमान सब कौतुक भूले बरखे कुसुमन जोर । 'सूरदास' प्रभु आनन्द  
 सागर गिरिवरधर सिरमोर ॥ ५ ॥ ❀ ७२३ ❀ राग देवगंधार ❀ भूलत  
 सुंदर युगलकिसोर । नंदनंदन वृषभाननंदिनी पीवत सुधा चकोर ॥ १ ॥  
 भृकुटी भंग धनुस सी सोभित तिलक सु सायक जोर । मंद-मंद मुसिकात  
 स्यामघन करत कटाच्छ इन ओर ॥ २ ॥ अंजन दीपति रंजन लागे रजक  
 दसन तंबोल । मृगमद आड बनी कर कंकन हार सिंगारन डोर ॥ ३ ॥  
 गयो सरकि सु पटोल मनोहर उधरे कुच कलस कठोर । 'सूर' सु निरखत भये  
 प्रेमबस तब पिय करत निहोर ॥ ४ ॥ ❀ ७२३ ❀ राग देवगंधार ❀ भूलत  
 डोल जुगलकिसोर । पिय प्यारी छवि निरखि परस्पर अरुन दृगन की कोर  
 ॥ १ ॥ जाति कुंद और वृंद माधुरी विविध कुसुम की जोर । केकी कोकिल  
 कूजत प्रमुदित अलि गूजत चहुंओर ॥ २ ॥ चंद्रभागा चंद्रावली ललिता  
 भुलवत करसों जोर । गावत भुलवत स्याम मीत कों आनंदसिंधु भकोर ॥ ३ ॥  
 ताल पखावज आवज हुंदुभी बीच मुरलि कल घोर । उड़त गुलाल अबीर  
 कुसुमजल कुमकुम रंग निचोर ॥ ४ ॥ ग्वालबाल सब करत मगन मन दै

कर तारी सोर । सोभित पवन संग चलत अति पीत वसन के छोर ॥५॥ वर  
मंदार पहाँप बरखत अति वृंदावन की खोर । कोटि मदनमोहन गिरिवरधर  
‘रसिकराय’ सिर मोर ॥६॥ ❀ ७२४ ❀ चौथे दर्शन में ❀ राग नट ❀ खेलि फाग  
फूलि बैठे भूलत डोल डहडहे नागर नैन कमल । बहुत दिनन के भये हैं  
श्रमित सुख सखिन संग लीने राधा कृष्ण रस रास जवल ॥ १ ॥ गावत  
राग रागिनी सों मिलि कंठ सरस कोकिला हू ते अमल । ‘कल्याण’ के प्रभु  
गिरधर रीझि भोट देत हिये हरखि गोरे गात छूटे छबिसों धवल ॥२॥  
❀ ७२५ ❀ राग नट ❀ हँसि मुसिकाय परस्पर, डोल भूलत हैं । सुरंग  
गुलाल लई मुट्ठी भरि कटितट में गखी छिपाय धरि चाहत बढ्यो दृगंचल  
॥ १ ॥ देखो कहत अनेक कुसुम पर कैसे दौरत हैं हो अलिवर मानों  
चले पंचसर के सर । तब जिय की जानी मुख ऊपर तबै दई तारी सुंदर  
कर बिथके सब नारी नर ॥ २ ॥ यह विधि भूलत हैं री गिरिधर परसत  
पानि कपोल मनोहर रीझि देत कबहू उर सों उर । ‘मदनमोहन’ पिय परम  
रसिकवर कहा कहीं यह सुख को रागर बलिहारी बानिक पर ॥ ३ ॥  
❀ ७२६ ❀ राग मट ❀ डोल भूलत हैं ब्रजयुवतिन के संग । अङ्ग अङ्ग सोभा  
निरखत प्रतिछिन लज्जित होत अनंग ॥ १ ॥ बाजे बाजत विविध सब्द  
सों बीना बेनु उपंग । कोऊ कर कठताल बजावत महुवरिसरस मृदंग ॥२॥  
कबहू भरि पिचकारिन छिरकत केसू कुसुम सुरंग । नाचत गावत हँसत  
परस्पर कबहुक लेत उछंग ॥ ३ ॥ मच्यो कुलाहल तन सुध विसरी खसित  
सीस ते मंग । प्रमदागन ‘गिरिधर’ मुख ऊपर छबि की उठत तरंग ॥४॥  
❀ ७२७ ❀ राग हमीर कल्याण ❀ डोल भूलत हैं गिरिधरन नवल नंदलाला  
ब्रजपुरवनिता निरखि वारत हैं कंचन की मनिमाला ॥१॥ सकल सिंगार  
अनूपम बाजत कूजत बेनु रसाला । ‘माधोदास’ निरख गोपीजन प्रमुदित  
श्रीगोपाला ॥२॥ ❀ ७२८ ❀ भोग के दर्शन ❀ तमूरा सों ❀ राग नट ❀ तैं री

मोहन कौ मन हरि लीनो । नैक चिते इन चपलनैनन ना जानों कहा कीनो ॥१॥ बैठे री कुंज के द्वार तुव मग जोवत भरि-भरि लेत हियो । 'गोविन्द' प्रभु को प्रेम कहाँलों बरनों सखी तो बिन जाय न जीयो ॥२॥ ❀ ७२६ ❀  
 ❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ मिसहि मिस आवे घर नंद महर के गोकुल की नार । सुंदर बदन बिनु देखे कल न परत भूल्यो धाम काम आछो बदन निहार ॥ १ ॥ दीपक लै चली बाहिर बाट में बड़ो करि डार फिर आय छबि सौं बयार कों देति गार । 'नंददास' नंदलाल सौं लगे हैं नैन पलक की ओट मानो बीते युग चार ॥ २ ॥ ❀ ७३० ❀ सेन दर्शन ❀ राग अडानो ❀ कुंज महल मे ललना रस भरे बैठे हैं संग प्यारी । रुरत रुचिर वनमाल वदन पर मृगमद तिलक सँवारी ॥ १ ॥ घनचय चिकुर कसुम नानाविध ग्रथित मृदुल कर चंपक बकुल गुलाब निवारी । 'गोविंद' प्रभु रसबस कीने वृषभाननंदिनी तैं मदनमोहन गिरिधारी ॥ २ ॥ ❀ ७३१ ❀

### द्वितीया पाट ( चैत्र बदी २ )

❀ जागत्रे में ❀ राग बिभास ❀ भोर भये जसोदाजू बोलैं जागो मेरे गिरि-धरलाल । रतन जटित सिंहासन बैठो देखन कों आई ब्रजबाल ॥ १ ॥ नियरैं आय सुपेती खँचत बहुरयो ठांपत हरि वदन रसाल । दूध दही माखन बहु मेवा भामिनी भरि-भरि लाई थाल ॥ २ ॥ तब हरखित उठि गादी बैठे करत कलेऊ तिलक दै भाल । दै बीरा आरती उतारत 'चत्रभुज' गावैं गीत रसाल ॥ ३ ॥ ❀ ७३२ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग बिभास ❀ मंगल करन हरन मन-आरति वारति मंगल आरती बाला । रजनी रस जागे अनुरागे प्रात अलसात सिथिल बसन अरु मरगजी माला ॥ १ ॥ बैठे कुंज महल सिंहासन श्रीवृषभानकुंवरी नंदलाला । 'ब्रजजन' मुदित ओट व्है निरखत निमिष न लागत लता द्रुम जाला ॥२॥ ❀ ७३३ ❀ राग बिलावल ❀ रसिक-सिरोमनि रंग भीने हो । लाडिली आई नवल बाल रंग भीने हो

॥ १ ॥ जावक लाग्यो सिथिल पाग, रंग भीने हो । भले मनाई भरि  
 फाग, रंग भीने हो ॥ २ ॥ अलक निकसि रही सोभा देत । काम केलि  
 के भुके ॥ ३ ॥ रूप छके लोचन जूंभात । बाहुदंड गड्यो करनफूल ॥४॥  
 दियो है उसीसा सुख को । मन्मथ डगमगी चाल ॥५॥ उरसि मरगजी माल ।  
 महकि रही मिलि तन सुवास ॥ ६ ॥ गावत कीरति सुख की रास । ताहीं  
 सों मिलि सुने खचे ॥ ७ ॥ सहि न सके यह गूढ़ सेन । 'रामराय' प्रभु सुनत  
 हँसे ॥ ८ ॥ ❀ ७३४ ❀ राग बिलावल ❀ चार पहर रस रंग किये, रंग भीने  
 हो । भली कीनी भले आये भोर, लाल रंग भीने हो ॥ १ ॥ अरुन नैन  
 अति रसमसे । कछु जूंभात अलसात ॥ २ ॥ कसूँभी पाग अति लपटात ।  
 उरसि मरगजी माल ॥ ३ ॥ अधर रंग लागत फीको । मिटि गयो तिलक  
 लिलार ॥ ४ ॥ 'गोविंद' प्रभु छबि देखिके । विवस भई ब्रजबाल ॥ ५ ॥  
 ❀ ७३५ ❀ राग बिलावल ❀ जागत सब निस गत भई, रङ्ग भीने हो । रति  
 रस केलि विलास, लाल रङ्ग भीने हो ॥ १ ॥ भली कीनी भले आये प्रात,  
 लाल रङ्ग भीने हो । बोलत बोल प्रतीत के । सुंदर साँवल गात रंग ॥२॥  
 प्रिया अधररस पान मत्त । कहत कहुँ की कहुँ बात ॥ ३ ॥ अति लोहित  
 दृग रगमगे । मनहु भोरज लजात ॥ ४ ॥ चाल सिथिल भुव सिथिल भाल ।  
 ससिमुख सिथिल जंभात ॥ ५ ॥ केस सिथिल वर वेस सिथिल । वयक्रम  
 सिथिल सिरात ॥६॥ 'गोविंद' प्रभु नंदसुत किसोर । बहुनायक विख्यात ॥७॥  
 ❀ ७३६ ❀ राग बिलावल ❀ राधा के रस बस भये, रंग भीने हो । कोटि  
 काम लजात नये रङ्ग भीने हो ॥ १ ॥ पाग सिथिल जावक लाग्यो । भाल  
 तिलक रस में पग्यो ॥ २ ॥ लपटि रही मानो कनकबेलि । नव दुलहिन  
 संग करत केलि ॥३॥ मरकतमनि कंचनमनी । अंग-अंग सोभा घनी ॥४॥  
 रीझि देत पिय कों तंबोल । पीक छांह सोभित कपोल ॥ ५ ॥ उमगि सिंधु  
 सरिता बढ़ी । श्रमजलकन के रङ्ग चढ़ी ॥६॥ यह सुख सोभा कही न जाय ।

निरखि-निरखि लोचन सिराय ॥ ७ ॥ श्री विट्ठल पदरज प्रताप ।  
 'निजदासन' के हरत ताप ॥ ८ ॥ ❀ ७३७ ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀  
 आज और काल और प्रति दिन और और देखिये रसिक श्रीगिरिराजधरन ।  
 नित प्रति नव छबि बरने सु कोन कवि नित ही सिंगार बागे बरन-बरन  
 ॥ १ ॥ सोभा सिंधु अंग-अंग मोहित कोटि अनंग छबि की उठत तरङ्ग  
 विस्व को मन हरन । 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधर को रूपरस पान कीजे जीजे  
 रहिये सदा ही सरन ॥ २ ॥ ❀ ७३८ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀  
 लाल नेक देखिये भवन हमारो । द्वितीया पाट सिंहासन बैठे अविचल राज  
 तिहारो ॥ १ ॥ सास हमारी खिरक सिधारी पिय बन गयो सवारो । आस  
 पास घर कोऊ नाहीं यह एकांत चौबारो ॥ २ ॥ ओटयो दूध सद्य धोरी को  
 लेहु स्यामघन पीजे । 'परमानंददास' को ठाकुर कछु कह्यो हमारो कीजे  
 ॥ ३ ॥ ❀ ७३९ ❀ राग सारंग ❀ चक्र के धरनहार गरुड़ के असवार नंद  
 के कुमार मेरो संकट निवारो । यमला अर्जुन तारे गज ग्राह तैं उबारे नाग  
 के नाथनहारे मेरो तू सहारो ॥ १ ॥ गिरिवर कर पै धारयो इंद्र हू को  
 गर्व गारयो ब्रज के रञ्जनहार बिरद बिचारो । द्रुपदसुता की बेर नेक न  
 कीनी अवेर अब क्यों अवेर 'सूर' सेवक तिहारो ॥ २ ॥ ❀ ७४० ❀ राग  
 सारंग ❀ फूलन की मंडली मनोहर बैठे मदनमोहन पिय राजत । प्रसरित  
 कुसुम सुवासित चहुँदिस लुब्ध मधुप गुंजारत गाजत ॥ १ ॥ पहिरे विविध  
 भाँति आभूषन पीतांबर बैजयंती छाजत । देखि मुखारविंद की सोभा रति-  
 पति आतुर भयो अति भ्राजत ॥ २ ॥ एक रूप बहु रूप परस्पर बरनों  
 कहा मन लाजत । 'रसिक' चरनसरोज आसरो करिवे कोटि यतन जिय साजत  
 ॥ ३ ॥ ❀ ७४१ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग पूर्वी ❀ देखो सखी राजत हैं नंदलाल ।  
 सीस क्रीट सवनन मनि कुंडल उर राजत वनमाल ॥ १ ॥ बागो सरस  
 जरकसी सोहे फैटा छोर रसाल । सुरत केलि रस मुरली बजावत चंचलनैन

विसाल ॥२॥ आस पास सब सखा मंडली मधिनायक गोपाल । 'सूरदास'  
 प्रभु यह सुख बाढ्यो बड़े गोप के बाल ॥ ३ ॥ ❀७४२❀ संध्या समय ❀  
 ❀ राग गोरी ❀ बेनु माई बाजत री बंसीवट । सदा बसंत रहत वृन्दावन  
 पुलिन पवित्र सुभग जमुना-तट ॥ १ ॥ जटित क्रीट मकराकृति कुंडल  
 मुख अरविंद भमर मानो लट । दसन कुंद कली छबि राजत साजत मानो  
 कनक पीत पट ॥ २ ॥ मुनि मन ध्यान धरत नहिं पावत करत विनोद संग  
 बालक भट । दास अनन्य भजन रस कारन 'हित हरिवंस' प्रगट लीला  
 नट ॥ ३ ॥ ❀७४३❀ डोल पीछे मुकुट धरे तब—

❀ मंगला दर्शन ❀ राग विभास ❀ श्री वृन्दावन नव निकुंज ठाड़े उठि  
 भोर । बांह जोरि वदन मोरि हँसत सुरति रति सकुचत पुनि कछू लजात  
 नैन कोर ॥ १ ॥ कबहु करत बेनु-नाद पायो सुधा-स्वाद पंखीजन प्रेम  
 मुदित बोलत चहुं ओर । 'रसिक' प्रीतम छबि निहारि प्रगट्यो रवि जिय  
 बिचारि बार-बार उमगि तहाँ नाचत है मोर ॥२॥ ❀७४४❀ सिंगार समय ❀  
 राग खट ❀ बने आज नंदलाल सखी प्रेम मादक पिये संग ललना लिये  
 यमुना-तीरे । फूली केसर कमल मालती सघन वन मंद सुगंध सीतल समीरे ॥  
 ॥१॥ नील मनि वरन तन कनक मंडित वसन परम सुंदर चरन परस  
 माला । मधुर मृदु हास परकास दसनावली छबि भरे इतरात दृग विसाला ॥  
 ॥२॥ किये चंदन खौर वदन अरविंद मकरंद लुब्ध भ्रमर कुटिल अलकें ।  
 चलत जब स्यामघन हलत कुंडल ललित मनिन की कांति कल गंडन झलकें ॥  
 ॥३॥ एक चंपक तनी कृष्ण रस में सनी मल्लहवे राग पंचम संग लागी सो है ।  
 एक हरि मुख निरखि धरि रही ध्यान मन चित्र सम भई हरि हियो मो है ॥  
 ॥ ४ ॥ एक दामिनि सी भुजहि ग्रीवा मेलि बात कहन मिस मुख मुख सों  
 मिलायो । एक नव कुंज में ऐंचि रही कटिबंद आपनो लाल चित चोर  
 पायो ॥५॥ एक स्यामहि हेरि सुभग लोचन फेरि विहँसि बोली भले कान्ह



कपटी । एक सौंधे भरी छूटे बारन खरी एक बिन कंचुकी रीफि लपटी ॥  
 ॥ ६ ॥ एक स्यामा कनककंज वदनी प्रेम मकरंद भरी हिये हरखि विकसी ।  
 ताके रस लुब्ध रहे लंपट सांवरो भ्रमर प्रानप्यारी भुजन बीच जु लसी ॥ ७ ॥  
 रसिकमनि रंग भरे विहरत वृन्दाविपिन संग सखी-मंडली प्रेम पागी ।  
 कहत 'भगवान हित रामराय' प्रभु सोई जाने जाहि लगन लागी ॥ ८ ॥  
 ❀ ७४५ ❀ राग खट ❀ नवल ब्रजराज को लाल ठाडो सखी ललित संकेत  
 बट निकट सोहे । देख री देखि अनिमेख या भेख कों मुकुट की लटक  
 त्रिभुवनजु मोहे ॥ १ ॥ स्वेदकन भलक कछू भुकी सी रहत पलक प्रेम की ललक  
 रस रास कीने । धन्य बड़भाग वृषभाननृप-नंदिनी राधिका-अंस पर बाहु  
 दीने ॥ २ ॥ मनि जटित भूमि पर नव लता रही भूमि कुञ्ज छबि पुंज  
 बरनी न जाई । नंदनंदन चरन परसि हित जानि यह मुनिन के मनन  
 मिलि पांत लाई ॥ ३ ॥ परम अद्भुत रूप सकल सुख भूप यह मदनमोहन  
 बिना कछु न भावे । धन्य हरि-भक्त जिनकी कृपा ते सदा कृष्ण गुन  
 'गदाधर मिश्र' गावे ॥ ४ ॥ ❀ ७४६ ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग खट ❀ देख री  
 देखि नव कुंज घन सघन तर ठाड़े गिरिवरधरन रंग भीने । मुकुट सिर  
 लाल काटि काछनी बेनु कर राधिका संग भुज अंस दीने ॥ १ ॥ मकर  
 कुंडल सवन भलक अंग परि रही मानो चंदन सी तन खोर कीने । निरखि  
 'गोविंद' छबि सघन नंद-नंद की वारि तन मन दोऊ प्रेम रस भीने ॥ २ ॥  
 ७४७ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ वृन्दावन सघन कुंज माधुरी लतान तर  
 यमुना पुलिन में मधुर बाजे बाँसुरी । जब ते धुनि सुनी कान मानो लागे  
 मदन बान प्रान हू की कहा कहौ पीर होत पाँसुरी ॥ १ ॥ व्याप्यो जो  
 अनंग ताते अंग सुधि भूलि गई कोउ निंदो कोउ वंदो करो उपहासु री ।  
 ऐसे 'ब्रजाधीस' जू सों प्रीत नई रीत बाढ़ी जाके हृदै गड़ि रही प्रेम पुंज

गांसुरी ॥२॥ ❀ ७४८ ❀ अथवा ❀ राग सारंग ❀ वृन्दावन सघन कुंज माधुरी द्रुम  
 भँमर गुंज नित बिहार प्रिया प्रीतम देखवोई कीजे । गौर स्याम नव किमौर  
 सुंदर अति चित के चोर रूप सुधा निरखि-निरखि नैनन भरि पीजे ॥ १ ॥  
 सखी संग करत गान सप्त सुरन लेत तान मंद-मंद मधुर-मधुर धुनि सुनि  
 सुख लीजे । बाढ्यो अति ही हुलास दंपती सब सुखद वास तन मन धन  
 'रसिक' पर वारने कीजे ॥ २ ॥ ❀ ७४९ ❀ अथवा ❀ राग सारंग ❀ मुकुट की  
 छांह मनोहर किये । सघन कुंज तैं निकसि सांवरो संग राधिका लिये ॥ १ ॥  
 फूलन के हार सिंगार फूलन खौर चंदन किये । 'परमानंददास' को ठाकुर  
 ग्वालबाल संग लिये ॥ २ ॥ ❀ ७५० ❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ आज नंदलाल  
 प्यारो मुकुट धरे । सवन लसत मकराकृति कुंडल रतिपति मन जु हरे ॥ १ ॥  
 अधर अरुन अरु चिबुक चारु बने दुलरी मोतिन माल पीतांबर धरे । अति  
 सुगंध चंदन की खौर किये पहाँचनि पहुँची मोतिन की लरे ॥ २ ॥ कर  
 मुरली कटि लाल काछनी किंकिनी नूपुर सब्द हरे । गुन निधान 'कृष्ण'  
 प्रभु रूप-निधि राधे प्यारी निरखि-निरखि नैनन ते न टरे ॥ ३ ॥ ❀ ७५१ ❀  
 ❀ अथवा ❀ राग गोरी ❀ आज नंदलाल प्यारो मुकुट धरे । सवन लसत  
 मकराकृति कुंडल काछनी कटि वरन बनमाल गरे ॥ १ ॥ चंचल नैन विमाल  
 सुभग भाल तिलक दिये सुंदर मुखचंद चारु रूप सुधा भरे । 'विचित्र  
 बिहारी' प्यारो बेनु वजावत बंसीवट ते ब्रजजन मन जु हरे ॥ २ ॥ ❀ ७५२ ❀  
 ❀ सेन दर्शन ❀ राग अढ़ानो ❀ ऐरी चटकीलो पट लपटानो कटि बंसीवट  
 यमुना तट ठाड़ो नागर नट । मुकुट लटक अरु भृकुटी विकट तामें कुंडल  
 की मटक सों अटक्यो है चित करन लपेटे आछी कनक लकुट ॥ १ ॥  
 चटकीली बनमाल कर टेके द्रुमडार टेढे ठाडे नंदलाल छबि छाई घट-घट ।  
 'नंददास' गोपी-ग्वाल टारे न टरत ताते निपट निकट आये सोंधे की लपटा ॥ २ ॥  
 ❀ ७५३ ❀ अथवा ❀ राग अढ़ानो ❀ ए हो आज रीभी हौं तिहारी बानिक पर रूप

चटक ते अटकी । कही न जात सोभा पीत पट की कुंडल की चटक मुकुट  
 की लटक पलट की ॥१॥ कहा री कहों कछू कहत न आवे सोभा नागर  
 नट की । 'सूरदास' प्रभु तिहारे मिलन कों सुधि भूली घट पट की ॥२॥  
 ❀ ७५४ ❀ अथवा ❀ राग केदारो ❀ चलो क्यों न देखें री खरे दोऊ कुंजन  
 की परछाँहि । एक भुजा गहि डार कदम की दूजी भुजा गलबाँहि ॥१॥  
 छबि सों छबीली लपटि लटकि जात कंचन बेलि तरु तमाल उरभाँहि ।  
 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी रीभे प्रेम रंगमाँहि ॥२॥ ❀ ७५५ ❀  
 ❀ पोटवे में ❀ राग विहाग ❀ री तू अंग अंगरानी अति ही सयानी पिय  
 मनमानी । सोलह कला समानी बोलत मधुरी बानी । तेरो मुख देखि चंद  
 जोति हू लजानी ॥१॥ कटि केहरि कदली जंघ नासिका कीर वारों फल  
 उरोज पर अधिक सयानी । 'हरिनारायन स्यामदास' के प्रभु सों तेरो नेह रहो  
 जों लौं गंग जमुन पानी ॥२॥ ❀ ७५६ ❀ टिपारा धरें तब ❀ राग सारङ्ग ❀ श्रीगोकुल  
 राजकुमार सों मेरो मन लागि रह्यो । घूँघरवारे केस साँवरौ अमल कमल  
 दल नैना । जटित टिपारौ लाल काञ्चनी अरु पियरौ उपरैना ॥ कुंडल  
 अलक भलक गंडन पर हँसि बोलत मृदु बैना । कमल फिरावत कर बन  
 माला नूपुर बजत नगैना ॥ १ ॥ काल दुपैरी बिरियाँ ए सखी इन कदमन  
 की ओर । मोहन मंडली संग लीने हेली खेलत हे चकडोर ॥ हौं जु हुती  
 सखियन में ठाढ़ी निरखि हँसे मुख मोर । सब की दृष्टि बचाय आली मोपै  
 डारी नंदकिसोर ॥२॥ आज भोर गई भवन नंद के मैं जु कछुक मिस कीनो ।  
 सोय उठे राजतसिज्जा पै नंदलाल रंग भीनौ ॥ लटपटी पाग रस मसे नैना  
 मोहि देखि हँसि दीनो । पुनि अंगराय दिखाय बदन-छबि चितवत चित  
 हरि लीनो ॥३॥ जाकी गति मति रति लागी जासों ता बिन क्यों हू न  
 सरही । जैसे मीन रहै जल बाहिर तलपि-तलपि जिय मरही ॥ कोउ निंदौ  
 कोऊ वंदौ त्रासौ एकौ जीय न धर ही । कहे 'भगवान हित रामराय' प्रभु

नेकु हियेते न टरही ॥४॥ ❀ ७५७ ❀ सेन दर्शन ❀ राग अडानो ❀ टेढ़ी टेढ़ीपगिया  
मन मोहै छूटे बंद सोंधेसों लपटे । कंचनचोलना यह छवि निरखत काम  
बापुरो कोहै ॥१॥ लाल इजार गरे बनमाल गुंजमाल दुति कुण्डल सोहे ।  
'रसिक' रसाल गुपाललाल गढो कीमत कीमत जोहै ॥ २ ॥ ❀ ७५८ ❀

\* चैत्र वदी १० छप्पनभोग को उत्सव \*

❀ सिंगार समय ❀ राग देवगंधार ❀ श्रीगोकुल घर घर अति आनंद । पौष  
कृष्ण नौमी तिथि प्रगटे पूरन परमानंद ॥ १ ॥ श्रीवल्लभकुल उदय भयो है  
अद्भुत पूरन चंद । भक्तन काज धरी नर देही सुन्दर आनन्दकन्द ॥२॥ जहाँ  
तहाँ नाचत नरनारी गावत गीत सुछंद । 'यादो' श्रीविठ्ठलनाथ भैया हो दूर किये  
दुख द्वन्द ॥३॥ ❀ ७५९ ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग विलावल ❀ महा महोत्सव  
श्री गोकुल गाम । प्रेम मुदित युवती जस गावत स्यामसुन्दर को लै लै  
नाम ॥ १ ॥ जहाँ तहाँ लीला अवगाहत खिरक खोर दधिमंथन ठाम ।  
करत कुलाहल निस अरु वासर आनंद में बीतत सब याम ॥२॥ नंदगोप  
सुत सब सुखदायक मोहन मूरति पूरन काम । 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधर आनंद  
निधि सखी स्वरूप सोभा अभिराम ॥ ३ ॥ ❀ ७६० ❀ राजभोग आये ❀  
❀ राग आसावरी ❀ बैठी गोप-कुंवर की पांति । ललित तिवारी पटा रतन के  
भारी-जल कंचन की कांति ॥१॥ मानिक थाल बिसाल धरे बहु, बेला-बेली  
नाना भांति । खटरस व्यंजन धरे तिनके मधि देखत जिनके नैन सिराति  
॥२॥ पायस करत रोहिनी फिरि-फिरि अति आनंद मांझ सिहात । लपटत  
झपटत सकल संग मिल देखि जसोदा मन मुसकात ॥३॥ अष्ट सिद्धि नव  
निधि दासी तहाँ उठावत जूठन इतरात । देखत यह सुख सुरपुर-वासी भये न  
ब्रजजन आँख चुचात ॥४॥ जेसी सुख-संपति ब्रजजन की पल-पल छिनु-छिनु  
गिनत न जात । 'गोवर्द्धनेस' गिरिधर प्रसाद कों ब्रह्मा हू की मति ललचात  
॥ ५ ॥ ❀ ७६१ ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग नट ❀ जोपे श्रीवल्लभ प्रगट न  
होते । भूतल भूषन विष्णुस्वामी-पथ सिंगार-सास्त्र सब रोते ॥ १ ॥ प्रेम

स्वरूप प्रगट पुरुषोत्तम बिनु पाये कैसे जोते । सेवा-काज लाल गिरिधर की  
कुसुम-दाम कैसे पोते ॥ २ ॥ करि आसरो रहे जे निजजन ते भवपार क्यों  
होते । 'सगुनदास' सिद्धांत बिना यह उर-कपाट क्यों खोते ॥३॥ ❀७६२❀

### संवत्सर ( चैत्र सुदी १ )

❀ सिंगार समय ❀ राग देवगंधार ❀ प्रात समै उठि यसोमति जननी गिरिधर सुत  
कों उवटि न्हावावे । करत सिंगार बसन भूषन ले फूलन रचिरचि पाग  
बनावे ॥१॥ छूटे बंद बागो अति सोहत बिच बिच अंगरजा चावा लावे ।  
सूथन लाल फोंदना फबि रह्यो यह छबि निरखि-निरखि सचुपावे ॥२॥  
विविध कुसुम की माल कण्ठ धरि श्रीकरमें ले वेनु गहावे । लै दरपन  
सुत को मुख निरखत 'गोविंद' तहाँ चरन-रज पावे ॥३॥ ❀ ७६३ ❀

❀ सिंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ आज को सिंगार सुभग साँधरे गोपाल जु  
को कहत न बनि आवें देखेही बनि आवें । भूषन बसन भाँति-भाँति अंग-अंग  
छबि कही न जात लटपटी सुदेस पाग चित्तकों चुरावें ॥१॥ मकर कुंडल  
तिलक भाल कस्तूरी अति रसाल चितवन लोचन विसाल कोटिकाम लजावें ।  
कंठसरी वनमाल फेंटा कटि-छोरन छबि निरखत त्रिभुवन-तिया  
धीर न मन लावें ॥ २ ॥ मेरे संग चलि निहारि ठाड़े हरि कुँजद्वार हितकी  
चित बात कहूँ जो तेरे जिय भावें । 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर नख-सिख सुंदर  
सुजान बड़भागिनि ताहि गिनोँ सु जात ही लपटावें ॥ ३ ॥ ❀ ७६४ ❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ बैठे हरि कुंज नवरङ्ग राधे संग पहरि  
छूटे बंद अंग बागो लाल । लटपटी पाग सिर सुरंग मजलीन कुल्है  
रतन सिरपेच कच ढरक रही अर्धभाल ॥ १ ॥ प्यारी-तन कंचुकी सारी छापे-  
दार पहरी सोंधे भरी महेंक रही अंग बाल । लाल गिरिधरन छबि निरखि  
गति बिबस भई बरबस नई सरस दई रीझ ललिता माल ॥ २ ॥ ❀ ७६५ ❀  
❀ राग सारंग ❀ चैत्रमास संवत्सर परिवा बरस प्रवेस भयो है आज । कुँज

महल बैठे पिय-प्यारी लालन पहरें नौतन साज ॥ १ ॥ आपुही कुसुम हार  
 गुहिलीने क्रीड़ा करत लाल मन भावत । बीरी देत 'दास परमानंद' हरखि  
 निरखि जस गावत ॥ २ ॥ ❀ ७६६ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ आज  
 मनमोहन पिय बैठे सिंहद्वार मोहत सब ब्रजजन-मन । तेसीय मोहन सिर  
 पाग बनी तेसीय कुल्हे सुरंग तेसीय उर माल बन ॥ १ ॥ तेसीय कंठ-मनी  
 तेसोई मोतिनहार तेसीय पीत बरुनी खुली है स्याम तन । 'गोविंद' प्रभु के  
 जु अंग-अंग पर वारों कोटि मदन ॥ २ ॥ ❀ ७६७ ❀ संध्या आरती ❀  
 ❀ रागगोरी ❀ अंग-अंग स्याम सुभग तन भाई । उमगि चली पीत बरुनि  
 मे ते ताहू में है अति अंगराग सोभा कही न जाई ॥ १ ॥ लाल पाग  
 चौकरी बिराजत कुलह सुरंग ढरकाई । स्निग्ध अलक बीच-बीच राखी  
 चंपकली अरुभाई ॥ २ ॥ देखत रूप ठगोरी लागी नैन रहे अरुभाई ।  
 'गोविंद' प्रभु सब अंग-अंग सुंदर मनिराई ॥ ३ ॥ ❀ ७६८ ❀ शयन दर्शन ❀  
 राग ईमन ❀ कहि न परे लाडिले लाल की बंदसि । कुल्हे चंपक भरी  
 अति सुंदर और लटपटी पाग रही आधे सिर धसि ॥ १ ॥ बरुनी पीत  
 पहरें छूटे बंद अरगजा मोजें सोभा स्याम उरसि । 'गोविंद' प्रभु सुरति  
 सिथिल दंपति प्रेम गलित बैठे सब कुँज महल तें निकसि ॥ २ ॥ ❀ ७६९ ❀

### गनगौर ( चैत्र सुदी ३ )

❀ जागवे में ❀ राग विभास ❀ जगावन आवेंगी ब्रजनारी अति रस रंग भरी ।  
 अति ही रूप उजागरि नागरि सहज सिंगारि करी ॥ १ ॥ अति ही मधुर  
 स्वर गावति मोहनलाल को चित्त हरे । 'मुरारीदास' प्रभु तुरत उठि बैठे  
 लीनी लाय करें ॥ २ ॥ ❀ ७७० ❀ मंगला में ❀ राग धिलावल ❀ माई आजु  
 लाल लटपटात आए अनुरागे । सोभित भूखन अंग-अंग आलस भरे  
 रैन उनीदे जागे ॥ १ ॥ लटपटी सिर पेच पाग छूटे बंदन बागे । 'सूर स्याम'  
 रसिकराय रस-बस कीने सुभाय जागे जहाँ सोई तिया बडभागे ॥ २ ॥

❀ ७७१ ❀ राग खट ❀ ठाडे कुंज-द्वार पिय-प्यारी करत परस्पर हँसि-हँसि बतियाँ । रंगीली तीज गनगौर भोर सजि आई घर-घर तें सब सखियाँ ॥ १ ॥ करत आरती अतिरस माती गावति गीत निरखि मुख अँखियाँ । 'कृष्णदास' प्रभु चतुर नागरी कहा बरनों नाही मेरी गतियाँ ॥२॥ ❀ ७७२ ❀

❀ सिंगार ओसरा में ❀ राग बिलावल ❀ राधा माधौ कुंज बुलावे । सुनु सुंदरी मुरलिका द्वारा तेरो नाम लै लै गावे ॥१॥ कौन सुकृत फल तेरो प्यारी बदन सुधाकर भावे । कमला को पति पावन लीला लोचन प्रगट दिखावे ॥ २॥ अब चलि मुग्ध विलंब न कीजे चरन कमल रस लीजे । ऐसी प्रीति करे जो भामिनी ताकों सरबसु दीजे ॥ ३ ॥ सरद निसा-ससि पूरन चंदा खेल बनेगो माई । या सुख की परमिति 'परमानन्द' मोपे कही न जाई ॥४॥ ❀ ७७३ ❀

❀ राग मालकोस ❀ बोलत स्याम मनोहर बैठे कदंब-खंड कदंब की छैयाँ । कुसुमित द्रुम अलि-कुल गुँजत सखी कोकिला-कल कूजत तहियाँ ॥ १ ॥ सुनत दूतिका के बचन माधुरी भयो है हुलास जाके मन महियाँ । 'कुंभनदास' ब्रज-कुंवरि मिलन चली रसिककुँवर गिरिधरन पैयाँ ॥ २ ॥ ❀ ७७४ ❀

❀ राग बिलावल ❀ आज तन राधा सजत सिंगार । नीरज सुत-बाइन को भञ्जन अरुन स्याम रंग कोन विचार ॥ १ ॥ मुद्रापति अचनन तनया सुत उरही बनावत हार । सारंगसुत-पति बस करिवे कों अञ्छत लै पूजत रिपु मार ॥२॥ पारथ पितु आसन सुत सोभित स्याम घटा बगपांति विचार । 'सूरदास' प्रभु हंससुता-तट विहरत राधा नंदकुमार ॥ ३ ॥ ❀ ७७५ ❀

❀ राग सारंग ❀ कहत जसोदा सब सखियनसों आवो बैठो मंगल गावो । है गनगौर की तीज रंगीली कान्ह कुँवर कों लाड लडावो ॥ १ ॥ ललिता चन्द्रभगा चंद्रावली बेगि जाय राधा लै आवो । स्यामा चतुरा रसिका भामा तुम पिय को सिंगार बनावो ॥ २ ॥ कमला चंपा कुमुदा सुमना पहाँपमाल लै उर पहिरावो । ध्याया दुर्गा हरखा बहूला लै दरपन कर वैनु गहावो ॥३॥

कृष्णा यमुना वृंदा नैनां चरन परसि करि नैन लगावो । तारा रंगा हंसा  
 विमला जमुनाजल भारी पधरावो । नवला अबला नीला सीला गूँजा पूवा  
 लै भोग धरावो । हीरा रत्ना मैना मोहा लै बीना तुम तान सुनावो ॥४॥  
 घूमर खेलो मन रस भेलो नेह-मेह बरखा बरखावो । 'कृष्णदास' प्रभु  
 गिरिधर को सुख निरखि-निरखि दोऊ दृगन सिरावो ॥ ५ ॥ ❀ ७७६ ❀  
 ❀राग बिलावल ❀ अरवीलो गरवीलो रंगीलो छबीलो कान्ह करि के सिंगार  
 ठाढौ देखो सखी कुँजद्वार । वाम भाग राधा प्यारी ओढे चुनरी की सारी  
 कंचुकी उत्तंग गाढी ठाडी बहियाँ गरे डार ॥ १ ॥ चूनरी चटकदार पाग  
 सीस नंदलाल सूथन चूनरी बागौ बन्यो अंग घेरदार ॥ २ ॥ फूल-छरी  
 बेनु धरी बजत है रस भरी सुनत सवन धाय आये सब नर नगरा । निरखि  
 मुखारविंद फूले मानो अरविंद करत गुँजार तहां 'कृष्णदास' भमरा ॥ ३ ॥  
 ❀ ७७७ ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग मालकोस ❀ आज कोमल अंगते ब्रज सुंदरि  
 रसिक गोपाल लालें भाई । सकल सिंगार सजि मृग-नयनी अवसर जानि  
 आपु चलि आई ॥१॥ लहँगा लाल भूमक की सारी कसुँभी पीत वरुनी पिय  
 अतिहि रंगाई । 'कुँभनदास' प्रभु गोवर्धनधर अपुनी जानि हँसि कंठ लगाई ॥२॥  
 ❀ ७७८ ❀ राग बिलावल ❀ भोर निकुंज भवन पिय प्यारी करत परस्पर हँसि-हँसि  
 बतियाँ । बाजत बीन पखावज अधोटी गावति चतुर ताल दै सखियाँ ॥  
 ॥१॥ तुम पहरौ बागो आभूषन सीस बांधि अलबेली पगियाँ । तोरा भोरा  
 लूम कलंगी ढरकावो मोरन की पखियाँ ॥२॥ स्याम कंचुकी कसि तन गाढी  
 मैं ओढों सिर सुरंग चुनरियाँ । कर कंकन बाजूबंद पहोंची कंठ पोत दुलरी  
 तिमनियाँ ॥ ३ ॥ अलकावलि भाल टीकी नथ पायल नूपुर अनवट  
 बिछियाँ । यह विधि करि सिंगार दोऊ ठाड़े लै दर्पन मुख निरखि हर-  
 खियाँ ॥ ४ ॥ मृगमद तिलक अलक घुंघरारी देखि चकित भई मद भरी  
 अंखियाँ । 'कृष्णदास' प्रभु चतुर बिहारी लई लगाय स्यामा कों छतियाँ ॥



॥५॥ ❀७७६❀ राजभोग आये ❀ राग नूर सारंग ❀ रंगीली तीज गनगौर आज  
चलो भामिनी कुंज छाक लै जैये । विविध भांति नई सोंज अरपि सब अपने  
जिय की तृपत बुझैये ॥ १ ॥ लै कर बीन बजाय गाय पिय-प्यारी जेमत  
रुचि उपजैये । ‘कृष्णदास’ वृखभानसुता संग घूमर दै नंदनंद रिझैये ॥२॥  
❀७८०❀ नूर सारंग ❀ नवल निकुंज महेल मंदिर मे जेवन बैठे कुंवर  
कन्हारै । भरि-भरि डला सीस धरि अपने ब्रजबधू तहाँ छाक लै आई ॥१॥  
हरखित बदन निरखि दंपति को सुंदरि मंद-मंद मुसकाई । गूँजा-पूआ  
धरि भोग प्रभु कों ‘कृष्णदास’ गनगौर मनाई ॥२॥ ❀७८१❀ नूर सारंग ❀  
मुदित ब्रजनागरी पहरि नये-नये बसन आई सब कुंज लै असन मोहन  
काज । खाटे खारे मधुर तिक्त व्यंजन विविध बहोत पकवान फल-फूल  
डलियन मांफ ॥ १ ॥ धरे आगे लाय-लाय जिय सचुपाय-पाय करत गुन-  
गान कर मांफ ले ले साज । ‘कृष्णदासनिनाथ’ जेवत राधा साथ चैत्र सुद  
तीज गनगौर मानी आज ॥ २ ॥ ❀७८२❀ नूर सारंग ❀ तीज गनगौर  
त्यौहार को जानि दिन करत भोजन लाल-लाड़िली पिय साथ । चतुर  
चंद्रावली बैठि गिरिधरन संग देति नई-नई सोंज ले-ले अपने हाथ ॥ १ ॥  
छबि बरनी न जात दोऊ रुचि सों खात करत हसि-हँसि बात उमगि-भरि-  
भरि बाथ । उपजी अंतर प्रीति मदनमोहन कुंज जीत पीवत पय सद्य प्रभु  
‘कृष्णदासनिनाथ’ ॥ २ ॥ ❀७८३❀ राग सारंग ❀ नंद घरुनि वृखभान-  
घरुनि मिलि कहति सबन गनगौर मनाओ । नये बसन आभूषन पहरो  
मंगल गीत मनोहर गाओ ॥ १ ॥ करि टोकौ नीकौ कुमकुम कौ आँगन  
मोतिन चौक पुराओ । चित्र-विचित्र वसन पल्लव के तोरन बंदनवार  
बँधाओ ॥ २ ॥ घूमर खेलो नवरस झेलो राधा गिरिधर लाड़ लड़ावो ।  
विविध भांति पकवान मिठाई गूँजा पूआ बहु भोग धराओ ॥ ३ ॥ जल  
अचवाय पोंछि मुख वस्तर माला धरि दोऊ पान खवावो । ‘कृष्णदास’

पिय प्यारी को आनन निरखि नैन मन मोद बढ़ावो ॥ ४ ॥ ❀ ७८४ ❀  
 ❀ नूर सारंग ❀ सजि-सजि आई सकल ब्रजनारी । कसि कंचुकी बेंदी  
 अंजन दृग ओढ़ि विविध रंग सारी ॥ १ ॥ बाजूबंद बेरखी चूरी कर कंकन  
 फोंदना री । पहाँची गूजरी बाँह बिजोटी मूंदरी अँगुरियन न्यारी ॥ २ ॥  
 करनफूल अवतंस फूल नथ ढलकत मनि मुक्तारी । अलकावली दामिनी-  
 फूलनि बेनी गूँथि सँवारी ॥ ३ ॥ हँसुली पोत तिमनियाँ दुलरी हिये हार  
 सिंगारी । गुँज माल बैजंती माल बिच लटकत बहु भौरा री ॥ ४ ॥ कटि  
 किंकिनी पग नूपुर अनवट बाजत चलत सुठारी । गज-गमनी अवननी  
 मृगनैनी गावत है करतारी ॥ ५ ॥ मुखहि तंबोल अधर पर लाली कहा  
 कहें रूप छटा री । हँसन-रेख झलकत दसनन बिच मानो चमक चपला  
 री ॥ ६ ॥ बनी रंगीली गनगौर श्री राधा बिलसन कुंजबिहारी । भेटी  
 जाय धाय गिरिधर सों श्री वृषभान-दुलारी ॥ ७ ॥ धन्य सुहाग भाग तेरो  
 भामिनि कहा बरनों रसना री । 'कृष्णदास' प्यारे की प्यारी तोपे सर्वस्व  
 वारी ॥ ८ ॥ ❀ ७८५ ❀ नूर सारंग ❀ सहेली मेरे आज तो रंगीली गनगौर ।  
 नख-सिख अंग आभूखन पहेरों ओढ़ों पीत पटोर ॥ १ ॥ नाचों गावों  
 भाव बताऊं जाय नंद की पौर । बाँधों बंदनवार मनोहर चीतों सुकपीक  
 मोर ॥ २ ॥ विविध भांति नई सोंज अपने कर अरपों नंदकिसोर । करि  
 अचवन जल बीरी दै मुख भेटों दोऊ कर जोर ॥ ३ ॥ सेज कुसुम रचि-  
 पचि पोढाऊँ राखों नैन की कोर । मदन केलि रस-बेलि बढ़ाऊँ मंद हँसनि  
 चित्तचोर ॥ ४ ॥ चांपों चरन निज करन प्रीतम के उलटि-पुलटि दोऊ ओर ।  
 बीजना ढोरों श्रमजल पोंछों अपने अंचल छोर ॥ ५ ॥ अधर सुधारस  
 पिऊँ पिआऊँ निरखि वदन मुख मोर । आलिंगन चुंबन परिरंभन दै-दै  
 प्रेम हिलोर ॥ ६ ॥ मनमथ अंग-अंग प्रति उमग्यो राधा नंदकिसोर ।  
 'कृष्णदास' प्रभु रति रस पागे निसि बीती भयो भोर ॥ ७ ॥ ❀ ७८६ ❀

❀ राजभोग सरे ❀ राग सारंग ❀ जल अचवाय लाल लाडिली कों कुंज भवन में पान खवायो । कर लै बीन बजाय गाय सखी ललिता सारंगराग जमायो ॥ १ ॥ धरि उर कुसुममाल दोऊन कों सहचरि रति-रस रंग बढायो । 'कृष्णदास' गनगौर तीज को पिय-प्यारी त्यौहार मनायो ॥ २ ॥ ❀ ७८७ ❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ आजु की बानिक कही न जाय बैठेऽब निकसि कुञ्जद्वार । लटपटी पाग सिर सिथिल अलकावलि खसित बरुहा चंद रस भरे ब्रजराजकुमार ॥ १ ॥ श्रमजल बिंदु कपोल विराजत मनहुं ओसकन नील कमल पर । 'गोविंद' प्रभु लाडिलौ ललन बलि कहा कहों अंग-अंग सुंदर वर ॥ २ ॥ ❀ ७८८ ❀

❀ राग सारंग ❀ सघन कुंज भवन आज फूलन की मंडली रचि ता मधि लै संग राधा बैठे गिरिधरनलाल । चूनरी की बांधि पाग अङ्ग बागो चूनरी को उपरेना कंठ हीरा हार मोती माल ॥ १ ॥ स्याम चूरी हरित लहँगा पहारि चूनरि भूमक सारी मानो गनगौर बनी ऐन मेन कीरति-बाल । 'कृष्णदास' पिय प्यारी अपने कर दरपन लै देखत मुख बार-बार हँसि-हँसि भरि अंक जाल ॥ २ ॥

❀ ७८९ ❀ राग सारंग ❀ राधा नवल लाडिली भोरी । आवत गावत सब मन भावत सब एक बैस किसोरी ॥ १ ॥ सोंधे भीनी भूमक सारी ओढि पहारि तन चोली । विविध भांति आभूषन अंग में हीरा-हार अमोली ॥ २ ॥ कहा कहों अङ्ग-अङ्ग की माधुरी सोभा सिंधु भकोरी । ले गनगौर संग सब आई श्री ब्रजराज की पोरी ॥ ३ ॥ ललिता चन्द्रभगा चन्द्रावलि स्यामा भामा गौरी । विमला कमला कृष्णा रंगा सुखमा सुमिता बौरी ॥ ४ ॥ जमुना तारा कृष्णा हंसा गहि करसों करजोरी । नैनां मैनां प्रेमा जुहिला नाचत हँसि मुख मोरी ॥ ५ ॥ दुरगा ध्यावा बहुला रसिका ठाढ़ी हरि की ओरी । दुहूं ओर अस्तुति करत तिय भुकि-भुकि सब कर जोरी ॥ ६ ॥ राधा गिरिधर चिरजीयो जुग सदा-सर्वदा जोरी । 'कृष्णदास' यह बानिक

उपर डारत हैं तून तोरी ॥ ७ ॥ ❀ ७६० ❀ भोग दर्शन में ❀ राग नट ❀  
 राधा कौन गोर तें पूजी । वृंदावन गोकुल गलियन में सब कोऊ कहत  
 बहूजी ॥ १ ॥ मदनमोहन पिय को मन हर लीनो कहा बात तोहि सूभी  
 'परमानंददास' को ठाकुर तो सम और न दूजी ॥ २ ॥ ❀ ७९१ ❀  
 ❀ राग सारंग ❀ राधा कौन गोर तें पूजी नंदनंदन ब्रजचन्द ललन की तोसी न  
 दुलहिनि दूजी ॥ १ ॥ रमा रती रंभा सावित्री भुक्ति चरन नित तोरी ।  
 उमयापति अज-तनया सुक मुनि धरत ध्यान कर जोरी ॥ २ ॥ भाग सुहाग  
 अचल तेरो बाढो गाढो पिय सों गोरी । 'कृष्णदास' समता करिवे कों नाहिन  
 त्रिभुवन जोरी ॥ ३ ॥ ❀ ७९२ ❀ संध्या भोग आये ❀ राग सारंग ❀ बन  
 ठन आई रंगीली गनगौर । सजि सिंगार चञ्चल मृगनैनी पहेरें पीत पटोर  
 ॥ १ ॥ सखी सहेली लै संग राधा गावत नंद की पोर । निरखत हरखत  
 अतिरस बरखत मोहे नंद किसोर ॥ २ ॥ उपजी प्रीति परस्पर अन्तर मानो  
 चंद चकोर । 'कृष्णदास' पिय प्यारी की छबि पर डारत हैं तून तोर ॥ ३ ॥  
 ❀ ७६३ ❀ संध्या समय ❀ राग कल्याण ❀ दुहिवो दुहायवो भूल गयो हो ।  
 सेली हाथ बछरूवन मिलवत नूपुर को ठमको जो भयो हो ॥ १ ॥ नयो  
 जोवन नयी चूनरी के बंद दुरि मूरि के चितयो हो । 'धोंधी' के प्रभु रस  
 बस करिलीनो प्यारी प्यारो रिभयो हो ॥ २ ॥ ❀ ७६४ ❀ राग गोरी ❀  
 तीज गनगौर त्यौहार को जानि दिन ठाडे कुंजद्वार संध्या समै पिय प्यारी ।  
 दौरि नर नारि सब आये दरसन करन भई आंगन मधि भीर भारी ॥ १ ॥  
 बजत बीना मृदंग तानपूरा चंग गान गावत सखा आठों करदे तारी ।  
 'कृष्णदास' निनाथ रानी जसुमति मात करत आरती करन मधि ले थारी  
 ॥ २ ॥ ❀ ७९५ ❀ सयन भोग आये ❀ राग कान्हरो ❀ देखि गनगौर गहि  
 अंगूरी बल मोहन की करन ब्यारू आय बैठे लै संग तात । पूरी पकवान  
 कढ़ी साग ओदन दार घृत सान दूध भात लाई जसुमति मात ॥ १ ॥ जैमत

दोऊ भ्रात मुसिकात करि-करि बात छबि न बरनी जात फूले अंग न मात ।  
 भरे लाल आलस प्रभु 'कृष्णदासनिनाथ' पीवत पय गाढो लै कनक बेला  
 हाथ ॥२॥ ❀७६६❀ राग कान्हरा ❀ देखि गनगौर पिय प्यारी नवकुंज में  
 आय बैठे ब्यारू करन दोऊ मिलि साथ । विविध पकवान व्यंजन बहो  
 भांति के ठाडी भरि थार लै ललिता अपने हाथ ॥१॥ जेवत आलस भरे  
 देखि चंद्रावलि ढोरत बिजना श्रमित जान बल्लभ नाथ । दूध तातो मिष्ट  
 भरि कनकपात्र पियो सचुपाय प्रभु 'कृष्णदास' के हाथ ॥२॥ ❀७६७❀  
 ❀ सेन दर्शन ❀ राग केदारो ❀ बन-ठन ब्रजराजकुंवर बैठे सिंघद्वार आय  
 देख गनगौर आंगन लै संग सब ग्वाल बाल । नखसिख सजि-सजि  
 सिंगार आई सकल घोखनारि परम सुंदर चतुर सुघर गावत सुर गीत  
 रसाल ॥१॥ मंडल जोरि घूमर लेत अरस-परस चहुँ ओर सखी सहचरी  
 ब्रज की बधू उमगि-उमगि दैदैं ताल । 'कृष्णदास' प्रभु की बानिक निरखि  
 जुवती विवस भई निकट आय पाँय लागि पहेरावत कंठमाल ॥२॥ ❀७६८❀  
 ❀ मान ❀ राग बिहाग ❀ तोसी तिया नहीं भवन भट्टरी । रूपरासि रसरसि  
 रसिकिनी तोय देखि भये नंदलाल लटूरी ॥१॥ सु तन कर दृढ़ गांठ दर्ई  
 जुरि सुरंग चूनरी पीत पटूरी । 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर नागर तू नागरी  
 वे नवल नटूरी ॥२॥ ❀ ७६९ ❀ राग केदारो ❀ धन्य वृंदा विपिन धन्य  
 गोकुल गाम धन्य राधा कोन गौर तैं पूजी । धन्य बडभाग्य सौभाग्य तेरो  
 सुजस रसिक नंदनंदन की तू बहूजी ॥१॥ चक्र चूडामनी रूप गुन आगरी  
 नाहि त्रिभुवन वाम तोसी दूजी । 'कृष्णदासनिनाथ' साथ बिलसन सदा  
 तोही सम नाहि नवनारी सूझी ॥२॥ ❀८००❀ पोढवे में ❀ राग बिहाग ❀  
 कुंज में पोढे रसिक पिय प्यारी । सखी मुदित अति चित्र-विचित्रित कुसुमन  
 सैज समारी ॥१॥ हँसत परस्पर बतरस बरखत आनंद उपज्यो भारी ।  
 सुरतरंग के रस में माते 'नंददास' बलिहारी ॥२॥ ❀८०१❀ राग केदारो ❀

नंदनंदन श्रीवृषभाननंदिनी संग मदन रस केलि सुख-सेज ठान्यो । अतर  
 चंदन पान फूल माला सुखद सखी स्वर साध कछु राग गान्यो ॥१॥ मलय  
 घनसार करपूर मृगमद लाय धरत ललिता तहां सनेह सान्यो । 'कृष्णदास-  
 निनाथ' नवल राधा साथ तीज गनगौर त्यौहार मान्यो ॥२॥ ❀ ८०२ ❀  
 ❀ चैत्र सुदी ४ ❀ जागवे में ❀ राग विभास ❀ प्रात समें जागी अनुरागी-सोवत  
 हुतीरी स्यामजू की संगिया । चीर सम्हारत उठीरी दक्षिन कर वाम भुजा  
 फरकी भर अंगिया ॥१॥ भाल में सुहाग भारी छबि उपजत न्यारी पहरे  
 कसुंभी सारी सोंधे रगमगिया । 'अग्रस्वामी' लाड लडाई बहुत कीनी बडाई  
 फूली फूली फिरति अति ही सगमगिया ॥२॥ ❀ ८०३ ❀ मंगला दर्शन ❀  
 ❀ राग विलावल ❀ प्यारी के महल तें उठि चले भोर । सखीवृंद अवलोक  
 अग्रस्थित ठकत नील कंचुकी पीत पट छोर ॥१॥ राधा चरित विलोकि  
 परस्पर तें जु हास इत-उत मुख मोर । 'गोविंद' प्रभु लै चले दगा दै नागर  
 नवल सभा चित्त चोर ॥२॥ ❀ ८०४ ❀ शृंगार ओसरा में ❀ राग विलावल ❀  
 तें गोपाल हेत नील कंचुकी रंगाय लई भली करी सुफल भई आज निस  
 सुहावनी । रोम-रोम फूली चाय चपल नैन भृकुटी भाय अभरन चाल  
 अंग मराल डगमगी सुहावनी ॥१॥ सुभग सारी भुमक तन स्याम पाट  
 कुसुम नीवी तान सुख पचरंग छींट ओढ़नी सुहावनी । सोहत अलक  
 बिथरे बदन मोहन लावन्य-सदन 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर केलि अति  
 सुहावनी ॥२॥ ❀ ८०५ ❀ राग विलावल ❀ मैं तेरी अधिक चतुराई जानी  
 तें न. कंचुकी सँवारी । आनंदरस-बस देह-सुधि भूलि गई मिलत गोवर्धन-  
 धारी ॥१॥ कहा कहीं गुनरासि अङ्ग-अङ्ग चलत मधुर गति भारी ।  
 'कृष्णदास' प्रभु रसिक लाल के तू अति प्रान-पियारी ॥ २ ॥ ❀ ८०६ ❀  
 ❀ राग विलावल ❀ कंचुकी के बंद तरक तरक टूटे देखत मोहन स्यामे ।  
 काहे कों दुराव करत है मोसों उमगत उरज न दुरत हो कित यामें ॥१॥

कमल बदन पर अलकावलि छवि मानों मधुप लज्जित विश्रामे । 'कृष्ण-  
दास' प्रभु गिरिधर नागर यह विधि सुमुखि लजावत कामे ॥२॥ ❀ ८०७ ❀

**रामनवमी तथा उत्सव श्री ब्रजभूषणजी को ( चैत्र सुदी ६ )**

❀ पंचामृत समय ❀ राग देवगंधार ❀ नौमी चैत की उजियारी । दसरथ के  
गृह जनम लियौ है मुदित अयोध्या-नारी ॥१॥ राम लच्छमन भरत सत्रुहन  
भूतल प्रगटे चारी । ललित विसाल कमलदल लोचन मोचन दुःख सुख-  
कारी ॥२॥ मन्मथ मथन अमित छवि जलरुह नील बसन तन सारी । पीत  
बसन दामिनी द्युति बिलसत दसन लसत सित भारी ॥३॥ कटुला कंठ  
रत्न मनि बघना धनु भृकुटी गति न्यारी । धुदुरुन चलत हरत मन सबको  
'तुलसीदास' बलिहारी ॥४॥ ❀ ८०८ ❀ शृङ्गार ओसरा में ❀ राग बिलावल ❀  
कौसल्या रघुनाथ कों लिये गोद खिलावे । सुंदर बदन निहारकें हँसि कंठ  
लगावे ॥१॥ पीत भृगुलिया तन लसे पग नूपुर बाजे । चलन सिखावे  
रामकों कोटिक छवि लाजे ॥२॥ सीस सुभग कुलही बनीमाथे बिंदु बिराजे ।  
नील कंठ नख केहरी कर कंकन बाजे ॥३॥ बाल लीला रघुनाथ की यह  
सुने और गावे । 'तुलसीदास' कों यह कृपा नित्य दरसन पावे ॥४॥ ❀ ८०९ ❀  
❀ राग बिलावल ❀ सुभग सेज सोभित कौसल्या रुचिर राम सिसु गोद लिये ।  
बाललीला गावत हुलरावत पुलकित प्रेम पीयूष पिये ॥१॥ कबहू पौढि पय  
पान करावत कबहू राखत लाय हिये । बार-बार बिधु बदन बिलोकत लोचन  
चारु चकोर पिये ॥२॥ सिव विरंचि मुनि सब सिहात हैं चितवत अंबुज ओट  
दिये । 'तुलसीदास' यह सुख रघुपति को पायो तो काहू न बिये ॥३॥ ❀ ८१० ❀  
❀ राग बिलावल ❀ गावत राम-जनम की गाथा । दसरथ के गृह प्रगट भये  
प्रभु पूरन ब्रह्म सनाथा ॥ १ ॥ आज प्रार्थना सुफल भई यह अब काज-  
देव सब सरिहैं । दुष्ट दलन संतन सुखदायक भुव को भार उतरिहैं ॥ २ ॥  
भवन चतुर्दस करत प्रसंसा भूरि भाग्य रघुकुल को आहि । नेति-नेति

निगमादिक गावें सोई सुत कौसल्या जाहिं ॥ ३ ॥ देत असीस सूत मागध-  
जन पुर-वासी नर नारी । कौसल्यानंदन के ऊपर तन-मन डारत वारी ॥  
॥ ४ ॥ ❀८१❀ राग देवगंधार ❀ राम जनम मानत नंदराय । प्रथम फुलेल  
उबटनो सोंधो यह विधि लाल न्हावाय ॥ १ ॥ रंग केसरी बागो कुल ही  
आभूखन पहेराय । सबकों ब्रत यह लरिका ताते बेगे लियो जिमाय ॥ २ ॥  
जन्म समे पंचामृत विधि सों देव न्हावावत गाय । चरचत पीतांबर उढाय  
कैं फूलमाल पहेराय ॥ ३ ॥ भोग लगाय आरती वारत बाजन बहोत  
बजाय । दोउ कर जोरि बलैया लै पुनि 'द्वारकेस' बलि जाय ॥ ४ ॥ ❀८१❀  
❀ राग बिलावल ❀ सब सुख चाह रही है राम की, देख रूप की रास ।  
ज्यों मसि के अच्छर कागद पर टारे टरत नहीं ॥ १ ॥ अधर कपोल सुभग  
नासा पर कनक कली सी सही । जहिं-जहिं मन अटक्यो जाको रहि गयो  
तहिं ही तहीं ॥ २ ॥ बैठे जनक भुवन में रघुवर संग सीता दुलही । 'तुलसी'  
मन हुलसी पुर नारिन विविध असीस दई ॥ ३ ॥ ❀८१❀ राग बिलावल ❀  
श्री रघुनाथ पालने भूले कौसल्या गुन गावे हो । बलि अवतार देव मुनि  
बंदित राजिवलोचन भावे हो ॥ १ ॥ राजा दसरथ पलना गढायो नव चंदन  
को साज । हीरा जटित पाट की डोरी रत्न जराये बाज ॥ २ ॥ एते चरन कमल  
कर राते नील जलद तन सोहे । मृगमद तिलक अलक घुँघरारी मृदुल हास  
मन मोहे ॥ ३ ॥ घर घर उत्सव चारु अयोध्या राघव जनम निवास ।  
गावत सुनत लोक त्रैपावन बलि 'परमानन्ददास' ॥ ४ ॥ ❀८१❀  
❀ राग आसावरी ❀ कनक रत्न मनि पालनो रच्यो अमर सुभटार । विविध  
खिलौना किंकिनी लागे मंजुल मुक्ता हार ॥ रघुकुल मंडन रामलला ॥ १ ॥  
जननी उबटि न्हावाय के मनि भूखन सज लिये गोद । पोढाये प्रभु पालने  
सिसु निरखि बदन मन मोदै ॥ दसरथनंदन रामलला ॥ २ ॥ सीस मोर  
की चंद्रिका भलकत रतन मनि जोत । नील कमल मानों जलद से उपमा



कों लघुमति होत ॥ मात-सुकृत फल रामलला ॥ ३ ॥ लघु-लघु लोहित  
ललित है पद पान अधर एक रंग । के बिरियाँ छबि कहि न सके नख-  
सिख सुंदर सब अंग ॥ गुनिजन रंजन रामलला ॥ ४ ॥ लोयन नीर  
सरोज से भ्रुव पर मसि बिंदु बिराज । मानो विधु मुख छबि अमी अंकुर  
छबि राखी रसराज ॥ पुरंजन रंजन रामलला ॥ ५ ॥ घूंघरवारी अलका-  
वलि से लटक ललित लिलार । मानो उडुगन विधु मिलन कों चले तिमिर  
विडार ॥ सहज सुहावनो रामलला ॥ ६ ॥ पग नूपुर कटि किंकिनी कर  
कंकन पहोंची मंजुल । केहरी नख अद्भुत वने मानो मनसिज मनि गज  
गंजुल ॥ सोभा सागर रामलला ॥ ७ ॥ देख खिलौना किलकहीं पद पान  
विलोचन लोल । विचित्र विहंग अलि ज्यों सुखसागर करत कलोल ॥  
भक्त कल्पतरु रामलला ॥ ८ ॥ मोती जायो सीप में अदिती जायो युग  
भान । रघुपति जायो कौसल्या गुनसागर रूप निधान ॥ भवन विभूषन  
रामलला ॥ ९ ॥ राम प्रगट जब ते भये गये सब अमंगल मूल । मित्र  
मुदित अरि रुदित हो नित बीरन के चित सूल ॥ भव-भय भंजन राम-  
लला ॥ १० ॥ बाल बोलि बिनु अर्थ के सुन देत पदारथ चारि । मानो  
इन बचन तें भये सुरतरु तल्प त्रिपुरारि ॥ नाम कामधुक रामलला ॥ ११ ॥  
सखी सुमित्रा वार हीं मनि भूखन बसन विभाग । मधुर-मधुर मिलि भुला-  
वहीं गावें उमगि अनुराग ॥ है जू मंगल रामलला ॥ १२ ॥ अनुज सखा  
सब संग लिये खेलन जैहैं चोगान । लंका खलभल पर गई सुर-पुर बाजे  
निसान ॥ रिपु दल गंजन रामलला ॥ १३ ॥ राम अहेडे चढ़ गये गजरथ  
बाजे समार । दसकंधर उर धुकधुकी अब जिनि आये द्वार ॥ अरि करि  
केहरि रामलला ॥ १४ ॥ गीत सुमित्रा सखियन के सुर मुनी मन अनु-  
कूल । दे असीस जै-जै कहे सो हरखे बरखे फूल ॥ सुर सुखदायक राम-  
लला ॥ १५ ॥ बाल चरित्र भान चंद्रमा यह सोडस कला निधान । चित्त

चकोर 'तुलसी' कियो पियो अमीरस पान ॥ तुलसी की जीवन रामलला ॥  
 ❀८१५❀ राजभोग आये ❀ राग आसावरी ❀ भोजन लावरी तू मैया । हम कब  
 के तोकं टेरत हैं भूखे चारों भैया ॥ १ ॥ सुनत बचन कौसल्या आई लिये  
 हाथ मलैया । पूरी लै ताती और बूरो दोरि सुमित्रा आई ॥ २ ॥ कैकई  
 दधि ओदन ले आई मीठे बचन सुनैया । हम जानी तुम राज सभा में बैठे  
 हो रघुरैया ॥ ३ ॥ जैमत राम भरत और लछमन और सत्रुहन भैया । फूंक  
 फूंक सीरो करि-करिके पीवत तातो घैया ॥ ४ ॥ जल अचवाय कपूर सुवा-  
 सित लागत परम सुहैया । 'तुलसीदास' प्रभु सुख नैनन निरखत मैया लेत  
 बलैया ॥ ५ ॥ ❀ ८१६ ❀ जन्म पंचामृत समय ❀ राग सारंग ❀ प्रगट भये हैं  
 राम, माई । हत्या तीन गई दसरथ की सुनत मनोहर नाम ॥ १ ॥ बंदीजन  
 सब कौतुक भूलै राघव जनम निधान । हरखे लोग सबै भुवपुर के युवती  
 जन करत हैं गान ॥ १॥ जय जय कार भयो वसुधा पर संतन मन अभिराम ।  
 'परमानंददास' बलहारी चरन कमल विश्राम ॥ ३ ॥ ❀ ८१७ ❀ उत्सव भोग आये ❀  
 ❀ राग विलावल ❀ नौमी के दिन नौबत बाजे कौसल्या सुत जायो । सात घरी  
 दिन उदित भयो है सब सखियन मंगल गायो ॥ १ ॥ कांयो सिंधु कंगूरा  
 ढरियो लंका आगम जनायो । सब लंका में सोक परयो है राजदेव गृह  
 आयो ॥ २ ॥ दसरथ मन आनंद भयो है वंस हमारे गृह आयो । विप्र बुलाय  
 सोधना कीनी अभय भंडार लुटायो ॥ ३ ॥ कंचन के बहु कलस बनाये मोतिन  
 चौक पुराये । घरी एक निगम सोच हिय भाख्यो रामचन्द्र गृह आये ॥ ४ ॥  
 गृह-गृह ते सब सखी बुलाई आनंद मंगल गाए । दसरथराय दोऊ आंगन  
 में आदर कर बैठाये ॥ ५ ॥ दसरथ उठ बजार पधारे सारी सुरंग बस्यायो । जो  
 जाके जैसो मन भायो तेसो ताहि पहरायो ॥ ६ ॥ पाट पटंबर खासा भीनो जैसो  
 जाहि मन भायो । 'परमानंददास' कहाँ लों बरनों तीन लोक यस छायो ॥ ७ ॥  
 ❀ ८१८ ❀ राग सारंग ❀ कौसलपुर में बजत बधाई । सुंदर सुत जायो कौसल्या

प्रगट भये रघुराई ॥१॥ जात कर्म दसरथ नृप कीनो अगनित धेनु दिवाय ।  
 गज तुरंग कंचन मनिभूखन पावस ऋतु मानो वरषाय ॥ २ ॥ देत असीस  
 सकल नर नारी चिरजियो सतभाय । 'तुलसीदास' आस पूरन भई रघुकुल  
 प्रगटे आय ॥ ३ ॥ ❀ ८१६ ❀ राग विलावल❀ आज महा मंगल कोसलपुर  
 सुन नृपके सुत चार भये । सदन-सदन सोहिलो सुहायो नभ और नगर  
 निसान हये ॥ १ ॥ अतिसुख बेग बोल सुरगुरु मुनि भूपति भीतर भवन  
 गये । जात-कर्म कर कनक बसन मनि भूषन सुरभी समूह दये ॥ २ ॥ दधि  
 अच्छत फल फूल दूब नव युवतिन भरि-भरि थार लये । गावत चली भीर  
 भई बीथन बंदन मांग सिंदूर दये ॥ ३ ॥ कनक कलस और ध्वजा पताका  
 बिच-बिच बंदनबार नये । उडत गुलाल अरगजा छिरकत सकल लोक इक  
 रंग रये ॥४॥ सज-सज साज अमर किन्नर मुनि जान समागम गगन ठये ।  
 नृत्यत नव अप्सरा मुदित मन पुनि-पुनि बरखत कुसुम चये ॥ ५ ॥ अति  
 आनंद-मगन पुरवासी देत सबन मंदिर रितये । 'तुलसीदास' पुनि भरेहि  
 देखियत राम कृपा चितवन चितये ॥ ६ ॥ ❀ ८२० ❀ राग सारंग❀ आज सखी  
 रघुनंदन जाये । सुंदर रूप नयन भरि देखों गावत मंगलचार बधाये ॥१॥  
 परम कौतूहल नगर अयोध्या घर-घर मोतिन चोक पुराये । द्वार-द्वार मारग  
 गरियारे तोरन कंचन कलस धराये ॥ २ ॥ पूरन सकल सनातन कहियत  
 जे हरि वेद-पुरानन गाये । महा भाग्य राजा दसरथ को जिहि घर रघुपति  
 जनम ही आये ॥ ३ ॥ ब्रह्म घोष मिलि करत वेद ध्वनि जय-जय दुंदुभी देव  
 बजाये । गुनि गंधर्व चारन यस बोले भुवन चतुर्दस आनंद पाये ॥ ४ ॥  
 पान फूल फल चोवा चंदन बहु उपहार लोक ले आये । 'परमानन्द' प्रभु  
 मन मोहन कों कौसल्या जननी गोद खिलाये ॥५॥❀ ८२१ ❀ राग सारंग❀  
 आज अयोध्या प्रगटे राम । दसरथ वंस उदे कुल दीपक सिव विरञ्च मुनि  
 भयो विश्राम ॥१॥ घर-घर तोरन बंदनमाला मोतिन चौक पुरे निज धाम ।

‘परमानंददास’ तिहिं औसर बंदीजन के पूरत काम ॥ २ ॥ ❀ ८२२ ❀  
 ❀ राग सारङ्ग ❀ आज अयोध्या माँझ बधाई । दसरथ सदन चैत सुदि नौमी  
 दिन प्रगटे संतन सुखदाई ॥१॥ बडभागिनी कौसल्या रानी जाकी कूख  
 भये रघुराई । अमरलोक यह लोगन गावत उर आनंद न समाई ॥२॥  
 सत्यलोक संताप हरन भू भार उतारन आयो माई । मर्यादा पुरुषोत्तम लीला  
 प्रमुदित ‘गोकुलचंद’ गाई ॥ ३ ॥ ❀ ८२३ ❀ राग जेतश्री ❀ फूले फिरत  
 अयोध्यावासी । सुंदर सुत जायो कौसल्या रामचंद्र सुखरासी ॥ १ ॥ द्वारन  
 बंदनवार साथिये मोतिन चौक पुराये । नाचत गावत देत बधाई मानो घर-  
 घर सुत जाये ॥ २ ॥ गली-गली गज-बाजि जहाँ-तहाँ हकला दिये तबेले ।  
 दान बहुत याचक जन थोरे कापें जात संकेले ॥ ३ ॥ दसरथ भूप भंडार  
 मुक्त किये बंदी-अभर भरे । सकटसलिता हि सोहे मालन ठौर-ठौर धरे ॥४॥  
 संत कमल मुख देखन कारन बिरद उद्योत करयो । मुदित देव दुंदुभी बजावत  
 निसिचर तिमिर हरयो ॥५॥ दैत असीस सकल नरनारी चिरजीयो रघुवीर ।  
 ‘अग्रदास’ आनंद अखिल पर मिठी ताप तन पीर ॥ ६ ॥ ❀ ८२४ ❀  
 ❀ राग बिलावल ❀ आनंद आज नृपति दसरथ घर । प्रगट भये कौसल्यानंदन  
 श्रवन सुनत सुख सुधा उमगि उर ॥ १ ॥ ज्यों रवि उदै विनासैं तम कों  
 जनम प्रकास असुर त्रासे डर । ऋषि मुख वेद मधुर धुनि उचरत दान विधान  
 करत इहिं औसर ॥ २ ॥ जो जाके मन जैसी इच्छा देत सहज सुत हित  
 अपने कर । परम पवित्र अयोध्या वासी रघुकुल वृन्द सहित निर्मल नर ॥३॥  
 परम उछाह सबही कहुंके सिव बिरंचि सेस हरखत हर । ‘सूरदास’ प्रभु संत  
 सहायक अद्भुत रूप धरयो सारंगधर ॥ ४ ॥ ❀ ८२५ ❀ चैत्र सुदी १० ❀  
 ❀ मंगला दर्शन ❀ राग विभास ❀ फूलन की माला हाथ फूली फिरें आली  
 साथ ऊभकि भरोखे भाँके नन्दिनीजनक की । पियाजू की देखि सोभा  
 सियाजू को मन लोभा इकटक ठाढ़ी मानो पूतरी कनक की ॥१॥ को कहे

पिता सों बात कुंवर कोमल गात कठिन प्रतिज्ञा कीन तोरन धनुक की ।  
 'नंददास' प्रभु जानि तोरयो है पिनाक तानि बांसकी धुनैया जैसे बालक तनक  
 की ॥२॥ ❀ ८२४ ❀ शृंगार ओसारा में ❀ राग बिलावल ❀ सुनु सुत एक कथा कहों  
 प्यारी । कमल नयन मन आनंद उपज्यो रसिक सिरोमनि देत हुंकारी ॥१॥  
 नगर एक रमनीक अजुध्या बड़े महल जहाँ अगम अटारी । बहुत गली  
 बीच विराजत भाँत-भाँत सब हाट बजारी ॥२॥ तहाँ नृपति दसरथ रघुवंसी  
 जाकी नारी तीन सुखकारी । कौसल्या कैकई सुमित्रा तिनके जनम भये सुत  
 चारी ॥ ३ ॥ चार पुत्र राजा के प्रगटे तिनमें एक राम व्रत-धारी । जनक  
 धनुष-पन कियो जानकी त्रिभुवन के सब नृपति हंकारी ॥ ४ ॥ राज-पुत्र  
 दोऊ ऋषि लें आये सुनत जनक-पन तहाँ पग धारी । धनुस तोरि मुख मोरि  
 नृपति को जनक-सुता तिन तब वरी नारी ॥ ५ ॥ पग अँगुठा जब पोरे  
 नृपति के तब कैकई सुख मेलि निवारी । बचन मांगि नृप सों यह लीनो  
 रघुपति के अभिषेक संमारी ॥ ६ ॥ तात बचन सुनु तज्यो राज जिन आता  
 घरनी सहित बनचारी । उनके जात पिता तन त्याग्यो अति व्याकुल करि  
 जीव विसारी ॥ ७ ॥ चित्रकूट गये भरत मिलन बन पग-पांवरी दे करी  
 कृपा री । जुवती हेत कपट मृग मारयो राजीवलोचन गर्व-प्रहारी ॥ ८ ॥  
 रावन हरन कियो सीता को सुन करुनामय नींद निवारी । 'सूरस्याम' तब  
 रटत चांप कों लछमन देहो जननी भ्रम भारी ॥ ९ ॥ ❀ ८२५ ❀  
 ❀ राग बिलावल ❀ बात कहूँ एक हित की तोसों । आरि करे जिनि सुन  
 मनमोहन देहु हुंकारी कही-कही मोसों ॥ १ ॥ सूरज वंस भयो नृप दसरथ  
 तिनके पुत्र भये हैं चार । राम भरत लछमन सत्रुहन खेलत गृह आँगन के  
 द्वार ॥ २ ॥ विस्वामित्र-मख रत्न करिकै अरु तारी गौतम की नारी ।  
 मिथिला जाइ सिव धनुस तोरि तब जनकसुता माला उर डारी ॥ ३ ॥ करि  
 विवाह घर कों जब आये भरत गये मातुल के धाम । नृप मन सोचि कह्यो

गुरु आगे वेगहि राज देहु श्रीराम ॥४॥ कैकेई बचन पिता की आज्ञा चले  
दंडक तापस अनुहारी । लछमन सहित संग जानकी डोलत बनन चाप  
कर धारी ॥५॥ पंचवटी बिचरत तिय के संग रावन हरन कियो तिहिकाल ।  
इतनो सुनत 'सूर' के स्वामी चौंक कह्यो दै धनुस उताल ॥६॥ ❀८२६❀

**श्रीमहाप्रभु जी के उत्सव की बधाई** (चैत्र सुदी ११)

❀ राग देवगंधार ❀ भयो जगती पर जय-जयकार । अधम उद्धारन  
करुना-सागर प्रगटे अग्नि अवतार ॥ १ ॥ गृह-गृह तें सुंदरि सब आई  
मोतिन भरि-भरि थार । निरखि कमल-मुख प्राननाथ को तन मन धन  
बलिहार ॥२॥ करत वेद ध्वनि सकल महामुनि सुंदर दृष्टि रसाल । विविध  
दान प्रेम सों दीने श्री लछमन परम उदार ॥ ३ ॥ करुनासिंधु सकल सुख-  
दायक सकल सृष्टि आधार । अपने जीव कृतारथ कीने दस विधि भक्ति  
आधार ॥ ४ ॥ परम आनंद बढत त्रिभुवन में मुदित फिरत नर नार ।  
'हरिजीवन' प्रभु यज्ञ-पुरुष श्री लछमन सुत अवतार ॥ ५ ॥ ❀ ८२७ ❀

❀ राग देवगंधार ❀ जय श्री लछमनराजकुमार । श्री वृंदावन बदन इंदु तें  
प्रगटित भाव सिंगार ॥ १ ॥ आनंद रूप स्वरूप आनंदमय आनंदनिधि  
आनंदसार । आनंद दान देत आनंद को आनंद इलंभागार ॥ २ ॥ 'दास  
गोपाल' कहाँ लोंबरनों मनोरथ पूरे नंददुलार । श्रीवल्लभनंदन उभय आनंद  
कर भक्तन भाव विचार ॥३॥ ❀ ८३० ❀ राग आसावरी ❀ जुरि चली हैं बधावन  
नंदमहर घर सुंदर ब्रज की बाला । कंचन थार हार चंचल छवि कहि न  
परत तिहिं काला ॥ १ ॥ डहडहे मुख कुमकुम रंग रंजित राजत रस के  
ऐना । कंजन पर खेलत मानों खंजन अंजन युत बने नैना ॥ २ ॥ दमकत  
कंठ पदिक मनि कुंडल नवल प्रेम रंग बोरी । आतुर गति मानों चंद उदै  
भयो धावत तृषित चकोरी ॥ ३ ॥ खसि-खसि परत सुमन सीसन तें उपमा  
कहा बखानों । चरन चलनि पर रीफि चिकुर वर बरखत फूलन मानों ॥४॥

गावत गीत पुनीत करत जग जसुमति मंदिर आई । बदन बिलोकि  
बलैया ले ले देति असीस सुहाई ॥ ५ ॥ मंगल कलस निकट दीपावलि  
ठांय-ठांय देखि मन भूल्यो । मानों आगम नंद सुवन के सुवन फूल ब्रज  
फूल्यो ॥ ६ ॥ ता पाछें गन गोप ओप सों आये अति सै सोहें । परमानंद  
कंद रस भीने निकर पुरंदर को है ॥ ७ ॥ आनंद घन ज्यों गाजत राजत  
बाजत दुंदुभी भेरी ॥ राग रागिनी गावत हरखत बरखत सुख की ढेरी ॥ ८ ॥  
परम धाम जग धाम स्याम अभिराम श्रीगोकुल आये । मिटि गये द्वंद  
'नंददासन' के भये मनोरथ भाये ॥ ९ ॥ ❀ ८३१ ❀

श्री महाप्रभुजी की बधाई में सुकुट धरै तब—

❀ सिंगार ओसरा में ❀ चौकड़ा ❀ धनि धनि माधव मास एकादसी ।  
प्रगटे श्रीवल्लभ सुखरासी ॥ श्री गोकुल गोवर्द्धन वासी । यमुना कुंज  
निवासी ॥ ध्रुव ० ॥ छंद—कुंजन कुंज निवास यमुना पुलिन बेनु बजाइयो ।  
अकुलाय नव ब्रज सुंदरी नव सुखद रास बनाइयो ॥ सात दिन  
गिरि धरयो कमल कर गर्व सुरपति हरनजू । 'दासजन' के हेत प्रगटे फेरि  
गिरिवरधरन जू ॥ १ ॥ श्री लछमन गृह नव निधि आई । श्रीवल्लभ  
द्विज रूप कहाई ॥ जायो पूत इलम्मा माई । हरखत फूली अंग न समाई ॥  
छंद—फूली अंग न समाय जननी करत आनंद बधावने । गोरस कीच भई  
अजिर में दूध दधि सिर नावने ॥ पहरि भूषन मुदित सहचरी बसन नाना  
बरनजू । 'दासजन' के हेत प्रगटे फेरि गिरिवरधरन जू ॥ २ ॥ श्रीलछमन  
गृह होत बधाई । श्रवन सुनत ब्रज-बधू उठि धाई ॥ सहज सिंगार किये  
मन भाये । बोलत जय-जय सब्द सुनाये ॥ छंद—जय जय सब्द सुनाय  
बोलत गीत भूमक गाव ही । थार कंचन हाथ लीने जुर-जुर झुंडन आव  
ही ॥ मुदित दे कर तारि नाचत बाजत नूपुर चरन जू । 'दासजन' के हेत  
प्रगटे फेरि गिरिवरधरन जू ॥ ३ ॥ श्री लछमन—गृह नव निधि आई ।  
अद्भुत सोभा बरनी न जाई ॥ कंचन कलस ध्वजा फहराई । दीपदान कर

जुगत बनाई ॥ छंद—बनाई जुगत धरि दीप माला जोत फैली गगन जू ।  
 धेनु-धन गृह वसन भूषन देत कंचन नगन जू ॥ मुदित हूँ नरनारि जुर  
 देत असीस चले घरन जू । 'दासजन' के हेत प्रगटे फेरि गिरिवरधरन  
 जू ॥ ४ ॥ ❀ ८३२ ❀ चौकड़ा ❀ श्री वल्लभ—गृह बधाये । श्री वल्लभ  
 भूतल आये ॥ भक्ति प्रकास विलासी । सुंदर वदन मधुर मृदुहासी ॥ १ ॥  
 छंद—नैन नीके बैन मीठे रूप रंग सुहावनो । बाल चरित विनोद नीके  
 प्रानपति जिय भावनो ॥ श्री वल्लभ रस ही खेले रस ही बोले रस ही रस  
 में हुलस ही । धनि माय सुहाग भागिन गोद लै सुत बिलसही ॥ १ ॥  
 पूरव दिसा निधि आई । श्रीगोकुल वृंदावन छाई ॥ श्री गोवर्द्धनधारी ।  
 ब्रज में प्रगटे रास बिहारी ॥ छंद—बुलाइ भक्त विलास कीनो विविध भाँति  
 बनाय के । नंद घर की सुभग लीला प्रगट जनन दिखाई के ॥ मेटि सब  
 दुख किये सब सुख सरन लीने तानि के । बलि जाय 'चरनदास' दासी  
 भाग्य अपने मानिके ॥ २ ॥ श्रीवल्लभ प्रीतम प्यारे । वल्लभ जग में जगत  
 उज्यारे ॥ दैवी जीवन के हितकारी । प्रेम भक्ति के जय जय कारी ॥ छंद—  
 प्रेम गावें प्रेम भावें प्रेम में अनुदिन रहें । प्रेम स्नेही प्रेम देही प्रेम बानी नित्य  
 कहें ॥ प्रेम सेवा करें करावें नंद सुत हृदै रहें । वल्लभी 'निजदासदासी' सुख  
 समूह कहा कहें ॥ ३ ॥ श्रीवल्लभ के गुनगाऊँ । श्रीवल्लभ चरन हृदय में  
 लाऊँ ॥ मूरति हिय में बसाऊँ । श्री वल्लभ जू की हों बलि-बलि जाऊँ ॥  
 छंद—बलि जाऊँ वल्लभनाथ प्रभु की सरन वल्लभ के रहूँ । नैन वल्लभ बैन  
 वल्लभ बैन वल्लभ के कहूँ ॥ वल्लभ मुख की माधुरी हों निरखि जिय आनंद  
 लहों बलि जाय 'चरन' निजदास हूँ के सरन वल्लभ के रहों ॥ ४ ॥ ❀ ८३३ ❀  
 ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग देवगंधार ❀ जय श्रीवल्लभ देव धना । रास विलास  
 करत गोवर्द्धन मूरति ललित बनी ॥ १ ॥ पुरुषोत्तम मुख कमल विकासित  
 रसिकन मुकुट मनी । वरन निवेदन दै निजजन कों कृपा करी जु घना ॥ २ ॥



हिये अंतर राखिया । रामकृष्ण मुकुंद माधौ सदा जिह्वा भाखिया ॥ गोपीनाथ  
अनाथ बंधु वेद मै करुना मया । 'गोपालदास' अनंत लीला प्रगट श्रीवल्लभ  
भया ॥ ४ ॥ ❀८३६❀ सेनभोग आये ❀राग ❀ श्रीवल्लभ मधुराकृति  
मेरे । सदा बसौ मन यह जीवन धन सबहिन सों जु कहत हों टेरे ॥ १ ॥  
मधुर बचन अरु नयन मधुर जुग मधुर भ्रोंह अलकन की पांत । मधुर  
माल अरु तिल ॥ मधुर अति मधुर नासिका कहीय न जात ॥ २ ॥ अधर  
मधुर रस रूप मधुर छबि मधुर-मधुर दोऊ ललित कपोल । श्रवन मधुर  
कुंडल की झलकन मधुर मकर दोऊ करत कलोल ॥ ३ ॥ मधुर कटाच्छ  
कृपा रस पूरन मधुर मनोहर बचन विलास । मधुर उगार देत दासन कों  
मधुर बिराजत मुख मृदु हास ॥ ४ ॥ मधुर कंठ आभूषन भूषित मधुर उर-  
स्थल रूप समाज । अति विसाल जानु अवलंबित मधुर बाहु परिरंभन  
काज ॥ ५ ॥ मधुर उदर कटि मधुर जानु जुग मधुर चरन गति सब सुख  
रास । मधुर चरन की रेनु निरंतर जनम-जनम मांगत 'हरिदास' ॥ ६ ॥  
❀८३७❀ राग बिहाग ❀ प्रगट हूँ मारग रीति बताई । परमानंद स्वरूप  
कृपानिधि श्रीवल्लभ सुखदाई ॥ १ ॥ करि सिंगार गिरिधरनलाल कों जब  
कर बेनु गहाई । लैं दर्पन सन्मुख ठाडे हूँ निरखि-निरखि मुसिकाई ॥ २ ॥  
विविध भांति सामग्री हरि कों करि मनुहार लिवाई । जल अचवाय सुगंध  
सहित मुख बीरी पान खवाई ॥ ३ ॥ करि आरती अनौसर पट दै बैठे निज  
गृह आई । भोजन करि विश्राम छिनक ले निज मंडली जु बुलाई ॥ ४ ॥  
करत कृपा निज दैवी जीवन पर श्रीमुख बचन सुनाई । बेनु गीत पुनि  
युगलगीत की रस बरखा बरखाई ॥ ५ ॥ सेवा रीति प्रीति ब्रजजन की  
जनहित जग प्रगटाई । 'दास' सरन 'हरि' वागधीस की चरन रेनु निधि  
पाई ॥ ६ ॥ ❀८३८❀ शयन दर्शन ❀ राग बिहाग ❀ मधुर ब्रज देस बसि  
मधुर कीनों । मधुर गोकुल गाम मधुर वल्लभ नाम मधुर विट्ठल भजनदान

दीनो ॥ १ ॥ मधुर गिरिधरन आदि सप्त तनु वेनुनाद सप्तरंघ्रन मधुर रूप  
लीनो । मधुर फल फलित अति ललित 'पद्मनाभ' प्रभु अलि गावत सरस  
रंग भीनो ॥ २ ॥ ॐ ८३६ ॐ सेहरा धरे तब ॐ शृंगार ओसरा में ॐ राग बिलावल ॐ  
मूल पुरुष नारायन यज्ञ । श्रुति अवतार भये सर्वज्ञ ॥ साखा तैत्तरीय गोत्र  
भारद्वाज । तैलंग कुल उदित द्विजराज ॥ छंद—द्विजराज तें हरि आय  
प्रगटे सोम-यज्ञ कियो जबें । कुंड तें हरि कही जु बानी जन्म कुल तुम्हरे  
अबें ॥ चकित ततच्छन भये सब जन ऐसी अब लों न भई कबें । सुनत  
हि मन हरख कीनो धन्य-धन्य कह्यो सबें ॥ १ ॥ तिनके पुत्र गंगाधर ।  
तिनके गनपति सुत वल्लभ वर ॥ श्री लछमन भट अनुभव टेव । सुद्ध  
सत्त्व ज्यों श्री वसुदेव ॥ छंद—सत्त्व गुन विद्या पयोनिधि विसद कीरति  
प्रगटई । गाम कांकरवार में रही जाति सब हरखित भई ॥ परव पर सह  
कुटुम्ब लेकै चले प्राग कों साथ लै । स्नानदान दिवाय द्विज कों चले कासी  
पांत लै ॥ २ ॥ कछुक दिन रहिकें चले सब दच्छन । आनंदित तनु  
सगुन सुलच्छन ॥ चंपारन्य महीं जब आये । एलम्मागारू गर्भ स्रवित  
जताये ॥ छंद—स्त्राव जानि चले तहां ते नगर चोडा मे बसे । जगत में  
आनंद फैल्यो दसो दिसा मानों हँसे ॥ चैन है सुनि चले कासी फेरि वही  
बन आवहीं । अग्नि चहुँधा मधि बालक देखि सन्मुख धावहीं ॥ ३ ॥  
मारग दियो जानि जिय माता । लिये उछंग मोहि दियो है विधाता ॥  
तात सुनत दौरि कंठ लगाये । तिहिं छिन मंगल होत बधाये ॥ छंद—  
मंगल बधायो होत तिहुंपुर देव दुंदुभी बाजहीं । जोतसी कों लग्न पूछत  
प्रथम समयो साध ही ॥ धन्य संबत पंद्रहा पैंतीस माधव मास है । कृष्ण  
एकादसी श्रीवल्लभ प्रगट वदन विलास है ॥ ४ ॥ श्री वल्लभ कों ले आये  
कासी । सुंदररूप नयन सुखरासी ॥ सात बरस उपवीत धराये । तब तें  
विद्या पढ़न पठाये ॥ छंद—पढ़ें चारों वेद अरु खट सास्त्र महिना चार में ।

तात कों अचरज भयो यह कौन रूप विचार में ॥ नींद आई कह्यो प्रभु  
 संदेह क्यों तुम करत हो । प्रथम बानी भई हैसो प्रगट जानो अब भयो ॥५॥  
 जाग परि कह्यो पत्नी आगे । ये हैं पूरन ब्रह्म अनुरागे ॥ श्री मुख बचन  
 कहे श्री वल्लभ । मायामत खंडन भये सुलभ ॥ छंद—सुलभ तें दक्षिण  
 पधारे ग्यारह बरस को बपु धरे । देख मामा हरख के आदर कियो  
 आवो घरे ॥ विद्यानगर कृष्णदेव राजा बहुत मतही जहाँ मिले । जीत के  
 कनकाभिषेक सों पढे आवत यहाँ पहले ॥ ६ ॥ रामानुज अरु मध्वाचारज ।  
 विष्णुस्वामि निमादित्य हरि भज ॥ संकर में अनुसरत और मत । युक्ति बल  
 तें आज सबल अति ॥ छंद—सबल सुन आप ही पधारे द्वार पें पहुँचे जबे ।  
 भृत्य दौरी प्रताप बरन्यो राय आवो इहाँ सबे ॥ राय आय प्रनाम कीनो सभा  
 मेंजु पधारिये । सुनहु बिनती कृपासागर दुष्ट मतहि विडारिये ॥७॥ गजगति  
 चाल चले श्री वल्लभ । इनकी कृपा भये सब सुलभ ॥ रवि के उदय किरन  
 ज्योंबाढी । तैसी सभा पांत उठ ठाडी ॥ छंद—ठाढ़े सब स्तुति करें जब,  
 कियो मायामत खंडन । सब्द जै जै होत सब मुख, भक्ति पथ भुव मंडन ॥  
 स्तुति करें द्विज हाथ जोरें राय मस्तक नाव ही । परम मंगल होत हैं  
 कनकाभिषेक कराव ही ॥ ८ ॥ पाछे जलसों न्हाय बिराजे बिनती करी  
 राये मन साजे । द्रव्य सबै अंगीकृत करिये । प्रभु बोले यह नाहिन  
 ग्रहिये ॥ छंद—ग्रहिए नाहिन स्नान जलवत बाँट सबकों दीजिये ।  
 बाँटि दीनो करी बिनती मोहि सरन जू लीजिये ॥ कृपा करिके सरन लीनो  
 थार भरी मोहोरे धरयो । सप्त लेके कह्यो दैवी द्रव्य अंगीकृत करयो ॥९॥  
 तहाँ तें पंढरपुर जु सिधारे । श्रीविठ्ठलनाथ मिलन कों जु पधारे ॥ भीम-  
 रथी के पार मिले जब । दोऊ तन में आनंद बढ्यो तब ॥ छंद—बढ्यो  
 आनंद करी बिनती आप कों यह श्रम भयो । कही श्रीविठ्ठलनाथ जी ने  
 मित्रता पथ प्रगटियो ॥ फेरि श्री गोकुल पधारे निरख यमुना हरखहीं ।

संग दमलादिक हते तिन पै कृपा-रस बरखहीं ॥१०॥ एक समै चिंता चित  
 आई । दैवी किहिं विधि जानी जाई ॥ आसुरी सों सब मिलित सदाई ।  
 भिन्न होय सो कौन उपाई ॥ छंद-भिन्न कों जब चित्त धरे तब प्रभु पधारे  
 तिहिं समे । मधुर रूप अनंग मोहित कहत सुध कीने हमें ॥ करो अब तें  
 ब्रह्म को संबंध दैवी-सृष्टि सों । पांच दोष न रहे ताके निवेदन करो वृष्टि  
 सों ॥११॥ वचन सुनी हरखे श्रीवल्लभ । यह आज्ञा ते परम अति सुलभ ॥  
 कंठ पवित्रा लै पहराये । मिश्री भोग धरी मन भाये ॥ छंद-भयो भायो  
 चित्त कौ तब पुष्टिपंथ कों अनुसरे । सरन जे आवत निरंतर काल भय तें  
 ना डरे ॥ प्रगट सब लीला दिखावत नंदनंदन जे करी । अवनि पर पद  
 पद्म राखी परिक्रमा मिष उर धरी ॥ १२ ॥ फेर पंढरपुर जब आये । श्री  
 विट्ठलनाथ कही मन भाये ॥ करि विवाह बहु रूप दिखावो । मेरो नाम  
 सुवन कों जु धरावो ॥ छंद-धरो चित्त में बात यह कासी विवाह जु होयगो ।  
 मैं कह्यो द्विज आय बिनती करे चरन समोयगो ॥ आय वहाँ ते विवाह  
 कीनो अधिक मंगल तब भयो । नाम धरयो श्री महालक्ष्मी देखि जोरी  
 दुख गयो ॥ १३ ॥ परिक्रमा तीजी चित आई । निकसि चले श्रीवल्लभ  
 राई ॥ भारखंड में प्रभु ने जताई । अबके मोहि मिलो मन भाई ॥ छंद-  
 मिलेंगे हरिदास पैं जहाँ तीन दमन कहावहीं । इंद्रनाग जू देवदमन सो मेरो  
 नाम जतावहीं ॥ फेरि के जब ब्रज पधारे पाँच सेवक संग हैं । सद्गु हैं  
 आन्योर में जहाँ द्वार पे ठाडे रहैं ॥ १४ ॥ सद्गु कहे स्वामी कछू खैहैं ।  
 मेघन कही सेवक को लेहैं ॥ इतने प्रभु गिरि ऊपर बोले । लाइ नरो दूध  
 रहे अनबोले ॥ छंद-बोली नरो यह पाहुने आये तिनहीं कों बैठारिये । प्रभु  
 कहत मोहि बेर लागत भली चित्त बिचारिये ॥ लै गई पय प्याय आई देख  
 श्रीवल्लभ कह्यो । बच्यो होय कछु हमें दीजे बोल पहिलोहि गह्यो ॥१५॥  
 देखि नरो बोली हौं वारी । नाम दीजिये हो गर्व-प्रहारी ॥ नाम दीनो पूछी

वे कहाँ हैं । कहि पर्वत पर जाओ तहाँ हैं ॥ छंद—तहाँ देखे प्रानपति तब  
हुलसि दोऊ तन फूल हीं । उही समै सुख कहि न आवे पंगु गति मति  
भूलहीं ॥ हँसि कह्यो सह कुटुम्ब आवो निकट रहि सेवा करो । मानि वचन  
प्रमान कीनो सासरे दिस पग धरयो ॥१६॥ कछु दिन रहि संग लै आये ।  
बसे अडेल में निज हरखाये ॥ संवत पंद्रहसैं सरसठ आयो । आसौ वदी  
द्वादसी सुभ गायो ॥ छंद—गायो श्री गोपीनाथ जी जब जन्म लीनो आय  
के । जानि बलको रूप हरखित देत दान बधाय के ॥ फेरि कै चरनाट  
आये कछुक दिन रहे जानि के । धन्य संवत पंद्रहा बहोतरा सुभ मानि  
के ॥ १७ ॥ पौष कृष्ण नौमी सुभ आई । घर-घर मंगल होत बधाई ॥ श्री  
विट्ठलनाथ जनम भयो सुनिके । कहत फिरत आनंद गुन गनि के ॥ छंद—  
आनंद बाढ्यो चहुँदिसा छवि देखि श्रीवल्लभ हँसे । बेउ कछु मुसिकाय  
चित में दोऊ हँसनि मेरे मन बसे ॥ तिलक मृगमद छिप्यो हरखित कहाँ  
लों गुन गाइए । कृपा तें उज्जलित निज-रस छिपत नहीं छिपाइए ॥१८॥  
श्रीगोकुल में वास सुहायो । श्रीरुक्मिनी पद्मावती पति गायो ॥ श्रीगिरवर-  
धरन छबीलो । श्रीनवनीतप्रिय अरवीलो ॥ छंद—प्रिय श्रीमथुरेस श्रीविट्ठलेस  
श्रीद्वारिकेस जू । श्री गोवर्द्धनधर श्री गोकुलचंद्रमा श्रीमधुरेस जू ॥ श्री  
मदनमोहन अष्ट इहि विधि रमन श्रीविट्ठलनाथ के । तात को चित जानि  
सेवा विस्तरी सब साथ के ॥ १९ ॥ पंद्रह सैं सत्तानुं कारतिक । विमल  
द्वादसी मंगल नित ढिग ॥ प्रथम पुत्र प्रगटे श्रीगिरिधर । षट् गुन धर्मी  
धर्म धुरंधर ॥ छंद—धुरंधर ऐश्वर्य श्रीगोविंद पंचदस नन्यानवे । उर्ज सामल  
अष्टमी सुभ गुरु सुदिन प्रगटे जवे ॥ ऋतु वियत सिंगार आस्विन असित  
तेरस आजहीं । श्रीबालकृष्णजी महा पराक्रमी, बसु ख सोले राजहीं ॥२०॥  
कवि सह सुदि सातें गोकुल पति । यस स्वरूप माला स्थापित रति ॥  
सोलह सैं ग्यारह कार्तिक सित । अर्क बुध रघुनाथ श्री सहित ॥

छंद—हेतु निज अभिधान प्रगटे तात आज्ञा मानि के । तिथि कला बुध मधु  
छठ विमल ज्ञान बखानि के ॥ श्रीयदुनाथ प्रगटे रह्यो विरहें श्री घनस्याम  
स्वरूप के । सह कृष्ण तेरस रविजरिछ सत कला श्री विट्ठल भूप के ॥२१॥  
भामिनी रानी कमला बखानी । पारवती जानकी महारानी ॥ कृष्णावती  
मिलि सातों कहाये । यह अलौकिक रूप महाये ॥ छंद—महा अलौकिक  
अग्निकुल सब, अलौकिक अष्टछाप हैं । अलौकिक सब भक्तजन जे सरन  
लीने आप, हैं ॥ यथा मति कछु बरनि आई जानियो यह दास है ।  
‘श्रीद्वारकेश’ निरोध माँगे यही फल की आस है ॥ २२ ॥ ❀ ८४० ❀  
❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ नंदरानी सुत जायो महारि के मंदिर बेगि  
चलौरी । चली आउ वह बाट साँमई जाकी ऊँची पौरी ॥१॥ सोने सींक धरौ  
लै सथिये चंदन सों चरचौरी । बंदनवार द्वार-द्वारन प्रति बीच आम की  
मौरी ॥ २ ॥ दिये महावर पाँयन चाइन नाइन लै लै दौरी । उठौ सदन ते  
बसन संभारौ भूषन सबै सजौरी ॥ ३ ॥ आवौ गावौ बैठो सब मिल पूजो  
संकर गौरी । ब्याह बधाये काज पराये विलंब न कीजै बौरी ॥ ४ ॥ नाचत  
बिरध तरुन अरु बालक बीच-बीच लरकौरी । चोवा चंदन बंदन दये दिये  
केसर खौरी ॥ ५ ॥ सकल उछाह भयो या ब्रज में भाजि गयो सब भौरी ।  
जन ‘गोविंद’ वीर बलभद्र की सबहिन लागी ठौरी ॥ ६ ॥ ❀ ८४१ ❀  
❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ केसर की धोती पहिरें केसरी उपरैना ओढ़ें  
तिलक मुद्रा धरि बैठें श्रीलछ्मन भट धाम । जन्म द्यौस जानि-जानि अद्भुत  
रुचि मानि-मानि नख सिख की सोभा ऊपर वारों कोटि काम ॥ १ ॥  
सुंदरताई निकाई तेज प्रताप अतुलताई आस पास युवतीजन करत हैं गुन  
गान । ‘पद्मनाभ’ प्रभु विलोकि गिरिवरधर वागधीस यह अवसर जे हुते ते महा  
भाग्यवान ॥२॥ ❀ ८४२ ❀ भोग संख्या समय ❀ राग गोरी ❀ हेरी हेरी रे भैया  
हेरी हेरी । ध्रु० । हेरी दै किन गाव ही भलो बन्यो है काज । रानी

जसुमति ढोटा जायो आयो ब्रज में राज ॥ १ ॥ पट पीरो प्यौसार को रानी  
 जसुमति पहरे ताय । दामिनी के भोरें गयो मो मन धोखो आय ॥२॥  
 नेति-नेति जासों कहे ध्यान न आवे रूप । सो या बाबा नंद के परयो  
 देखियत सूप ॥ ३ ॥ फूले फिरत गुवालिया विप्रनि बूझत धाइ । कहा  
 कुंवर कौ नाम है हम सों कहौ सुनाइ ॥ ४ ॥ नामन की गिनती नहीं  
 सबहिन के सिरताज । पहलो तो सुनि लेहु भैया जाको नाम गरीब  
 निवाज ॥ ५ ॥ बूढ़ी बाँझ सबै सवे क्षीर-प्रवाह बढ़ायो । चाटत चरन  
 गोपाल के मानो इनही को जायो ॥ ६ ॥ सब ग्वालन मिलि मतो मत्यो  
 करि मन में आनंद । आवो पकरि नचाइये ब्रजपति बाबा नंद ॥७॥ ऊंचे  
 मनि को चौतरा तहाँ बैठे सिरदार । देखत भोरो सो लगे वाको चित्त उदार  
 ॥ ८ ॥ लघु भैया पाँयन परे सकुचत हैं ब्रजराज । उठि किन दादा नाचही  
 पूत भयो है आज ॥ ९ ॥ नाचत बाबा नंद जू संग लियें सब ग्वाल ।  
 मलकत थोंद हाल ही देखि हँसी ब्रजवाल ॥१०॥ एक ओर ब्रज-ग्वारिया एक  
 ओर सब पौनि । पहरावत मधुमंगले या ब्रजकी महतौनि ॥११॥ फूलि कह्यो  
 वृखभान जू पूरव पुन्य सगाई । कीरति कन्या होइगी तो दैहों कुँवर कन्हाई  
 ॥१२॥ भैया-भैया कहि टेरियो कहा बड़े कहा छोट । ठकुराई तिहुंलोक की  
 दुरी अहीरनि ओट ॥१३॥ यह पद गायो हेत सों 'गंग ग्वाल' सुख पाय ।  
 रोम-रोम रसना करों तो मोपै बरन्यो न जाय ॥ १४ ॥ ❀ ८४३ ❀  
 ❀ शयन भोग आये ❀ राग जैजैवँती ❀ हेरी हेरी रे भैया हेरी हेरी रे । ध्रु० ।  
 सकल काज पूरन भये नैनन देखे आज । रानी जसुमति ढोटा जायो आयो  
 ब्रज में राज ॥ १ ॥ उपनंद कहे नंद सों मेरे मनकों भाव । उठि किन बाबा  
 नाचहु आज भलो बन्यो है दाव ॥ २ ॥ नाचन कों बाबा उठे संग लिये  
 बड़े ग्वाल । मलकत थोंदा हाल ही निरखि हँसी ब्रजवाल ॥ ३ ॥ उपनंद  
 कहे तब नंद सों गैया सकल मंगाय । नांदीमुख पूजा करें सब विप्रन दई

बुलाय ॥४॥ बहोत भांति वस्तर दिये जैसो जाको लाग । काहू कों पटुका  
 दिये काहू दीनी पाग ॥५॥ काहू कों चादरि दई काहू दीनी खोर । काहू कों  
 दुपटा दिये करि-करि पीरे छोर ॥६॥ काहुकों भगुला दिये काहू दई कवाय ।  
 काहू दीनी पांवरी सब बागे दिये बनाय ॥७॥ 'माधौ' ग्वाल सबसों कहे सुबस  
 बसो ब्रजबास । श्रीजसुमतिजू के लाडिले हम कबहू न छांडे पास ॥८॥ ❀❀❀  
 ❀ राग गौरी ❀ एरी चलि जांय जहां हरिवदनानल भुव आये । चले श्री  
 लछमन-गृह बाजे विविध बजाये ॥ चलि अनेक दुंदुभी मदन भेरी तुरई सह-  
 नाई । घनमृदंग की घोर भालरी भांभ सुहाई ॥टेक॥ मुरली सुर लिये  
 बजे ही संख संग सरसात । घर-घर कंचन कलस-ध्वजा मानो उदित भयो  
 रवि प्रात ॥१॥ एरी चलि मृदु चंपक-तन मृदु भूषन भूषाय । एरी बर  
 बसन हसत लखि अंग अनंग लजाय ॥ चाल—भृकुटी समर सरासन  
 आसन अलि ज्यों बैठे । कुंचित कच मिस नलिन पंख समार एंठे ॥टेक॥  
 चोंचन रस रोचन रचे हो खंजन मृग आधीन । कबहुक रस राते माते मानों  
 जावक भीजे मीन ॥२॥ ए चलि सबद सदन सुठ सोहत कुंडल हीर । फूली  
 कमल कली जानो रूप सुधाकर नीर ॥ चाल—बिम्बाधर युग अधर-दंत  
 दमकत रस भीजे । ओप धरे अरविन्द मध्य जनु विश्वल बीजे ॥ टेक ॥  
 चिबुक चारु चित चुभि रही हो जग जोतिन ऐन । मानो सरस हकार की  
 हो मुदित मृदु खचिहि मैन ॥३॥ ए चलि सौरभ-गृह पर गजमुक्ता  
 सोहत । उर मंडित हारन लर पन्नग गुहत ॥ चाल—कटि किंकिनी जु  
 बनी मदन-गृह बंदन माला । पद बिछुवन सुर भनक करत मद मदन  
 बिहाला ॥ टेक ॥ तब सब मिलि एकत्र भये हो श्री लछमनभट-गेह ।  
 मात मनोरथ पूर ही हो मानो बरखत मेह ॥४॥ ए निज आँगन बैठे  
 लछमन भट देत बधाई । लेत मगन मन गोपगन जो जाके मन भाई ॥  
 चाल—देत असीसन सीस नाय नृत्यत हरसाने । गोरस कीच मचाय दूधदधि



माट डुराने ॥टेक॥ निज भक्तन चित चाय भरे हो मायिक तिमिर नसाय ।  
 श्रीवल्लभवर पुंडरीक पर 'दासदास' बलिजाय ॥५॥ ❀ ८४५ ❀ वैशाख कृष्ण १० ❀  
 ❀ शृङ्गार ओसरा में ❀ राग विलावल ❀ द्वारे आये गुनीजन ठाढ़े । प्रगटे  
 पुरुषोत्तम श्री वल्लभ सबहिन आनंद मंगल बाढ़े ॥१॥ श्री लछमन भट  
 दान देन कों पट भूषन मनि मानिक काढ़े । 'सगुनदास' आस सब पूजी  
 मानो बरखत इन्द्र अषाढ़े ॥ २ ॥ ❀ ८४६ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग मलार ❀  
 बाजे-बाजे मंदिलरा सकल ब्रजघोख सुहायो गाजे । हमारे रायघर ऐसो  
 ढोटा जायो जसुमति आज पूरे मन के काजे ॥१॥ सुनि-सुनि चली अली  
 गृह-गृह तें सजि-सजि नवसत साजे । दधिघृत भरि काँवरि कांधे धरि आये  
 गोप समाजे ॥२॥ धरि सिर दूब तिलक करि माथें सथिये धरि दुहुँ बाजे ।  
 भीतर जाय वदन निरखत ही बंधी प्रेम की पाजे ॥३॥ श्री वृखमान देत  
 पट भूषन धेनु देत ब्रजराज । अविचल रहो जमुन-जल ज्यों थिर 'ब्रजजन'  
 के सिर ताज ॥४॥ ❀ ८४७ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारङ्ग ❀ ग्वाल बधाई  
 मांगन आये । गोपी गोरस सकल लिये संग सबही आय सिर नाये ॥१॥  
 अब ये गर्व गिनत नहीं काहू पाये मन के भाये । जहाँ नंद बैठे नांदी मुख  
 जहां गहन कों धाये ॥ २ ॥ बरन-बरन पट पाये ब्रजजन उर आनंद न  
 समाये । 'जन भगवान' जसोदा रानी जिय के जीवन जाये ॥३॥ ❀ ८४८ ❀  
 ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद बधाई बाँटत ठाढ़े । बडी बैस ढोटा जायो है अति  
 आनंदवर बाढ़े ॥१॥ काहू गैया काहू भूषन काहू बसन अनेक । मन में आन  
 करत सुरपति सों गहे आपुनि टेक ॥२॥ फूले फिरत गोप सब बालक  
 गावत परस्पर भाखत । गिरिधर 'दास कल्याण' जुवती जन देवे कों कछुअ  
 न राखत ॥३॥ ❀ ८४९ ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद वृखमान के हम भाट । उदै  
 भयो ब्रजवल्लव कुल को मेटि हमारी नाट ॥१॥ इन्द्र कुबेर हमारे भाये ब्रज  
 के गूजर जाट । इतनौ देहु जो मोल लेहुं हौं मथुरा की सब हाट ॥२॥

भूखन बसन अनेक लुटाये और गायन के ठाट । बढौ बंस हरिवंस 'व्यास'  
को बास चीर के घाट ॥३॥ ❀ ८५० ❀ राग मारू ❀ श्री ब्रजराज के हम  
ढाढी । बारे हीते गोविंद गुन गावत सेत भई मेरी डाढी ॥१॥ हम हरि के  
हरि हैजु हमारे सोने लीक जो काढी । 'दास गुपाल' ही मांगत है भक्ति  
प्रेम सों गाढी ॥२॥ ❀ ८५१ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग ❀ आज  
अति बाढ्यौ है अनुराग । पूत भयोरी नंद महर के बडी बैसे बड़भाग ।  
॥१॥ दई सुबच्छ लच्छ द्वै गैयाँ नंद बढायो त्याग । गुनी गनक बंदीजन  
मागध पायौ अपनौ लाग ॥२॥ फूले ग्वाल मानों रनजीते आनंद फूले  
वाग । हरद दूब दधि माखन छिरके मच्यो भदैया फाग ॥३॥ गोपी गोप  
ओप सबके मुख गावत मंगल राग । 'परमानंददास' भक्तन को अब भयो  
परम सुहाग ॥४॥ ❀ ८५२ ❀ संख्या समय ❀ राग गौरी ❀ आज बधावो  
श्री ब्रजराज के रानी जू जायौ है मोहन पूत । ध्रुव० । मास भादों द्योस  
आठें रोहिनी बुधवार । जसोदा की कूखि प्रगटे श्रीकृष्ण लियो अवतार ॥  
॥१॥ बहोत नारी सुहाग सुंदर सबै घोख-कुमारी । सजन प्रीतम नाम लै  
लै देत परस्पर गारी ॥२॥ पुत्र मानो भये घर-घर निरत ठामे-ठाम । नंद-  
द्वारे भेट लै लै उमग्यो गोकुल गाम ॥३॥ सथिये स्यामा धरत द्वारें सात  
सींक बनाय । नव किसोरी मुदित व्है व्है गहत जसुमति पाय ॥ ४ ॥  
चौक चंदन लीपिकें आरती धरी है संजोय । कहत घोख-कुमार ऐसो  
आनंद जो नित्य होय ॥५॥ एक मानिनी मंगल गावे लीला गावें ग्वाल ।  
एक माखन दूध दधि लै छिरकत फिरत हैं बाल ॥६॥ एक हेरी दै दै नाचे  
एक भटके धाइ । एक काहू बदत नाहीं एक खिलावत गाइ ॥७॥ एक  
नारी वृद्ध बालक एक जोवन जोरि । एक काहू बदत नाहीं एक हँसत मुख  
मोरि ॥८॥ कृष्णजनम प्रेम-सागर होत घोख विलास । देखि ब्रज की संपदा  
जन फूले 'माधौदास' ॥९॥ ❀ ८५३ ❀ शयन भोग आये ❀ राग जैजैबंती ❀

माई आज तो मंदिलरा बाजे मंदिर महरके । फूले फिरें गोपी-ग्वाल ठहर-  
 ठहर के । फूली धेनु फूले धाम फूली गोपी अङ्ग-अङ्ग फूले तरुवर मानों  
 आनंद लहर के ॥१॥ फूले बंदी जन द्वारें फूले बांधे बंदनवारें फूले जहां  
 जोई सोई गोकुल सहर के । फूले फिरें जादौकुल आनंद समूल मूल  
 अंकुरित पुन्य पुंज पाछिले पहर के ॥२॥ उमग्यो जमुना जल प्रफुल्लित  
 कुंज पुंज गरजत कारे भारे जूथ जलधर के । निरत मगन फूलि फूलि रति  
 अङ्ग-अङ्ग मन के मनोज फूले हलधर हरके ॥३॥ फूले द्विज संत वेद मिटि  
 गयो कंस-खेद गावत बधाई 'सूर' भीतर महर के । फूली हैं जसोदा रानी  
 सुत जायो सारंगपानी भूपति उदार फूले भार टारयो धर के ॥४॥ ❀ ८५४ ❀  
 ❀ राग जैजैवंती ❀ माई आज तो गोकुल गाम कैसो रहयो फूलि के ।  
 गृह फूले दीसैं जैसे संपति समूल के ॥१॥ फूली फूली घटा आई घरहर  
 घूमि कै । फूली-फूली बरखा होत भर लायो भूमि कै ॥२॥ फूल्यो-फूल्यो  
 पुत्र देखि लियो उर लूमि कै । फूली है जसोदा माय ढोटा-मुख चूमि कै  
 ॥३॥ देवता अग्नि फूले घृत खांड होमिकै । फूल्यो दीसैं दधिकादौं उपरसों  
 भूमि कै ॥४॥ मालिन बांधे बंदनमाला घर-घर डोलिकै । पाटंबर पहिराय  
 अधिकें अमोल कै ॥५॥ फूले हैं भंडार सब द्वारे दिये खोलिकें । नंदराय  
 देत फूलें 'नंददास' बोलिकें ॥६॥ ❀ ८५५ ❀ भोग सरे ❀ राग ❀  
 दान देत श्रीलछ्मन प्रमुदित मनि मानिक कंचन पट गाय । श्री ब्रजराज-  
 कुंवर जसोदा-सुत करुना करि प्रगटे हरि आय ॥१॥ रही न मन अभिलाख  
 कछू अब याचक नाम हतो कोउ जोय । 'विष्णुदास' उमगे अंतरते दै असीस  
 तुमसे नहिं कोय ॥२॥ ❀ ८५६ ❀

**उत्सव श्री महाप्रभुजी को** (वैशाख कृष्ण ११)

❀ जागवे में ❀ राग भैरव ❀ श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ कृपा-निधान  
 अति उदार करुनामय दीन द्वार आयो । कृपा भरि नैन कोर देखिये जु

मेरी ओर जनम-जनम सोधि-सोधि चरन-कमल पायो ॥ १ ॥ कीरति चहुँ  
 दिसि प्रकास दूर करत विरह-ताप संगम गुन गान करत आनंद भरि  
 गाऊँ । विनती यह मान लीजे अपनो 'हरिदास' कीजे चरन-कमल बास  
 दीजे बलि-बलि-बलि जाऊँ ॥ २ ॥ ❀ ८५७ ❀ शृङ्गार ओसरा में ❀ राग देवगंधार ❀  
 आज जगती पर जय-जयकार । प्रगट भये श्रीवल्लभ पुरुषोत्तम बदन अग्नि  
 अवतार ॥ १ ॥ धन्य दिन माधव मास एकादसी कृष्ण पच्छ रविवार ।  
 श्रीमुख वाक्य कलेवर सुंदर धरयो जगमोहन मार ॥ २ ॥ श्री भागवत  
 आत्म अंग जिनके प्रगट करन विस्तार । दुंदुभी देव बजावत गावत सुर-  
 वधू मंगल चार ॥ ३ ॥ पुष्टि प्रकास करेंगे भू पर जनहित जग अवतार ।  
 आनंद उमग्यो लोक तिहूपुर 'जन गिरिधर' बलिहार ॥ ४ ॥ ❀ ८५८ ❀  
 ❀ राजभोग आये ❀ राग आसावरी ❀ धन्य माधव मास कृष्ण एकादसी भट्ट  
 लछमन धाम प्रगट वल्लभ भये । धन्य चंपारन्य धन्य धरनी सकल धन्य  
 घटिका प्रहर धन्य अति पल भये ॥ १ ॥ धन्य यसपुंज पावन करन सृष्टि  
 कों प्रगट करी कृष्णलीला सहित सो किये । धन्य गावत 'रसिकदास' बारं-  
 बार कीजिये सफल पूरन मनोरथ हिये ॥ २ ॥ ❀ ८५९ ❀ राग देवगंधार ❀  
 वल्लभ भूतल प्रगट भये । माधव मास कृष्ण एकादसी पूरन विधु उदये ॥ १ ॥  
 पुत्र जन्म सुन श्रीलछमन भट बहु विधि दान दिये । मागध सूत बंदीजन  
 बोलत सब दुख दूर गये ॥ २ ॥ पुष्टि प्रकास करन कों आये द्विज स्वरूप  
 धरये । 'विष्णुदास' के सिर विराजत प्रभु आनंदमये ॥ ३ ॥ ❀ ८६० ❀  
 ❀ राग देवगंधार ❀ जब तें वल्लभ भूतल प्रगट भये । वदन सुधानिधि निर-  
 खत प्रभु कौ सब दुख दूर गये ॥ १ ॥ श्री लछमन-वंस उजागर सागर  
 भक्ति-वेद सब फिर जुटये । मायावाद सब खंड-खंडन करि अति आनंद  
 भये ॥ २ ॥ गिरिधर लीला विस्तारन कारन दिन-दिन केलि रये । 'सगुन-  
 दास' सिर हस्त कमल धरि श्रीचरनांबुज गहे ॥ ३ ॥ ❀ ८६१ ❀ राग सारंग ❀

प्रगट भये प्रभु श्रीमद्वल्लभ ब्रजवल्लभ द्विज देह । निजजन सब आनंदित  
 गावत बजत बधाई सबहिन के गेह ॥ १ ॥ भूतल प्रगट्यो भाव श्रुतिन  
 को उपज्यो नंदनंदन-पद-नेह । मिटे ताप निजजन के मन के बरखे प्रेम  
 भक्ति रस मेह ॥ २ ॥ निरखत श्रीमुखचंद सबन के दूर भये सब निगम  
 संदेह । मिटि गये सब कपट कुटिल खल मारग भस्म भये सब आसुर  
 जेह ॥ ३ ॥ करत केलि कुंजन नित गिरिधर सुधि करिवो जो पूरव नेह ।  
 कहत 'दास' जोरी चिरजीयो क्यों गुन बरनें नाहिन छेह ॥ ४ ॥ ❀८६२❀  
 ❀ राग सारंग ❀ फल्यो जन-भाग्य पथ-पुष्टि करन दुष्ट पाखंड मत खंड  
 खंडन किये । सकल सुख घोष को तिमिर हर लोक कौ कृष्णरस पोष कौ  
 पुंज पुंजन दिये ॥ १ ॥ सकल मरजाद मंडन प्रभु अवतरे खलन दंडन  
 करन भक्त निर्मल हिये । प्रकट लछमन सदन देखि हरखित बदन मदन  
 छवि कदन भई पदन नख ना छिये ॥ २ ॥ उदित भयो इंदु वृन्दाविपिन को  
 हरखि बरखि रस बचन सुन श्रवन निजजन पिये । 'कृष्णदासनिनाथ' हाथ  
 गिरिवर धरयो साथ सब गोष मुख निरखि नैननि जिये ॥ ३ ॥ ❀८६३❀  
 ❀ राग सारंग ❀ तत्व गुन बान भुवि माधवासित तरनि प्रथम भगवद् दिवस  
 प्रगट लछमन सुवन । धन्य चंपारण्य मन त्रैलोकजन अन्य अवतार होय  
 है न ऐसो भुवन ॥ १ ॥ लग्न वसु कुंभ गति केतु कवि इंदु सुख मीन बुध  
 उच्च रवि वैर नासे । मंद वृष कर्क गुरु भौम युत तम सिंघ योग ध्रुवकरन  
 बव यस प्रकासे ॥ २ ॥ ऋच्छ धनिष्ठा प्रतिष्ठा अधिष्ठान स्थित विरहवदना-  
 नलाकार हरिको । येहि निस्चै 'द्वारकेस' इनकी सरन और वल्लभाधीस  
 सर को ॥ ३ ॥ ❀ ८६४ ❀ राग सारंग ❀ सुखद माधव मास कृष्ण एकादसी  
 भट्ट लछमन गेह प्रगट बैठे आइ । ब्रज जुवती गूढ मन इंद्रियाधीस आनंद  
 गूढ जानि विधु निगमगति घट पाइ ॥ १ ॥ अन्न जन ग्रहन सुत भवन  
 तैसो जानि बिमल मति पाइ विधु जात हेरी आइ । दनुज मायिक मत

नम्र कंधर किये लिये ध्वज जानि ध्वज सुक्र है सुखदाई ॥२॥ अवनितल  
मलिनता दूरि करिवे काज गेह-सुख दैन जामित्र गति सनि जाइ । धर्म  
पथ भूप गुरु चरन वल्लभ जानि देवगुरु भौम अनुचर भए री आइ ॥३॥  
प्रखर मायावाद सत्रु संघात कारन सूररिपु सदन कों छाइ ।  
'गिरिधरन' कर्म अर्पन विधुतुंद दसम गेह गहि रहत अनुकूल कृति कों  
पाइ ॥ ४ ॥ ❀ ८६५ ❀ राग सारंग ❀ कांकरवारे तैलंग तिलक द्विज  
वंदों श्रीमद् लछमननंद । द्वैपथ-राज-सिरोमनि सुंदर भूतल प्रगटे वल्लभ चंद  
॥१॥ अबजु गहे विष्णुस्वामी-पथ नवधा भक्ति रतन रस कंद । दरसन ही  
प्रसन्न होत मन प्रगटे पूरन परमानंद ॥२॥ कीरत विसद कहाँ लों बरनों  
गावत लीला श्रुति सुर छंद । 'सगुनदास' प्रभु षट्गुन-संपन्न कलिजन  
उद्धरन आनंद कंद ॥३॥ ❀ ८६६ ❀ राजभोग सरे ❀ पलना ❀ राग  
श्री वल्लभलाल पालने भूलें मात एलम्मा भुलावे हो । रतन जटित कंचन  
पलना पर भूमक मोती सुहावे हो ॥ १ ॥ भालर गज मोतिनि की राजत  
दच्छिन चीर उढावे हो । तोरन घुंघरू घमक रहे हैं भुंभना भूमकि मिलावे  
हो ॥२॥ चुचकारत चुटकी दैनचावत चुंबन दै हुलरावे हो । किलकि किलकि  
हँसत मुख प्रमुदित बाललीला जाहि भावे हो ॥३॥ कबहुँक उरज पय पान  
करावत फिर पलना पोढावे हो । पीठ उठाय मैया सन्मुख व्है आपुन  
रीफि रिभावे हो ॥४॥ महाभाग्य हैं तात मात दोऊ आपुन यों विसरावै  
हो । 'वल्लभदास' आस सब पूजी श्रीवल्लभ दरस दिखावे हो ॥५॥ ❀ ८६७ ❀  
❀ ढीढी ❀ राग ❀ ढाढी श्रीलछमन-राजकुमार । तिहारें पुत्र भये  
पुरुषोत्तम सुफल कियो मेरो काज ॥ १ ॥ तुम्हारे पितर भये जे पहले महा-  
पुरुष अवतार । तैलंग तिलक द्विज जग्य नारायन कीने जग्य अपार ॥  
तिनके पुत्र भये गंगाधर कीने सोम जाग । तिनके गनपति सोम यग्य  
करि यह बड़ोजु सुहाग ॥ २ ॥ ताके श्रीवल्लभ अग्निहोत्री तुव पिता ही

कृपाल । तिहारे पुत्र आचारज वल्लभ बदन अनल प्रतिपाल ॥ टेक ॥ दैवी  
 जीव उद्धारन कारन मायावाद निवार । श्री भागवत स्वरूप दिखायो सेवा  
 पुष्टि प्रकार ॥ ३ ॥ इनके पुत्र होयंगे दोऊ हलधर नंदकुमार । गोपीनाथ  
 श्री विट्ठल पुरुषोत्तम तिहूँ लोक उजियार ॥ टेक ॥ श्री विट्ठल के सात होयंगे  
 सुत ते सब आपु समान । सुत के सुत नातीं पंती सब दीपत दीप समान ।  
 ॥४॥ नरनारी जे सरन आये हैं ते सब किये सनाथ । नाम सुनाय अभै  
 दैके फिर पकरे दृढ़ करि हाथ ॥ टेक ॥ तुव सुत के गुन रूप बखानत सेस  
 न पाये पार । गोकुलपति मुख निरखि निरखि वपु आकृति सीतल सार ।  
 ॥५॥ हौं तो ढाढी तिहारे घर को कीरति करों प्रनाम । पोढि रहौ हरि  
 बदन बिलोकों मांगों न भिच्छा आन । तुम हो परम उदार दानेश्वर हौं  
 मागों सो दीजे । ढाढि मेरी इनकी चेरी मोहि चरो करि लीजे ॥ टेक ॥  
 निसिदिन भक्ति करों तुव सुत की इतनी पूजवो आस । जनम-जनम नित  
 देखों बलि-बलि 'माधोदास' ॥६॥ ❀ ८६८ ❀ थापादें तब ❀ राग सारङ्ग ❀  
 आनंद आज भयो हो भयो जगती पर जय जय कार । श्री लछमन गृह  
 प्रगट भये हैं श्री वल्लभ सुकुमार ॥१॥ धन्य धन्य माधव मास एकादसी  
 कृष्णपक्ष रविवार । गुन निधान 'श्री गिरिधर' प्रगटे लीला द्विज तनु धार ।  
 ॥२॥ ❀ ८६९ ❀ शयन भोग आये ❀ राग कल्याण ❀ श्री लछमन कुल चंद  
 उदित जग उद्योतकारी । मात इलम्मा विमलराका उडुगन निजजन समाज  
 पोषत पीयूष वचन हरियस उजियारी ॥१॥ करुनामय निष्कलंक मायावाद  
 तिमिर हरन सकल कला पूरन मन द्विजवपुधारी । बलि बलि बलि 'माधो-  
 दास' चरन कमल किये निवास भयो चकोर लोचन छबि निरखत गिरिधारी  
 ॥२॥ ❀ ८७० ❀ सेन भोग आये ❀ राग कान्हरा ❀ प्रभु श्रीलछमन गृहप्रगट  
 भये । हरि लीला रस सिंधु कला निधि वचन किरन सब ताप गये ॥१॥  
 मायावाद तिमिर जीवन को प्रगटत नास भयो उर अंतर । फूले भक्त

कुमोदिनी चहुँ दिस सोभित भये भक्ति मन सारस ॥ २ ॥ मुदित भये कमल  
मुख तिनके वृथा वाद आये गनत बल । 'गिरिधर' अन्य भजन तारागन  
मंद भये भजि गावत चंचल ॥३॥ ❀ ८७१ ❀ सेनमोग सरें ❀ राग विहाग ❀  
जप तप तीरथ नेम धरम ब्रत मेरे श्री वल्लभप्रभु जी कौ नाम । सुमिरौं मन  
सदा सुखकारी दुरित कटै सुधरे सब काम ॥ १ ॥ हृदै बसैं जसोदा-सुत  
के पद लीला सहित सकल सुख धाम । 'रसिकन' यह निर्धार कियो है  
साधन त्यज भज आठौ जाम ॥ २ ॥ ❀ ८७२ ❀

### अक्षय तृतीया ( वैशाख सुदी ३ )

❀ मंगला दर्शन ❀ राग भैरव ❀ भोर भये देखौ श्री गिरिधर कौ कमल  
मुख । मंगल आरती करौ प्रात ही नयन निरखत होत परम सुख ॥ १ ॥  
लोचन विसाल छबि संचि हृदय में धरौ कृपा अवलोकिये कों चारु भृकुटी  
रुख ॥ 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर आनंदनिधि दूरि करि हो सब रैन को  
विरह दुःख ॥ २ ॥ ❀ ८७३ ❀ शृंगार ओसारा ❀ राग विलावल ❀ आजु  
मोहि आगम अगम जनायो । मृगमद सानि अरगजा केसर आँगन भवन  
लिपायो ॥१॥ तन सुख पाग पिछौरा भीनो केसर रंग रँगायो । मुक्ता के  
आभूषन गुहियत पहरावन हुलसायो ॥२॥ पंखा नवल उसीर प्रीतम कों  
राखोंगी छिरकायो । ग्रीष्म ऋतु सुख देनि नाथ कों यह औसर चलि  
आयो ॥३॥ आवेंगे महमान आज हरि भाग्य बड़े दिन पायो । 'कुंभनदास'  
विरहनि ब्रजबाला आगम सुजस जनायो ॥४॥ ❀ ८७४ ❀ राग विलावल ❀  
आज गोपाल पाहुने आये आनंद मंगल गाऊंगी । जल गुलाब सों घोरि  
अरगजा आँगन-भवन लिपाऊंगी ॥१॥ सीतल सदन सुखद के साधन कुच-  
भुज बीच बसाऊंगी । 'कुंभनदास' लाल गिरिधर कों जो एकांत करि  
पाऊंगी ॥२॥ ❀ ८७५ ❀ राग देवगंधार ❀ मज्जन करत गोपाल चौकी पर ।  
अति सुगंध फुलेल उबटनो विविध भाँति की सोंज राखी धर ॥१॥ प्रथम



न्हवाय फिर केसर चरचत सोभित अंग-अंग सुंदर वर । ब्रज-गोपी सब  
 मिलि गावति हैं अंग उबट करि परसि सीस कर ॥२॥ एक जो अंग वस्त्र  
 लै आई पौंछत हैं मन अति भर । शृंगार करन कों गिरिधर बैठे चौकी  
 साज धरी तर ॥३॥ विविध भाँति सिंगार करत हैं अपनी अपनी रुचि सुधर  
 वर । लै दर्पन श्री मुखहि दिखावत निरखि-निरखि हँसे हर-हर ॥४॥ भाँति-  
 भाँति सामग्री करि-करि लै आई सब घर-घर । 'छीतस्वामी' गिरिधरन  
 अरोगत अति आनंद प्रफुलित कर ॥५॥ ❀ ८७६ ❀ राग बिलावल ❀  
 भोग-सिंगार मैया सुनि मोकों श्री विट्ठलनाथ के हाथ को भावे । नीके न्हवाय  
 सिंगार करत हैं आछे रुचि सों मोहि पाग बंधावे ॥ १ ॥ तातें सदा हों  
 उहाँ ही रहत हों तू डर माखन दूध छिपावे । 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल  
 निरखि नैना त्रै ताप नसावें ॥२॥ ❀ ८७७ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग विभ'स ❀  
 धरयो हरि श्वेत पिछोरा ललित । तैसीय पाग रही अति सोभित दच्छिन  
 सुत सिव वलित ॥१॥ मुक्ता भूषन रहे अंग जिन कियो सैल कर कलित ।  
 तामें लखे 'सखी' जिय देखियत भयो काम तन गलित ॥२॥ ❀ ८७८ ❀  
 ❀ राजभोग सरे ❀ राग सारंग ❀ बैठे लाल कुंजन में जो पाऊं । स्यामा स्याम  
 भाँवती जोरी अपने हाथ जिमाऊं ॥१॥ चंदन चचौं पोहोप की माला हरखि  
 हरखि पहिराऊं । 'श्रीभट' देत पान की बीरी चरन कमल चित्त लाऊं ॥२॥  
 ❀ ८७९ ❀ चंदन धरे तब ❀ भाँझ पखावज सुं ❀ राग सारंग ❀ अक्षय तृतीया  
 अक्षय लीला नवरंग गिरिधर पहिरत चंदन । वाम भाग वृषभान नंदिनी  
 बिच-बिच चित्र किये नव वंदन ॥ १ ॥ तनसुख छींट इजार बनी है पीत  
 उपरना विरह निकंदन । उर उदार बनमाल मल्लिका सुभग पाग जुवतिन  
 मन फंदन ॥२॥ नख-सिख रत्न अलंकृत भूषन श्री वल्लभ मारग मन रंजन ।  
 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर नागर लोचन चपल लजावत खंजन ॥ ३ ॥  
 ❀ ८८० ❀ उत्सव भोग आये ❀ राग सारंग ❀ अक्षय तृतीया अक्षय सुभ

दिन पियकों पिया चढावै चंदन । तब ही पिया सिंगारी नारी अरगजा घोर  
सुधर नंदनंदन ॥ १ ॥ ले दर्पन निरखे जु परस्पर रीफि-रीफि रही जो  
बंदन । 'नंददास' प्रभु पिय रस भीजे जुवतिन सुखद विरह दुख कंदन ॥२॥

❀ ८८१ ❀ राग सारंग ❀ अक्षय तृतीया सुभ दिन नीको चंदन पहिरत  
नवल किसोर । उज्ज्वल बसन नवीन सो राजत फेंटा के नीके छट छोरा ॥१॥  
केसर तिलक माल फूलन की पहिरें ठाड़े रंग भरे । आस-पास जुवती जन  
सोभित गावत मंगल गीत खरे ॥ २ ॥ मुसकत हैं थोरे थोरे से बोलत  
रसाल लखीरी । अति अनुराग भरे मोहन कों 'कृष्णदास' तहां देत हैं  
बीरी ॥ ३ ॥ ❀ ८८२ ❀ राग सारंग ❀ आज बने नंदनंदन री नव चंदन  
को तन लेप किये । तामें चित्र बने केसर के राजत हैं सखी सुभग हिये  
॥१॥ तनसुख को कटि बन्यो है पिछौरा ठाड़े हैं कर कमल लिये । रुचिर  
बनमाल पीत उपरैना नयन में सरसे देखिये ॥ २ ॥ करनफूल प्रतिविंब  
कपोलनि मृगमद तिलक ललाट दिये । 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरनलाल  
छबि टेढ़ी पाग रही भृकुटि छिये ॥३॥ ❀ ८८३ ❀ राग सारंग ❀ आज बने  
नंदनंदन री नव चंदन अंग अरगजालाये । रुकत हार सुदार जलज मनि  
गुंजत अलि अलकनि समुदाये ॥१॥ पीत बसन तन बन्यो पिछौरा टेढ़ी  
पाग टोरा लटकाये । अक्षय तृतीया अक्षय लीला अक्षय 'गंगादास' सुख  
पाये ॥२॥ ❀ ८८४ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ बागो बन्यो बावना  
चंदन को । चंपकली की पाग बनाई भाल तिलक नव बंदन को ।  
सूथन की छबि कहत न आवे भाँति-भाँति मन फंदन कों । 'परमानंद'  
आनंदित आनन देखत हैं नंदनंदन को ॥ २ ॥ ❀ ८८५ ❀  
❀ भोग के दर्शन ❀ राग सारंग ❀ चंदन कौ बागो बन्यो चंदन की खोर किये  
चंदन के रुख तर ठाड़े पिय प्यारी । चंदन की पाग सिर चंदन को फेंटा  
बन्यो चंदन की चोली तन चंदन की सारी ॥१॥ चंदन की आरसी निहारत

हैं दोऊजन चंदन के जल के फुहारे छूटत छबि भारी । 'सूरदास' मदन-  
मोहन चंदन के महल बैठे गावत सारंग राग रंग रह्यो भारी ॥२॥ ❀ ८८६ ❀  
❀ संध्या समय ❀ राग हमीर ❀ पिछोरा खासा कौ कटि बांधे । वे देखो  
आवत हैं नंदनंदन नयन कुसुम सर सांधे ॥ १ ॥ स्याम सुभग तन गौरज  
मंडित बांह सखा के कांधे । चलत मंदगति चाल मनोहर मानो नटवा गुन  
गांधे ॥२॥ यह पद कमल अबहि प्रापत भये बहुत दिनन आराधे । 'परमानंद'  
स्वामी के कारन सुरमुनि धरत समाधे ॥३॥ ❀ ८८७ ❀ सैन भोग आये ❀  
❀ राग कान्हरो ❀ लाडिली लाल राजत रुचिर कुंज में । अरगजा अंग-  
अंग रंग बागे बने दोऊ जन प्रेमसों स्नेह रस पुंज में ॥१॥ निरत ठाड़ी  
अली भलिय गति भेद सों रैन पहिली जानि एक अलि पुंज में । परयो  
परदा धरयो सैन को भोग पय पूरी भर थाल भुज लाल कर कंज में ॥२॥  
❀ ८८८ ❀ राग कान्हरो ❀ सुखद जमुना पुलिन सुखद नव कुंज में सुखद  
स्यामा स्याम करत ब्यारू सुखद । सुखद चंदन अंग सुखद लेपन करि  
सुखद भूषन कुसुम पहिर दोऊ तन सुखद ॥१॥ सुखद बिंजना दुरत मलय  
चहुँ दिसि सुखद सुखद गावत अली कोकिला ही सुखद । सुखद गिरिधरन  
हित सुखद पय पात्र भरि सुखद लाई सुखद ललित 'ललिता' सुखद ॥२॥  
❀ ८८९ ❀ दूसरे भोग आये ❀ राग बिहाग ❀ हँसि-हँसि दूध पीवत नाथ । मधुर  
कोमल बचन कहि-कहि प्रान प्यारी साथ ॥१॥ कनक कटोरा भरयो अमृत  
दियो ललिता हाथ । लाडिली अचवाय पहिलें पाछें आप अघात ॥२॥  
चिंतामनि चित बस्यो सजनी नाहिन और सुहात । स्यामा स्याम की नवल  
छबि पर 'रसिक' बलि बलि जात ॥३॥ ❀ ८९० ❀ शयन दर्शन ❀ राग कान्हरो ❀  
मेरे घर आओ नंदनंदन चंदन कर राखों अति सीतल । अपने ही कर  
लगाऊं सब अंग भीनो बसन कर दीपत भाई कल ॥१॥ मेवा मिठाई बहोत  
सामग्री कपूर सुवास मिश्री सों भल । करहु ब्यार में तोय बिंजना लै गले

पहिराऊं माल तुलसीदल ॥२॥ कमल दलन की सेज बिछाऊं बाँह धरों  
 श्री राधा की गल । गिरिधर लाल लाडिलीछवि देखत 'श्रीकृष्ण' सिर पर  
 ॥ ३ ॥ ❀ ८६१ ❀ वैशाख सुदी ४ ❀ शृंगार ओसरा ❀ राग बिलावल ❀ घूमत  
 रतनारे नैन सकल निसि जागे । लटपटी सुदेस पाग अलकनि की भलक  
 बीच पीक छाप जुग कपोल अधरन मसि लागे ॥ बिन गुन माल बनी  
 बिच नख रेख ठनी पलटि परे बसन पीठ कंकन के दागे । चक बन्यो  
 चंदन बनमाल लग्यो चंदन सु डगमगात चरन धरत पिया प्रेम पागे ॥२॥  
 बचन रचन कियो सौं भेग आये भोर मांभ बलि-बलि या बदन कमल  
 सोभित अनुरागे । जाय बसो वाहि धाम बिलसे जहाँ सकल जाम  
 'गोविंद प्रभु' बलिहारी कर जोर मांगे ॥३॥ ❀ ८६२ ❀ राग बिलावल ❀  
 क्यों सब दुरत हो प्रगट भये । काहू के नयन उनींदे निकसे मानों सर सजे  
 अरुन नये ॥ १ ॥ जावक भाल राग रस लोचन मसि रेखा जिहि अधर  
 दये । वलय पीठ नितंब चरन मनि बिनु गुन हार जु कंठ चये ॥ २ ॥ भुज  
 ताटक ग्रीव बदन चिह्न कपोल दसन घसये । आलिंगन चुंबन कुच चरचत  
 मानों दोऊ ससी उर उदये ॥३॥ चरन सिथिल अरु चाल डगमगी घूमत घायल  
 से समर जये । सोभित है सब अंग अरुन अति स्यामा नख सायुज्य दये  
 ॥ ४ ॥ राजत बसन नील अरु राते आतुर मानों पलट लये । 'सूरदास'  
 प्रभु को मन मान्यो सुंदरस्याम जू कुटिल भये ॥ ५ ॥ ❀ ८६३ ❀  
 ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ हों वारि डारों री ब्रजईस सीस पर अध-  
 टेडी पगिया पर । तृन तोरत बलि जात जुवाति जन जहाँ-तहाँ देखियत  
 चटक मटक कर ॥ १ ॥ तन चंदन और स्वेत पिछोरा अरगजा भींजि  
 रह्यो सुंदर वर । 'कल्याण' के प्रभु गिरधारी जू की माधुरी निरखि मदन मन  
 मद हर ॥ २ ॥ ❀ ८६४ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सावंत सारंग ❀ सखि सुगंध  
 जल घोरि कें चंदन हरि अंग लगावत । बदन कमल अलकें मधुपनि

सी डेढी पाग मन भावत ॥ १ ॥ कोऊ विंजना कुसुमनि के ढोरत कुसुम  
भूखन लै उर पहिरावत । तरु बेली सी सीयरी सी क्रीडत 'ब्रजाधीस' मन  
भावत ॥ २ ॥ ८६५ ❀ पोढवे में ❀ राग बिहाग ❀ पोढिये लाल निवास  
अटारी । ललितादिक सहचरी जुरि आई फूलि रही फुलवारी ॥ १ ॥ रत्न  
जटित हीरा के कटोरा धरे अरगजा सँवारी । अति अनुराग परस्पर दोऊ  
करत लेपन पिय प्यारी ॥ २ ॥ वृंदावन की सघन कुंज में कुसुम रावटी  
सँवारी । 'सूरदास' बलि-बलि जोरी परतन मन धन सबवारी ॥ ३ ॥ ❀ ८६६ ❀

### नृसिंह जयन्ती ( वैशाख सुदी १४ )

❀ पंचाशत समय ❀ राग कान्हरो ❀ यह व्रत माधौ प्रथम लियो । जो  
मेरे भक्तन कों दुखवे ताको फारू नखन हियो ॥ १ ॥ जो भक्तन सों बैर  
करत है परमेश्वर सों बैर करे । रखवारी कों चक्र सुदर्शन माथे ऊपर सदा  
फिरें ॥ २ ॥ पराधीन हों अपने भक्त कों जा कारन अवतार धरयो । यह  
जु कही हरि मुनिजन आगे अभिमानी कों गर्व हरयो ॥ ३ ॥ भज तें भजों  
त्यजों नहि कबहुं पारथ प्रति श्रीपति यों भाखी । 'परमानंददास' को ठाकुर  
अखिल भुवन सब साखी ॥ ४ ॥ ❀ ८६७ ❀ उत्सव भोग आये ❀ राग कान्हरो ❀  
तोलों हों बैकुंठ न जै हों । सुन प्रहलाद प्रतिज्ञा मेरी जोलों तौ सिर छत्र  
न दै हों ॥ १ ॥ मन क्रम वचन मान जिय अपने जहँ-जहँ जाने तहिँ तहिँ  
लै हों ॥ २ ॥ निरगुन सगुन हेरि सब देखे तोसों भक्त मैं कबहुं न पै हों ।  
मो देखत मेरो दास दुखित भयो यह कलंक अब ही जु चुकै हों ॥ ३ ॥  
हृदय कठिन पाषाण है मेरो अब ही दीनदयाल कहै हो । गहि तन  
हिरन्यकसिपु को चीरौ उदर फारि नख रुधिर बहै हों । यह सुनि बात तात  
अब 'सूरज' यह कृत को फल तुरत चखै हों ॥ ४ ॥ ❀ ८९८ ❀ राग कान्हरो ❀  
कहा पढ्यो प्रहलाद दुलारे । पूछत वचन तात यों भाषत तुम सों बहोत  
सकल पचिहारे ॥ १ ॥ जो कछु मोहि पढावै पांडे मोपै पढ्यो न जाय

पिता रे । मेरे तो हूँ नाम नरहरि को कोटि करो तोहु टरत न  
 टारे ॥ २ ॥ सुनतहि कोप भयो हिरनाकुस पायक सकल दिये हँकारे ।  
 बाँधो पाय याहि त्रास दिखावो कहाँ राम तेरे रखवारे ॥ ३ ॥  
 बालक दुखी भयो तिहिँ औसर श्रीपति श्री रघुनाथ संभारे । 'सूरदास'  
 प्रभु निकस खंभ ते हिरनाकुस नख उदर विदारे ॥ ४ ॥ ❀ ८६६ ❀  
 ❀ राग कान्हरा ❀ अपनो जन प्रह्लाद उबारयो । खंभ बीच तें प्रगटे नरहरि  
 हिरन्यकसिपु उर नखन विदारयो ॥ १ ॥ बरखत कुसुम सब्द ध्वनि जै-जै  
 सुर देखत सदा कौतुक हारयो । कमला हरिजू के निकट न आवत ऐसो रूप  
 हरि कबहुँ न धारयो ॥ २ ॥ प्रह्लादै चूबत अरु चाटत भक्त जानि कै क्रोध  
 निवारयो । 'सूरदास' बलि जाय दरस की भक्त-विरोधी दैत्य निस्तारयो ॥  
 ३ ॥ ❀ ६०० ❀ राग कान्हरा ❀ हरि राखै ताहि डर काको । महापुरुष  
 समरथ कमलापति नरहरि सो ईस है जाको ॥ १ ॥ अनेक सासना करि-करि  
 देखी निष्फल भई खिस्थाय रह्यो । ता बालक को बाल न बाँको हरि की  
 सरन प्रह्लाद गयो ॥ २ ॥ हिरन्यकसिपु को उदर विदारयो अभय राज  
 प्रह्लादै दीनो । 'परमानंद' दयाल दयानिधि अपने भक्त को नीको कीनो ॥  
 ३ ॥ ❀ ६०१ ❀ राग कान्हरा ❀ जाकौं तुम अंगीकार कियो । तिनके  
 कोटि विघ्न हरि टारे अभय दान भक्तन कों दियो ॥ १ ॥ बहु सन्मान दियो  
 प्रह्लादै सब ही निसंक जियो । निकसे खंभ फारि कें नरहरि आपुन राख  
 लियो ॥ २ ॥ दुर्वासा अंबरीष सतायो सो पुनि सरन गयो । प्रतिज्ञा राखी  
 मनमोहन पिय उन्हीं पै पठयो ॥ ३ ॥ मृतक भये हरि सबनि जिवाये दृष्टि  
 हूँ अमृत पियो । 'परमानंद' भक्त बस केसव उपमा कौन बियो ॥ ४ ॥  
 ❀ ६०२ ❀ शयन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ श्रीनरसिंह भक्त-भय-भंजन जनरंजन  
 मन सुखकारी । भूत प्रेत पिसाच डाकिनी जंत्र मंत्र भव-भय हारी ॥ १ ॥  
 सबै मंत्र तें अधिक नाम जन रहत निरंतर उर धारी । निजजन सब्द सुनत

आनंदित गिरि गये गर्भ दनुज-नारी ॥ २ ॥ कोटिक काल दुरासद बिघ्ने  
महाकाल को काल संघारी । श्री नरसिंह चरन पंकज रज 'जन परमानंद'  
बलि बलिहारी ॥ ३ ॥ ❀६०३❀

### गंगा-दशमी ( ज्येष्ठ सुदी १० )

❀ मंगला दर्शन ❀ आगें-आगें भाज्यो जात भगीरथ को रथ पाछें-  
पाछें आवत रंग भरी गंग । भलमलात अति उज्ज्वल जल ज्योति अब  
निरखत मानों सीस भरी मोतिन मंग ॥ १ ॥ जहाँ परे हैं भूप कबकें भस्म  
रूप ठौर-ठौर जागि उठे होत सलिल संग । 'नंददास' मानों अग्नि के जंत्र  
छूटे ऐसे सुरपुर चले धरे दिव्य अंग ॥ २ ॥ ❀ ६०४ ❀ शृंगार ओसरा ❀  
❀ अष्टपदी ❀ नमो देवि यमुने नमो देवि यमुने हर कृष्ण मिलनांतरायम् ।  
निजनाथ-मार्ग दायिनी कुमारीकाम पूरिके कुरु भक्तिरायम् ॥ ध्रुव० ॥  
मधुपकुलकलित कमलावली व्यपदेशधारित श्रीकृष्णयुत भक्त हृदये । सतत  
मतिशयित हरिभावना जात तत्सारूप्यगदित निजहृदये ॥ निजकुलभव  
विविधतरुकुसुमयुतनीरशोभयाविलसदलिवृंदे । स्मारयसि गोपीवृंद  
पूजितसरसमीशवपुरानंदकंदे ॥ २ ॥ उपरिचलदमलकमलारूपद्युतिरेणु-  
परिमिलितजलभरेणामुना । व्रजयुवतिकुचकुंमकुमारुण मुरः स्मारयसिमार  
पितुरधुना ॥ ३ ॥ अधिरजनि हरिविहृतिमीक्षितुं कुवल्याभिधसुभगनयना-  
न्युशतितनुषे । नयनयुगमल्पमिती बहुतराणि च तानिरसिकतानिधितया  
कुरुषे ॥ ४ ॥ रजनिजागरजनितरागरंजित नयन पंकजैरहनिहरिमीक्षसे ।  
मकरंदभरमिषेणानंद पूरिता सततमिह हर्षाश्रुमुंचसे ॥ ५ ॥ तटगतानेकशुक-  
सारिका मुनिगण स्तुतविविध गुणसिंधु सागरे । संगता सततमिहभक्तजनता-  
प्रहृतिराजसे रासरससागरे ॥ ६ ॥ रतिभर श्रमजलोदित कमल परिमल  
व्रजयुवतिजन विहरति मोदे । ताटकचलन सुनिरस्त संगीतयुत मदमुदित  
मधुपकृतविनोदे ॥ ७ ॥ निज व्रजजनावनायात्र गोवर्द्धने राधिका हृद्य कर

कमले । रतिमतिशयित रस 'विट्ठल' स्याशुकुखेणुनिनादाब्धान सरले ॥ ८ ॥  
 श्लोक—ब्रजपरिवृढवल्लभे कदात्वच्चरण सरोरुहमीक्षणास्पदं मे । तव तटगत  
 वालुकाः कदाहं सकल निजांगतामुदा करिष्ये ॥ १ ॥ वृंदावने चारु वृहद्वने  
 मन्मनोरथं पूरय सूरसूते । दृग्गोचरः कृष्णविहार एवं स्थिति स्त्वदीये तट  
 एव भूयात् ॥ २ ॥ ❀६०५❀ राग विभास ❀ परमेस्वरी देव मुनि वंदित  
 देवी गंगे । पावन चरन कमल नख रंजित सीतल बाहु तरंगे ॥१॥ मज्जन  
 पान करत जे प्राणी त्रिविध ताप दुख भंगे । तीरथराज प्रयाग प्रगट भयो  
 जब यमुना बेनी संगे ॥ २ ॥ भगीरथ कुल सगरो तारन बालमीक जस  
 गायो । तुव प्रताप हरि-भक्ति प्रेमरस जन 'परमानंद' पायो ॥३॥ ❀९०६❀  
 ❀ राग विलावल ❀ गंगा तैं त्रिभुवन जस छायो । सकल बंस उद्धार करन  
 कों लै भगीरथ आयो ॥१॥ जटा संकरी मात जान्हवी परसत पाप नसायो ।  
 महा मलीन पापी अपराधी सो वैकुंठ पठायो ॥ २ ॥ ऋषि प्रवेस भई ब्रह्म  
 कमंडलु वामन चरन छुवायो । तातैं तोहि सुर नर मुनि वंदित नाम महातम  
 पायो ॥ ३ ॥ जै-जैकार भयो त्रिभुवन में इन्द्र निजान बजायो । 'सूर-  
 दास' सुरसरी महिमा निगमहि परत न गायो ॥ ४ ॥ ❀ ९०७ ❀  
 शृङ्गार दर्शन❀राग आसावरी❀ ग्वालिनि कृष्ण दरस सों अटकी । बार-बार पनघट  
 पर आवत सिर जमुनाजल मटकी ॥१॥ मदनमोहन को रूप सुधानिधि पीवत  
 प्रेमरस गटकी । 'कृष्णदास' धनि-धनि राधिका लोकलाज सब पटकी ॥२॥  
 ❀६०८❀राजभोग आये❀राग सारंग❀ हरिजूकों ग्वालिनि भोजन लाई । वृंदा  
 विपिन विसद जमुनातट सुनि ज्योंनार बनाई ॥ १॥ सानि-सानि दधि-भात  
 लियो है सुखद सखन के हेत । मध्य गोपाल मंडली मोहन छाक विहँसि  
 मुख देत ॥२॥ देवलोक देखत सब कौतुक बालकेलि अनुरागे । गावत सुनत  
 सुखद अति मानों 'सूर' दुरत दुख भागे ॥ ३ ॥ ❀९०६ ❀ राग सारंग ❀  
 लाल गोपाल हैं आनंदकंद । बैठे हैं कालिदी के तट बांटत छाक जसोदानंद



॥ १ ॥ हँसि-हँसि भोजन करत परस्पर बाढ्यो रतिरस रंग । 'श्रीविट्ठलनाथ'  
 गोवर्द्धनधारी बैठे जेवत एकहि संग ॥२॥ ❀ ६१० ❀ राग सारंग ❀ बांढि  
 बांढि सबहिनकों देत । ऐसे ग्वाल हरिहैं जो भावत सेष रहत सोई आपुन  
 लेत ॥ १ ॥ आछो दूध सद्य धोरी कौ औट जमायो अपने हाथ । हँडिया  
 मंदि जसोदा मैया तुमकों दै पठई ब्रजनाथ ॥ २ ॥ आनंद मग्न फिरत  
 अपने रंग वृंदावन कालिंदी तीर । 'परमानंददास' भूठो लै बांह पसारि  
 दियो बलबीर ॥ ३ ॥ ❀ ६११ ❀ राग सारंग ❀ जमुना तट भोजन करत  
 गोपाल । विविध भांति दै पठयो जसुमति ब्यंजन बहुत रसाल ॥ १ ॥  
 ग्वाल मंडली मध्य बिराजत हँसत हँसावत बाल । कमल नैन मुसकाय मंद  
 हँसि करत परस्पर ख्याल ॥ २ ॥ कोऊ ब्यार दुरावत ठाडी कोऊ गावत गीत  
 रसाल । 'नंददास' तहां यह सुख निरखत अखियाँ होत निहाल ॥ ३ ॥  
 ❀ ६१३ ❀ राजभोग सरे❀ राग सारंग ❀ भोजन कीनौरी गिरिवरधर । कहा  
 बरनों मंडल की सोभा मधुवन ताल कदंबतर ॥१॥ पहले लिये मनोरथ ब्यंजन  
 जे पठये ब्रज घर-घर । पाछे डला दियो श्रीदामा मोहनलाल सुघरवर ॥२॥  
 हँसत सयानो सुबल सैन दे लाल लियो दोना कर । 'परमानंद' प्रभु मुख  
 अवलोकत सुरभी भीर पार पर ॥३॥ ❀ ६१३ ❀ राजभोग दर्शन❀ राग सारंग❀  
 मेरो लाल गंगा को सो पान्यो । पाँच बरस को सुद्ध सांवरो तैं क्यों विषयी  
 जान्यो ॥ १ ॥ नित उठि आवत हाथ नचावत कौन सहै नक बान्यो । चूरी  
 फोरत बांह मरोरत माट दही को भान्यो ॥२॥ ठाडी हँसति नंदजू की रानी  
 ग्वालनि बचन न मान्यो । 'परमानंद' मुसक्याय चली जब देख्यो नन्द  
 घरान्यो ॥३॥ ❀ ६१४ ❀ राग सारंग ❀ जमुना तट नवनिकुंज द्रुम नव दल  
 पोहोपपुंज तहां रची नागरवर रावटी उसीर की । कुंकुम घनसार घोरि पंकजदल  
 बोरि-बोरि चरचत चहुँ ओर अवनी पंकज पाटीर की ॥१॥ सोभित तनगौर  
 स्याम सुखद सहज कुंज धाम परसत सीतल सुगंध मंदगति समीर की । 'नंददास'

पिय प्यारी निरखि सखी ललिता ओट श्रवनन धुनि सुनि किंकिनी मंजीर की ॥२॥

❀ भोग के दर्शन में ❀ राग सोरठ ❀ अंग अनंगनि रंग रस्यो । नंद गृह तें नंदसुत वृषभान-भवन वस्यो ॥ १ ॥ धेनु के संग मिस ही मिस करि विपिन पंथ धस्यो । निरखि के सब ग्वाल सैन नयन फेरि हँस्यो ॥ २ ॥ बहुरि क्यों छूटत तहाँ ते बाहुबंध कस्यो । नेक राधा वदन चितयो हुलस इत विलस्यो ॥ ३ ॥ साँझ सब एकत्र हूँ कै घोख-पथ परस्यो । 'सूर' ऐसे दरस कारन मन रहत तरस्यो ॥ ४ ॥ ❀ ९१६ ❀ राग सारंग ❀ बैठे घनस्याम सुंदर खेवत हैं नाव । आज सखी मोहन संग खेलवे को दाव ॥१॥ जमुना गंभीर नीर अति तरंग लोलें । गोपिन प्रति कहन लागे मीठे मृदु बोलें । पथिक हम खेवट तुम लीजिये उतराई । बीच धार भाँझ रोकी मिस ही मिस डुलाई । डरपति हौं स्यामसुंदर राखिये पद पास । याही मिस मिल्यो चाहें 'परमानंददास' ॥ २ ॥ ❀ ९१७ ❀ संध्या समय ❀ राग सारंग ❀ जमुना जल खेवत हैं हरि नाव । बेगि चलो वृषभानु नंदिनी अब खेलन को दाव ॥ १ ॥ नीर गंभीर देखि कालिंदी पुनि-पुनि सुरत करावे । वारंवार तुव पंथ निहारत नैननि में अकुलावे ॥ २ ॥ सुनि कैं बचन राधिका दौरी आय कंठ लपटानी । 'परमानंद' प्रभु छवि अवलोकत विथक्यों सरिता पानी ॥ ३ ॥ ❀ ६१८ ❀ शयन दर्शन ❀ अष्टपदी ❀ रतिमुखसारे गत-मभिसारे मदनमनोहर वेषम् । न कुरु नितंबिनि गमन विलंबनमनुसरतं हृह्येशम् ॥ १ ॥ धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली । गोपी पीन पयोधर मर्दन चलित चपल कर शाली ॥ ध्रु० ॥ नाम समेतं कृत संकेतं वादयते मृदुवेणुम् । बहुमनुते तनुते तनुसंगत पवन चलितमपि रेणुम् ॥२॥ पतति पतत्रे विचलित पत्रे शंकित भवदुपयानम् । रचयति शयनं सचकित नयनं पश्यति तव पंथानम् ॥ ३ ॥ मुखरमधीरं त्यज मंजीरं रिपुमिव केलि सुलोलम् । चल सखि कुंजं स तिमिर पुंजं शीलिय नील निचोलम् ॥ ४ ॥

उरसि मुरारें रूपहितहारे घन इव तरलबलाके । तडिदिव पीते रति  
 विपरीते राजसि सुकृत विपाके ॥ ५ ॥ विगलित वसनं परिहत रसनं घट्य  
 जघनमपिधानम् । किसलयशयने पंकज नयने निधिमिव हर्ष निधानम् ॥ ६ ॥  
 हरिर्भिमानी रजनिरिदानीमियमपि याती विरामम् । कुरु मम वचनं सत्वर  
 रचनं पूरय मधुरिपुकामम् ॥ ७ ॥ 'श्रीजयदेवे' कृत हरि सेवे भणित परम  
 रमणीयम् । प्रमुदित हृदयं हरिमतिसदयं नमत सुकृत कमनीयम् ॥ ८ ॥ ❀ ६१९ ❀  
 ❀ मान ❀ राग विहाग ❀ बोलत चलि ब्रजराज लाडिले बैठे पिय निकुंज  
 सघन । रसिकराय मदनमोहनलाल पियसों तजि मान मिलि बैगि कुसुम  
 सुकुमार तन ॥ १ ॥ जमुना जल तरंग सुनि सजनीरी सीतल सुगंध बहत  
 पवन । विविध कुसुम मकरंद पान कर गुंजत मत्त मधुपगन ॥ २ ॥ निबिड  
 कोकिला कलरव तेसोई उदित उडुराजवर बरखत सुखद सुधाकन । 'गोविंद'  
 प्रभु रीफि हृदै सों लगाय लई रसिकराय नंदनंदन ॥ ३ ॥ ❀ ६२० ❀  
 ❀ राग विहाग ❀ नवल किसोर नवल नागरिया । अपनी भुजा स्याम भुज  
 ऊपर स्याम भुजा अपने उर धरिया ॥ १ ॥ करत विहार तरनितनया तट  
 स्यामास्याम उमग रस भरिया । यों लपटाय रहे दोऊ जन मरकत मनि  
 कंचन जैसे जरिया ॥ २ ॥ या उपमा कों रवि ससि नाहीं कंदर्प कोटिक  
 वारने करिया । 'सूरदास' बलि-बलि जोरी पर नंदनंदन वृषभान दुलरिया ॥  
 ॥ ३ ॥ ❀ ६२१ ❀ ज्येष्ठ सुदी ११ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग बिभास ❀ जमुना  
 पुलिन सुभग वृंदावन नवल लाल श्रीगोवर्द्धनधारी । नवल निकुंज नवल  
 कुसुमित दल नवल-नवल वृषभानु दुलारी ॥ १ ॥ नवल हास नवल छवि  
 क्रीडत नवल विलास करत सुखकारी । नवल श्रीविट्ठलनाथ कृपाबल  
 'नंददास' निरखत बलिहारी ॥ २ ॥ ❀ ९२२ ❀ ज्येष्ठ सुदी १४<sup>†</sup> ❀ मंगला दर्शन ❀  
 ❀ राग रामकली ❀ प्रानपति विहरत श्रीजमुना कूले । लुब्ध मकरंद के

† आज सूँ स्नान यात्रा तक सब समय पनघट के कीर्तन होय ।

अमर ज्यों बस भये देखि रवि उदय मानो कमल फूले ॥ १ ॥ करत गुंजार  
 मुरली जू लै सांवरो सुरत ब्रजबधू तन सुधि जु भूले । 'चतुर्भुजदास' जमुने  
 प्रेम सिंधु में लाल गिरिधरन अब हरखि भूले ॥ २ ॥ ❀ ६२३ ❀ शृंगार ओसरा ❀  
 ❀ राग बिलावल ❀ जमुनाजल घट भरि चली चंद्रावली नारि । मारगमें खेलत मिले  
 घनस्याम मुरारि ॥ १ ॥ नैननि सों नैनां मिले मन रह्यो लुभाय । मोहन मूरति  
 बसि रही पग चल्यो न जाय ॥ २ ॥ तब तें प्रीति अधिक बढी यह पहली  
 भेंट । 'परमानंद' स्वामी मिले जैसे गुड़ चेंट ॥ ३ ॥ ❀ ६२४ ❀ राग बिलावल ❀  
 मोहि जल भरन दै रे कन्हैया ॥ ध्रु० ॥ और नागरि सब गागरि ले गई  
 मोहि रोकत घर मग जोवै मेरी मैया ॥ १ ॥ मेरो कह्यो तू मानि लै हो मोहन  
 सुनि हो कुंवर बलदाऊ जू के भैया । 'कुंवरसेन' के प्रभु आर नहिं कीजे हों  
 तो तिहारी लैहों बलैया ॥ २ ॥ ❀ ६२५ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग आसावरी ❀  
 आवत ही जमुना भर पानी । सांवरे बरन ढोटा कौन को री माई वाकी चितवन  
 मेरी गैल भुलानी ॥ १ ॥ हों सकुची मेरे नैन सकुचे इन नैनन के हाथ बिकानी ।  
 'परमानंद' प्रभु प्रेम समुद्र में ज्यों जलधर की बूंद समानी ॥ २ ॥ ❀ ६२६ ❀  
 ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आसावरी ❀ आवत ही जमुना भरि पानी । स्याम रूप  
 काहू को ढोटा वाकी चितवनि मेरी गैल भुलानी ॥ १ ॥ मोहन कह्यो तुम  
 कों या ब्रजमें हमें नाहिं पहचानी । ठगी सी रही चेटक सो लाग्यो तब व्याकुल  
 मुख फुरत न बानी ॥ २ ॥ जा दिन तें चितयोरी मो तन ता दिन तें हरि हाथ  
 बिकानी । 'नंददास' प्रभु यों मन मिलियो ज्यों सागर में पानी ॥ ३ ॥  
 ❀ ६२७ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग सोरठ ❀ भरि-भरि धरि-धरि आवत गागर  
 तू कौन के रस भरी ! और दिनन तुम एकहि बिरियां जात ही पनियां आज  
 केऊ बेर गई ऐसे कहा भयो बिनु देखे हरी ॥ १ ॥ जो तू सास ननद की  
 कान करेगी तो तू अपने कुल डरेगी री । 'हरिदास' ठाकुर को प्रभु है रूप  
 विमोहन नैन प्रान गये सब ढरेगी री ॥ २ ॥ ❀ ६२८ ❀ संख्या दर्शन ❀

❀ राग हमीर ❀ साँवरो देखत रूप लुभानी । चले री जात चितयोरी मोतन  
 तब ते संग लगानी ॥१॥ वे वहि घाट पिवावत गैया हों इतते गई पानी ।  
 कमलनैन उपरेंना फेरयो 'परमानन्द' हि जानी ॥२॥ ❀९२९❀ शयन भोग आये❀  
 ❀ राग कल्याण ❀ यह कौन टेव तिहारी कन्हैया जब तब मारग रोके । कैसे  
 के पनियां जाय जुवतिजन आडोइ ठाडो है लकुट लिये दृग भोके ॥१॥  
 कबहुँक पाछे तें गागर डार देत ऐसें बजावै तारी जैसे कोई चोँके । 'रसिक'  
 प्रीतम की अटपटी बातें सुनिरी सखी समझ न परें वाकी नोंके ॥२॥ ❀६६०❀  
 ❀ राग हमीर ❀ आवत सिर गागर धरे भरे जमुना जल मारग मिले मोहि  
 नंदजू को नंदना । सुधि न रही री ता छिन ते सुनिरी सखी देख्यो नैनन  
 आनंद को कन्दना ॥ १ ॥ चित तें कछु न सुहाय गेह दू रह्यो न जाय मेरी  
 दिसि चितवत डारयो मौपै फंदना । 'नन्ददास' प्रभु कों जो तू मिलावै तो  
 हों तोकों सरबस अरपि के पूजों तौ चंदना ॥ २ ॥ ❀६३१❀ सेनभोग सरे❀  
 ❀ राग कान्हरी ❀ कबतें चली यह रीति रहत पनघट पर ठाडो । जाति पांति कुल  
 कौन बडो है दसेक गैया बाडो ॥१॥ नंदबाबा जिन ऐसे सिखये जो करि अँखि  
 मोहुकों काढो । 'नन्ददास' प्रभु जैसे मृगी लों रूप गढो प्रेम फंदा गाढो ❀६३२❀  
 ❀ शयन दर्शन ❀ राग अडानो ❀ हों जल कों गई री सुघट नेह भरि लाई  
 परी हैं चटपटी दरस की । इत मोहन गाँस उत गुरुजन-त्रास चित्र लिखी  
 ठाढी नाम धरत सखी परस की ॥ १ ॥ दूटे हार फाटे चीर नयनन बहत  
 नीर पनघट भई भीर सुधि न कलस की । 'नंददास' प्रभु सौं ऐसी गाढी  
 बाढी प्रीत फैल परी चायन सरस की ॥२॥ ❀६३३❀ मान ❀ राग केदारा ❀  
 नागरी बेगि चलो प्यारी । कालिंदी के पुलिन मनोहर ठाढे लालबिहारी ॥  
 ॥ १ ॥ सीत समीर अरु नीर बहत हैं कुंज कुटीर सुखकारी । जानत हूँ  
 निसि नाहिन वेधी इन्दु पच्छिम कों धारी ॥२॥ रस बस करिलैं छैल छबीलो  
 तोहि मनावत हारी । 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरनलाल ने सुखनिधि सेज  
 सँवारी ॥ ३ ॥ ❀६३४❀

## स्नान-यात्रा ( ज्येष्ठ सुदी १५ )

❀ मंगल भोग आये ❀ राग रामकली ❀ श्री जमुनाजी तिहारो दरस मोहि भावे । श्रीगोकुल के निकट बहति हो लहरनि की छवि आवे ॥१॥ सुख देनी दुख हरनी श्रीजमुने जो जन प्रात उठि न्हावे । मदनमोहन जु की खरी ये हैं प्यारी पटरानी जू कहावे ॥ २ ॥ वृंदावन में रास रच्यो है मोहन मुरली बजावे । 'सूरदास' प्रभु तिहारे मिलन कों वेद विमल जस गावें ॥ ३ ॥ ❀ ६३५ ❀ स्नान के दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ मंगल ज्येष्ठ ज्येष्ठा पून्यो करत स्नान गोवर्द्धनधारी । दधि और दूध मधु ले सखी री केसर घट जल डारत प्यारी । चोवा चंदन मृगमद सौरभ सरस सुगन्ध कपूरनि न्यारी ॥ १ ॥ अरगजा अंग-अंग प्रति लेपन कालिंदी मध्य केलि बिहारी । सखियनि जूथ-जूथ मिलि छिरकत गावत तान तरंगनि भारी ॥ २ ॥ 'केसौकिसोर' सकल सुखदाता श्री वल्लभनंदन की बलिहारी ॥ ३ ॥ ❀ ९३६ ❀ राग बिलावल ❀ ज्येष्ठ मास पून्यो ज्येष्ठा को करत स्नान मुदित गोपाल । आगे द्विज मिलि करत वेद धुनि सुनि-सुनि मगन होत नंदलाल ॥१॥ सीतल जल रजनी अधिवासन बहु सुगंध चंदन छिरकाय । तुलसीदल पुहुपावलि धरकें केसर और कपूर मिलाय ॥ २ ॥ भरि-भरि संख डारत हरि के सिर श्रीविट्ठल प्रभु अपने हाथ । दरसन करत हरखि मन 'ब्रजपति' दोऊ द्रगनि भरि निरखे नाथ ॥३॥ ❀ ६३७ ❀ राग बिलावल ❀ ज्येष्ठ मास सुभ पून्यो सुभ दिन करत स्नान गोवर्द्धनधारी । सीतल जल हाटक जल भरि-भरि रजनी अधिवासन सुखकारी ॥ १ ॥ विविध सुगंध पुहुप की माला तुलसी दल दै सरस सँवारी । कर लै संख न्हावत हरि कों श्रीविट्ठल प्रभु की बलिहारी ॥ तैसेई निगम पढ़त द्विज आगे तैसेई गान करत ब्रजनारी । जै-जै सब्द चार्यों दिसि ह्वै रह्यो यह विधि सुख बरखत अति भारी ॥ ३ ॥ करि सिंगार परम रुचिकारी सीतल भोग धरत भरि-

थारी । दै बीरा आरती उतारति 'गोविंद' तन मन धन दै वारी ॥ ४ ॥  
 ❀ ६३८ ❀ राग विलावल ❀ पूरन मास पूरन तिथि श्रीगिरिधर स्नान करत  
 मन भायो । अति आनंद सौं न्हावत श्री बिटुल ज्यों विधि वेद बतायो  
 ॥१॥ उत्तम ज्येष्ठ ज्येष्ठानच्छत्र होत अभिषेक भक्तन मन भायो । 'परमानंद'  
 लाल गिरिवरधर अति उदार दरसायो ॥२॥ ❀ ६३९ ❀ शृंगार ओसरा ❀  
 ❀ राग रामकली ❀ नमो तरनि-तनया परम पुनीत जग पाविनी कृष्ण  
 मनभाविनी रुचिर नामा । अखिल सुखदायिनी सब सिद्धि हेतु श्रीराधिका  
 रमन रतिकरन स्यामा ॥ १ ॥ विमल जल सुमन कानन मोदजुत पुलिन  
 अतिरम्य प्रिय ब्रजकिसोरा । गोप-गोपी नवल प्रेम रति वंदिता तट मुदित  
 रहत जैसे चकोरा ॥ २ ॥ लहरी भाव ललित बालुका सुभग ब्रजबाल व्रत  
 पूरन रास फलदा । ललित गिरिवरधरन प्रिय कलिंदनंदिनी निकट 'कृष्ण-  
 दास' विहरत प्रबलदा ॥ ३ ॥ ❀ ६४० ❀ राग विभास ❀ श्री जमुनाजी दीन  
 जानि मोहिं दीजे । नंदकुमार सदा वर मांगों गोपिन की दासी मोहि कीजे ॥  
 ॥१॥ तुम तो परम उदार कृपानिधि चरन सरन सुखकारी । तिहारे बस सदा  
 लाडिली वर तट क्रीडत गिरिधारी ॥ २ ॥ सब ब्रजजन विहरत संग मिलि  
 अद्भुत रास विलासी । तुम्हारे पुलिन निकट कुंजनि द्रुम कोमल ससी  
 सुबासी ॥ ३ ॥ ज्यों मंडल में चंद बिराजत भरि-भरि छिरकति नारी ।  
 हँसत न्हात अति रस भरि क्रीडत जल क्रीडा सुखकारी ॥ ४ ॥ रानी जू  
 के मंदिर में नित उठि पाँय लागि भवन-काज सब कीजे । 'परमानंददास'  
 दासी हूँ नंदनंदन सुख दीजे ॥ ५ ॥ ❀ ६४१ ❀ राग रामकली ❀ अधम  
 उद्धारनी मैं जानी, श्री जमुनाजी । गोधन संग स्यामघन सुंदर तीर त्रिभंगी  
 दानी ॥ १ ॥ गंगा चरन परसतें पावन हर सिर चिकुर समानी । सात समुद्र  
 भेद जम-भगिनी हरि नखसिख लपटानी ॥ २ ॥ रास रसिकमनि नृत्य  
 परायन प्रेम पुंज ठकुरानी । आलिंगन चुंबन रस बिलसत कृष्ण पुलिन

रजधानी ॥ ३ ॥ ग्रीष्म ऋतु सुख देति नाथ कों संग गधिका रानी ।  
 'गोविंद' प्रभु रवितनया प्यारी भक्ति मुक्ति की खानी ॥ ४ ॥ ❀ ६४२ ❀  
 ❀ राग रामकली ❀ यह प्रसाद हों पाऊं, श्री जमुनाजी । तिहारे निकट रहों  
 निसिवासर राम कृष्ण गुन गाऊं ॥ १ ॥ मज्जन करों विमल जल पावन  
 चिंता कलह बहाऊं । तिहारी कृपा तें भानु की तनया हरि पद प्रीत बढाऊं  
 ॥२॥ बिनती करों यही वर मागों अधम संग बिसराऊं । 'परमानंद' प्रभु सब  
 सुखदाता मदन गोपाल लडाऊं ॥ ३ ॥ ❀ ९४३ ❀ राग विभास ❀ सरन  
 प्रतिपाल गोपाल-रति बर्द्धिनी । देति पति-पंथ प्रिय कंथ सन्मुख करत अतुल  
 करुनामयी नाथ अंग अर्द्धिनी ॥१॥ दीनजन जानि रसपुंज कुंजेश्वरी  
 रमति रस रास पिय संग निसि-सरदनी । भक्तिदायक सकल भवसिंधु तारिनी  
 करत विध्वंस जन अखिल अघ-मर्दिनी ॥ २ ॥ रहत नंदसूनु तट निकट  
 निसिदिन सदा गोप-गोपी रमत मध्य रस-कंदिनी । कृष्ण तन वरन गुन  
 धर्म श्री कृष्ण के कृष्ण लीलामयी कृष्ण सुख-कंदिनी ॥ ३ ॥ पद्मजा  
 पाय तुव संग ही मुररिपु सकल सामर्थ्य भई पाप की खंडिनी । कृपा रस  
 पूर वैकुंठ पद की सीढ़ी जगत विख्यात सिव सेस सिर मंडिनी ॥४॥ परचो  
 पद कमलतर और सब छाँडिकें देख दृग कर दया हास्य मुख मंदनी । उभय  
 कर जोरि 'कृष्णदास' बिनती करे करौ अब कृपा कलिंदगिरि-नंदिनी ॥५॥  
 ❀ ९४४ ❀ राग रामकली ❀ तुमसी और न कोई, श्रीयमुनाजी । करौ कृपा  
 मोहि दीन जानि के निज ब्रज वासो होई ॥ १ ॥ राखौ चरन सरन भानु-  
 तनया जनम आपदा खोई । यह संसार सबै विधि स्वारथ को सुत बंधु  
 सगो न कोई ॥२॥ प्रेम भजन में करत विघनता संत संतापै सोई । ताको संग  
 मोहि सुपने न दीजे मांगों नैन भरि रोई । गरल पान डारत अमृतमें विषया  
 रस सों सोई । 'रसिक' कहें हों दीन हूँ मांगों चरन समुद्र समोई ॥४॥ ❀ ९४५ ❀  
 ❀ राग रामकली ❀ श्रीजमुनाजी पतित पावनकरे । प्रथम ही जब दियो दरसन सकल



पातक हरे ॥ १ ॥ जल तरंगनि परसि कर पय पान सों मुख भरे । नाम  
सुमिरत गई दुरमति कृष्ण जस विस्तरे ॥ २ ॥ गोप-कन्यन कियो मज्जन  
लाल गिरिधर वरे । 'सूर' श्रीगोपाल सुमिरत सकल कारज सरे ॥३॥ ❀९४६❀  
❀ राग रामकली ❀ नेह कारन प्रथम श्रीजमुने आई । भक्त के चित्त की वृत्ति  
सब जानि कें ताही तें अति ही आतुर जु धाई ॥ १ ॥ जाके मन जैसी  
इच्छा हती ताही की तैसी ही साधजु पुजाई ॥१॥ 'नंददास' प्रभु तापर रीझि  
रहे जोई श्रीजमुनाजू कौ जसजु गाई ॥ २ ॥ ❀ ९४७ ❀ राग रामकली ❀  
कालिन्दी महा कलिमल हरनी । रवि-तनुजा जम-अनुजा स्यामा महासुन्दरी  
गोविंद-धरनी ॥ १ ॥ जै जमुना जै कृष्णवल्लभी पतितनि कों पावन भव  
तरनी । सरनागत कों देति अभयपद जननी करति जैसे सुत की करनी ॥२॥  
सीतलमंद सुगंध सुधानिधिधारा धरी वपु उर धरनी । 'परमानंद' प्रभु पतित  
पावनी जुग-जुग साखी निगम नित बरनी ॥ ३ ॥ ❀९४८❀ राग रामकली❀  
पिय संग रंग भरि करि कलोलें । सबनि कों सुख देन पिय संग करत सेन  
चित्त में तब परत चैन जबहि बोलें ॥ १ ॥ अति ही विख्यात सब बात  
इनके हाथ नाम लेत कृपा करें अतोलें । दरस करि परस करि ध्यान हियमें  
धरें सदा ब्रजनाथ इनि संग डोलें ॥ २ ॥ अतिहि सुख करन दुख सबन के  
हरन एही लीनो परन दैजु कौले । ऐसी श्रीजमुने जानि तुम करौ गुन गान  
'रसिक' प्रीतम पाओ नग अमोले ॥३॥ ❀९४९❀ राग रामकली❀ नैन भरि  
देखि अब भानु-तनया । केलि पियसों करे भ्रमर तबहि परे श्रमजल भरत  
आनन्दमनया ॥१॥ चलत टेढ़ी होही लेत पियकों मोही इन बिना रहत नहीं  
एक छिनया । 'रसिक' प्रीतम रास करत जमुना पास मानो निर्धनन की हैजु  
धनया ॥ २ ॥ ❀९५०❀ राग रामकली ❀ स्याम सुखधाम जहां नाम इनके  
निसिदिना प्रानपति आय हियमें बसे जोई गावे सुजस भाग्य तिनके ॥ १ ॥  
येहि जग में सार कहत बारं-बार सबनि के आधार धन निर्धनन के । लेत

जमुने नाम देत अभै पद दान 'रसिक' प्रीतम पिया बसजु इनके ॥ २ ॥

❀ ६५१ ❀ राग रामकली ❀ कहत श्रुतिसार निरधार करिके । इन बिना कौन ऐसी करै हे सखी हरत दुःख द्वंद सुखकंद बरखे ॥ १ ॥ ब्रह्मसंबंध जब होत या जीवकों तबहि इनकी भुजा वाम फरके । दौरि करि सोर करि जाय पियसों कहै अतिहि आनन्द मन में जु हरखे ॥ २ ॥ नाम निरमोल नग ना कोऊ ले सकै भक्त राखत हियें हार करके । 'रसिक' प्रीतमजू की होत जापर कृपा सोई श्री जमुना जी को रूप परखे ॥ ३ ॥ ❀ ९५२ ❀

❀ राग रामकली ❀ श्रीजमुना सी नाहि कोऊ और दाता । जो इनकी सरन जात है दौरि कै ताहि कों तिहिं छिनु करि सनाथा ॥ १ ॥ ये ही गुनगान रसखान रसना एक सहस्र रसना क्यों न दर्ई बिधाता । 'गोविंद' प्रभु तन मन धन वारनें सबहि को जीवन इनही के जु हाथा ॥ २ ॥ ❀ ६५३ ❀

❀ राग रामकली ❀ स्याम संग स्याम ठहै रही श्रीजमुने । सुरतश्रम बिन्दु तें सिंधु सी बही चली मानों आतुर अली रही न भवने ॥ १ ॥ कोटि कामहिं वारों रूप नैननि निहारों लाल गिरिधरन संग करन रमने । हरषि 'गोविंद' प्रभु निरखि इनकी ओर मानो नव दुलहनि आई गवने ॥ २ ॥ ❀ ९५४ ❀

❀ राग रामकली ❀ जमुना जस जगत में जोई गावे । ताके आधीन ठहै रहत हैं प्रानपति नैन और बैन में रस जू छावे ॥ १ ॥ वेद पुरान की बात यह अगम है प्रेम कौ भेद कोऊ न पावे । कहत 'गोविंद' श्रीजमुने की जा पर कृपा सोई श्री वल्लभकुल सरन आवे ॥ २ ॥ ❀ ६५५ ❀ राग रामकली ❀

चरन पंकज रेनु श्रीजमुनाजु देनी । कलिजुग जीव उद्धारन कारन काटत पाप अब धार पैनी ॥ १ ॥ प्रानपति प्रानसुत आये भक्तन हित सकल सुखन की तुम हो जु सौनी । 'गोविंद' प्रभु बिना रहत नहीं एक छिनु अतिहि आतुर चंचल जु नैनी ॥ २ ॥ ❀ ६५६ ❀ राग रामकली ❀ धाय के जाय जो श्रीजमुनाजू तीरे । ताकी महिमा अब कहाँ लगि बरनिये जाय परसत अंग

प्रेम नीरे॥१॥निसदिना केलि करत मनमोहन पिया संग भक्तन की हैजु भीरे ।  
 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल इन बिना नेक नहीं धरत धीरे॥२॥❀९५७❀  
 ❀ राग रामकली ❀ जा मुख तें श्री जमुने यह नाम आवे । तापर कृपा करें  
 श्रीवल्लभ प्रभु सोई श्रीजमुनाजी को भेद पावे ॥ १ ॥ तन मन धन सब  
 लाल गिरिधरन कों देकें चरन जब चित्त लावे । 'छीतस्वामी' गिरिधरन  
 श्रीविट्ठल नैनन प्रगट लीला दिखावें ॥ २ ॥ ❀ ९५८ ❀ राग रामकली ❀  
 धन्य श्री जमुने निधि देंहारी । करत गुनगान अज्ञान अघ दूरि करि जाय  
 मिलवत पिय-प्रान्प्यारी ॥ १ ॥ जिन कोऊ संदेह करो बात चित्त में धरो  
 पुष्टि-पथ अनुसरो सुख जु कारी । प्रेम के पुंज में रास-रस कुंज में ताही  
 राखत रस रंग भारी ॥ २ ॥ श्रीजमुने अरु प्रानपति प्रान अरु प्रानसुत  
 चहुँ जन जीव पर दया विचारी । 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल प्रीति  
 के लिये अब संग धारी ॥ ३ ॥ ❀ ९५९ ❀ राग रामकली ❀ गुन अपार  
 मुख एक कहाँ लौं कहिये । तजौ साधन भजौ नाम श्रीजमुनाजी कौ लाल  
 गिरिधरन वर तबहि पैये ॥ १ ॥ परम पुनीत प्रीति की रीति सब जानि के  
 दृढ करि चरन कमल जु ग्रहिये । 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल ऐसी  
 निधि छाँडि अब कहाँ जु जैये ॥ २ ॥ ❀ ९६० ❀ राग रामकली ❀ चित्त  
 में श्री जमुना निसिदिन जो राखो । भक्त के बस कृपा करत हैं सर्वदा  
 ऐसो श्री जमुना जू को है जु साखो ॥ १ ॥ जा मुख तें श्रीजमुने यह नाम  
 आवे संग कीजे अब जाय ताको । 'चतुर्भुजदास' अब कहत हैं सबनि सों  
 तातें । श्रीजमुने जमुने जु भाखो ॥ २ ॥ ❀ ९६१ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀  
 ❀ राग ब्रह्मा ❀ कौन की उपरनी ओढि आये, साँची कहो पिय मोसों ।  
 लटपटी पाग अटपटे पेचन बिनु गुनमाल हिये अधरन अंजन लाये ॥१॥  
 जानत जो कौन के दुराये चाहत हो छिपत नाही छिपाये । एती चतुराई  
 जिनि करो रे 'मोहन' मोसों कहो अब कौन तिया बिरमाये ॥३॥❀९६२❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ करत गोपाल जमुनाजल-क्रीड़ा । सुर  
नर असुर थकित भये देखत बिसरि गई तन जिय पीडा ॥ १ ॥ मृगमद  
तिलक कुंकुमा चंदन अगर कपूर बास बहु भुरकन । कुच युग मगन रसिक  
नंदनंदन कमल पानि परस्पर छिरकन ॥ २ ॥ निर्मल सरद कलाकृत सोभा  
बरखत स्वाँति बूँद जल मोती । 'परमानंद' कंचन मनि गोपी मरकत मनि  
गोविंद मुख जोती ॥ ३ ॥ ❀ ६६३ ❀ भोग दर्शन ❀ राग पूर्वी ❀ जमुना  
जल गिरिधर करत विहार । आसपास जुवती मिलि छिरकत हँसत कमल  
मुख चारु ॥ १ ॥ काहू की कंचुकी बंद टूटे काहू के टूटे हार ॥ काहू के बसन  
पलटि मनमोहन काहु अंग न सँभार ॥ २ ॥ काहू की खूभी काहू की नकबेसर  
काहू के विथुरे वार । 'सूरदास' प्रभु कहां लौं वरनों लीला अगम अपार  
॥ ३ ॥ ❀ ६६४ ❀ संध्या समय ❀ राग हमीर ❀ जमुना तट देखे नंदनंदन ।  
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल पीत बसन तन चर्चित चंदन ॥ १ ॥ लोचन  
तृपत भये दरसन तें उर की तपत बुझानी । प्रेम मगन तब भई ग्यालिनी तन  
की दसा भुलानी ॥ २ ॥ कमल नयन रहे तट ठाडे तहाँ सकुच मिलि नारी ।  
'सूरदास' प्रभु अंतरजामी ब्रत-पूरन बपुधारी ॥ ३ ॥ ❀ ६६५ ❀  
❀ शयन दर्शन ❀ राग कानरा ❀ जमुना जल विहरत हैं स्याम । राजत हैं  
दोऊ बाँह जोरि सखी संग स्यामास्याम ॥ २ ॥ कोऊ ठाडी जब नीर जंघ  
लों कोऊ कटि हिरद नींव । यह सुख बरनि सकै ऐसो को सुन्दरता की  
सींव ॥ २ ॥ स्याम अंग चंदन की आभा नागर केसर अंग । मलयज  
पंक कुमकुमा मिलि जल जमुना एक रंग ॥ ३ ॥ निसि श्रम भीन्यो तन  
जल निकसे जमुना भई पावन । 'सूर' प्रभु सुख ये मधि युवतीगन-जनके  
मन भावन ॥ ४ ॥ ❀ ९६६ ❀

उत्सव श्रीद्वारकेशलाल जी को ( आपाढ़ कृष्णा ६ )

❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ प्रगट भये तैलंग-कुल दीप ।

श्रीलङ्घमन भट अति आनंदित सुत-मुख निरखत आय समीप ॥१॥ मात  
 इलम्मा कूख उदय भयो ज्यों उपजत मुक्ता फल सीप । 'सगुनदास' मुख  
 कहत न आवे जस प्रसरयो नव खंड सप्तद्वीप ॥ २ ॥ ❀ ६६७ ❀  
 ❀ राजभोग आवे ❀ राग सारङ्ग ❀ गाइन सों रति गोकुल सों रति गोवर्द्धन सों  
 प्रीति निबाही । श्रीगोपाल चरन सेवा रति गोप सखा सब अमित अथाई  
 ॥१॥ गो बानी जो वेद की कहियत श्रीभागवत भलें अवगाही । 'छीतस्वामी'  
 गिरिधरन श्रीविठ्ठल नंदनंदन की सब परछाँई ॥२॥ ❀ ६६८ ❀ राजभोग दर्शन ❀  
 ❀ राग सारंग ❀ सुंदर तिवारो खसखाने को बनायो है तामें बैठे ब्रजराज  
 कुंवर मनकों हरत हैं । अति सुगंध जल बहुभांतिन के बेला भर लाय-लाय  
 खसीसब छिरक्यो करत हैं ॥१॥ सीतल सुगंध त्रिविध समीर बहे कोकिला  
 चकोर मोर डोलत फिरत हैं । 'जीवन' फुहारे छूटें मानो मनमथ लूटें भुकि  
 भुकि-भुकि धार होदनि भरत हैं ॥ २ ॥ ❀ ६६९ ❀ राग सारंग ❀ उसीर  
 भवन छायो सुमन तामें बैठे राधारवन एरी अंस भुज मेली । मृगमद घसि  
 अंग लगाय कपूर जल सों चुचाय सीतल लागे दोऊरी करत सुखकेली ॥१॥  
 गावे सारंग राग सरस स्वर कोकिला सुरत रस चले तें न चलाय रस सों  
 पुलकित द्रुमवेली । 'जगन्नाथ' हित विलास ग्रीष्म ऋतु सुख निवास ललिता-  
 दिक निरखि-निरखि पावे रसभेली ॥ ३ ॥ ❀ ६७० ❀ राग सारंग ❀ वृन्दावन  
 कुंजनि में मध्य खसखानो रच्यो सीतल बियार भुकि गोखन बहत है । सुगंधी  
 गुलाब-जल नाना बहु भांतिन के लै लाय धाय सखि सब छिरकत हैं ॥१॥  
 धार धुरवा छूटत तहाँ नीके दादुर मोर पिक सुक जु फिरत हैं । 'कृष्णदास'  
 फुहारें छूटे मानों मनमथ लूटे भुकि-भुकि-भुकि धारे हौदन भरत है ॥२॥ ❀ ६७१ ❀  
 ❀ फूलके सिंगार के भावके ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग सारंग ❀ देखौरी मोहन पनघट  
 पर ठाडो है नव निकुंज तैसीये सरद सुहाई रात । फूल कौ टिपारो बन्यो  
 फूलन कौ मल्लकाञ्च फूलन के हार उर फूले-फूले करत बात ॥१॥ फूलन

रथयात्रा को प्रथम दिन ( आषाढ सुदी १ )

❀ शृंगार ओसरा ❀ राग भैरव की रागमाला ❀ 'संग त्रियन बन में खेलत रविजा-तट मुरलीधर मध्य रास नृत्यकला गुननिधान । सप्त सुरन तीन ग्राम गाय बजाय लिये आरोही-अवरोही धरन मुरन सम प्रमान ॥ १ ॥ 'प्रथम राग भैरव गाइये मन मोह लिये चलतैं अचल भये अचल तैं चल भये । 'मालकोस की तान लै लै बान बेधत प्रान 'राग हिंडोल मन कलोल मीठे बोल लेत मन मोल ॥ २ ॥ 'मेघ ज्यों बरखत रस बुंदनि धुमडि बिरहिनि के मन हरे उमड । 'श्रीराग गावत नैन नचावत 'सोरठ गाइए हो सुंदरस्याम धुनि सुनि जागत तन मन काम ॥ ३ ॥ नवल 'केदारो गावत राग लेत सुलप गति सुघर सुजान । 'ब्रजाधीस' प्रभु सरद रेन सुख विलास मदनमोहन पर वारौं तन मन प्रान ॥ ४ ॥ ❀ ६७७ ❀ राग स्रहा ❀ मेरे तनकी तपत बुभाई । बिदा भई श्रीषम ऋतु आली अब बरखा ऋतु आई ॥ १ ॥ जब मेरे गृह आवेंगे गिरिधर तब हों नीके करूंगी बधाई । नाना विधि के साज सिंगारौं बिरहिनि पीर मिटाई ॥ २ ॥ सुभ मंगल आज कुंज भवन में पोहोप सुवास सुगंध छवाई । 'चतुर्भुज' प्रभु मेरे भवन में पधारो वासों तन विसराई ॥ ३ ॥ ❀ ९७८ ❀ राग सुवराई ❀ नई रितु आई माई परम सुहाई । नव सिंगार सजि चलौरी सवै मिलि जहाँ प्रीतम सुखदाई ॥ १ ॥ तन मन भेट करन रुचि बाढी बिरहिनि बिरह सताई । 'कुंभनदास' प्रभु मानगढ़ तोरत ब्रजजन सज्जत चढाई ॥ २ ॥ ❀ ६७६ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग सुवराई ❀ मुरली मन मोद बढावति । मीठे मधुरे बोल सुनावति याही तैं मोहि भावति ॥ १ ॥ राग रागिनी भेद दिखावत नेह नयो उपजावति । जैसी भाँवर मो मन भावति तैसी ताननि गावति ॥ २ ॥ पसु पंछी तहाँ दोरे आवत सुधि बुधि सब विसरावति । 'सूरदास' स्वामी

१. राग भैरवी ताल द्रुपद । राग भैरव ताल आढा चौताला । २. राग मालकोस ताल झूमरा । ४. राग हिंडोल ताल त्रिताल । ५. राग मेघ मलार ताल चर्चरी । ६. राग श्रीराग ताल सुरफाग । ७. राग 'सोरठ' ताल सवारी । ८. राग 'केदारा' ताल धीमो त्रिताल । ९. राग भैरवी ताल एक ताल ।

बिरमावति चटि सुरभिन टेरि सुनावति ॥३॥ ❀ ६८० ❀ राजभोग दर्शन ❀  
 ❀ राग सारंग ❀ सारंग गावति सारंग-नैनी पिय को मनहि रिभावत ।  
 आछी नीकी तान उपजावत सुधर मधुर सुर बीन बजावत ॥ १ ॥ लेत  
 गति में गति सरस चतुर प्रीतम-प्राणपिया के जिय अति भावत । 'नंददास'  
 प्रभु रीझि मगन भये लै सराहत तब प्यारी सचु पावत ॥ २ ॥ ❀ ६८१ ❀  
 ❀ संध्या समय ❀ रागकल्याण ❀ मदनमोहन पिय गावत राग कल्याण । बाजत  
 ताल मृदंग संख ध्वनि गावत सब्द रसाल ॥१ बीन बेनु मधुर सुर बाजत  
 उपजत तान तरंग । 'रसिक' प्रीतम पिय प्यारे की छवि ऊपर वारों कोटि  
 अनंग ॥ २ ॥ ❀ ६८२ ❀

### रथयात्रा (आषाढ़ सुदी २ )

❀ राजभोग सरे ❀ रागटोडी ❀ बैठी अटा मानो काम छटा सी सोच करति  
 दृग वारिनि बोरे । जाय कहो कोऊ मेरे भैयासों एते भूपति तैंने काहेकों  
 जोरे ॥ १॥ नंदनंदन व्रजचंद बिराजे तें देखे तेते कारे अरु गोरे । 'नंददास'  
 सब सजल कहावत हारके काम न आवत ओरे ॥ २ ॥ ❀ ६८३ ❀  
 ❀ राजभोग दर्शन ❀ झांझ पखावजझं ❀ राग टोडी ❀ देवी के द्वार तें निकसी देवी  
 दुलहिन हेरत पिया कौ मग अरबरात मन में । कहां रहे गोविंद गरुडध्वज  
 महाभुज नैननि में प्राण-प्राण तनक न तन में ॥ १ ॥ ऐसे हरि दृष्टि परे परम  
 करुना भरे तारन में चंद जैसे आये मानों छन मैं । 'नन्ददास' प्रभु प्यारी  
 दौरि आय रथ बैठी बिछुरी बिजुरी मानों आय मिली धन में ॥२॥ ❀ ९८४ ❀  
 ❀ पहिले दर्शन में ❀ राग मलार ❀ तुम देखो माई आज नैनभर हरिजू के रथ  
 की सोभा । प्रात समय मानों उदित भयो रवि निरखि नयन अति लोभा  
 ॥१॥ मनिमय जटित साज सरस सब ध्वजा चमर चित चोभा । मदनमोहन  
 पिय मध्य बिराजत मनसिज मन के छोभा ॥ २ ॥ चलत तुरंग चंचल भू

उपर कहा कहूं यह ओभा । आनन्दसिंधु मानों मकर क्रीडत मगन मुदित  
 चित चोभा ॥३॥ यह विध बनी बनी ब्रजबीथन महियां देत सकल आनंद ।  
 'गोविंद' प्रभु पिय सदा बसो जिय वृंदावन के चंद ॥ ४ ॥ ❀ ६८५ ❀  
 ❀ भोग आये ❀ राग मलार ❀ देखो देखो नैननि कौ सुख रथ बैठे हरि  
 आज । अग्रज अनुजा सहित स्यामघन सबै मनोरथ साज ॥ १ ॥ हाटक  
 कलसा ध्वजा पताका छत्र चँवर सिर ताज । तुरंग चाल अति चपल चलत  
 हैं देखि पवन मन लाज ॥ २ ॥ सुद अषाढ दोज सुभ दिन पुष्य नच्छत्र  
 संयोग । बनमाला पीतांबर राजत धूप दीप बहु भोग ॥ ३ ॥ गारी देत  
 सबै मन भावत कीरति अगम अपार । 'माधोदास' चरननि को सेवक  
 जगन्नाथ श्रुतिसार ॥ ४ ॥ ❀ ६८६ ❀ राग मलार ❀ रथचढि चलत जसोदा  
 अंगना । विविध सिंगार सकल अंग सोभित मोहत कोटि अनंगा ॥ १ ॥  
 बालक लीला भाव जनावत किलक हँसत नन्दनन्दन । गरें बिराजत हार  
 कुसुमन के चर्चित चोवा चंदन ॥२॥ अपने-अपने गृह पधरावत सब मिलि  
 ब्रजजुबतीजन । हर्षित अति अरपत सब सर्वसु वारत हैं तन मन धन ॥३॥  
 सब ब्रज दै सुख आवत घरकों करत आरति ततछन । 'रसिकदास' हरि की  
 यह लीला बसौ हमारे ही मन ॥ ४ ॥ ❀ ६८७ ❀ राग मल्हार ❀ ब्रज में  
 रथ चढि चलेरी गोपाल । संग लिये गोकुल के लरिका बोलत बचन रसाल  
 ॥१॥ सवन सुनत गृह-गृह तेंदौरी देखन कों ब्रजबाल । लेत फेरि करि हरि  
 की बलैयाँ वारत कंचन माल ॥ २ ॥ सामग्री लै आवत सीतल लेत हरख  
 नन्दलाल । बांट देत और ग्वालन कों फूले गावत ग्वाल ॥ ३ ॥ जय-जय  
 कार भयो त्रिभुवन में कुसुम बरखत तिहि काल । देखि-देखि उमगे ब्रजवासी  
 सबै देत करताल ॥ ४ ॥ यह विधि बन सिंहद्वार जब आवत माय तिलक  
 कर भाल । लै उछंग पधरावत घर में चलत मंदगति चाल ॥ ५ ॥ करि  
 नौछावरि अपने सुत की मुक्ताफल भरि थाल । यह लीला रस 'रसिक' दिवा-



निसि सुमिरन होत निहाल ॥६॥ ❀६८८❀ राग मलार ❀ जसोदा रथ देखन  
 कों आई । देखौरी मेरो लाल गिरेगो कहा करो मेरी माई ॥१॥ मेरो ढोटा  
 पालने सोवे उधरक-उधरक रोवे । अघासुर बकासुर मारे नैन निरंतर जोवे  
 ॥ २ ॥ देहरी उलंघत गिरघोरी मोहन सोई घात में जानी । 'परमानन्द' होत  
 तहाँ ठाडे कहत नन्द जू की रानी ॥३॥ ❀६८९❀ दूसरे दर्शन❀ राग मलार❀  
 रथ बैठे गिरिधारी, तुम देखो सखी । राजत परम मनोहर सब अँग संग  
 राधिका प्यारी ॥ १ ॥ मनिमानिक हीरा कुंदन खचि डांडी चार सँवारी ।  
 विधिकर विचित्र रच्यो जो विधाता अपने हाथ सँवारी ॥ २ ॥ गादी सुरंग  
 ताफता की सुंदर फरेवाद छवि न्यारी । छत्र अनुपम हाटक कलसा भूमक  
 लर मुक्तारी ॥ ३ ॥ चपल अश्व दै चलत हँसगति उपजत है छवि न्यारी ।  
 दिव्य डोर पचरंग पाट की कर गहि कुंज बिहारी ॥ ४ ॥ विहरत ब्रज-  
 बीथिनि वृंदावन गोपीजन मन ठारी । कुसुम अंजुली बरखत सुर मुनि  
 'परमानन्द' बलिहारी ॥ ५ ॥ ❀ ९६० ❀ भोग आये❀ राग मलार❀ तू मोहि  
 रथ लै बैठरी मैया । इतकी ओर बैठी हैं राधा उतकी ओर बल मैया  
 ॥ १ ॥ गोप सखा सब संग चलि हैं मेरे और गावेंगे गीत । मेरे रथ की  
 सोभा देखत सुख पावेंगे मीत ॥२॥ ब्रजजन भवन-भवन प्रति ठाडी देखनि कों  
 मेरी गाडी । आरती लैके उतारही मो पर व्है-व्है मारग आडी ॥३॥ सुनत  
 बचन आनन्द सिंधु हि मगन भई जसोदा माई । 'रसिक' मनोरथ पूरन  
 गोविंद बैकुंठ तजि ब्रज आई ॥ ४ ॥ ❀ ८६१ ❀ राग मलार ❀ रथ बैठे  
 मदन गोपाल अँग-अँग सोभा बरनी न जाई । मोर मुकुट बनमाल विराजत  
 पीतांबर और तिलक सुहाई ॥ १ ॥ गज मुक्ता की माल कंठ सोहै नंदलाल  
 मानों नीलगिरि सुरसरी धसि आई । श्रीवृंदावन भूमि चारु संग सोहै  
 राधा नारि मानों धन दामिनी की छवि छाई ॥ २ ॥ बोलें पिक मोर कीर  
 त्रिगुन बहै समीर पुष्प बरखा करें अमरापति आई । 'कुंभनदास' प्रभु

गिरिधरलाल की बानिक पर बलि बलि-बलि जाई ॥ ३ ॥ ❀ ९९२ ❀  
 ❀ राग मल्हार ❀ रथ चढि डोलूंगो, मैया मैं । घर-घर तें सब संग खेलनि  
 गोप सखन कों बोलूंगो ॥ १ ॥ मोहि जड़ाय देहु अति सुंदर सगरो साज  
 बनाय । करि सिंगार ता ऊपर मोकों राधा संग बैठाय ॥ २ ॥ घर-घर प्रति  
 हों जाऊँ खेलन संग लेहु ब्रजबाल । मेवा बहुत मँगाय मोहि दै फल अति  
 बडे रसाल ॥ ३ ॥ सुत के बचन सुनत नंदरानी फूली अंग न माय । सब विधि  
 सहित हरि रथ बैठारे देख ‘रसिक’ बलि जाय ॥ ४ ॥ ❀ ९९३ ❀  
 ❀ राग मल्हार ❀ रथ बैठे गोपाल, तुम देखो माई । हीरा मोति पाँति बनी  
 बिच-बिच राजत लाल ॥ १ ॥ बेरख फरहरात कलसान पर अरुन हरित  
 बहुरंग । अतिहि विचित्र रच्यो विस्वकर्मा सोभित चार तुरंग ॥ २ ॥ बालक  
 सब संग के करत कुलाहल भारी । किलकति हँसत दोऊरी मैया मुदित  
 होत गिरिधारी ॥ ३ ॥ खेलन चले सुभग वृंदावन सोभा बरनी न जाई ।  
 या छवि पर तन मन धन वारत ‘दास’ परम निधि पाई ॥ ४ ॥ ❀ ९९४ ❀  
 ❀ तीसरे दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ प्रगट प्रेम की फांस परी हरि डौलत दौरे दौरे ।  
 सकल देव देखत हैं ठाडे हरि हांकत हैं घोरे ॥ १ ॥ जिहिं कर संख चक्र  
 गदा सोभित और न आयुध थोरे । तिहिं कर चाम चमोठा लीने अरजुन  
 के रथ जोरे ॥ २ ॥ जेई मुख वेद निरंतर बोलत तेई मुख बोलत होरे ।  
 यह विधि स्वारथ करत जगद्गुरु जानत नाहीं हम कोरे ॥ ३ ॥ बलि-बलि  
 जाऊँ स्यामसुंदर की भक्त वत्सलता भोरे । ‘माधौदास’ सबै संकट तें दास आपने  
 छोरे ॥ ४ ॥ ❀ ९९५ ❀ भोग आये ❀ राग मलार ❀ रथ बैठे गिरिधारी, आज  
 माई । बाम भाग वृषभाननन्दिनी पहरे कसुंभी सारी ॥ १ ॥ तैसोई घन  
 उनयो चहुं दिसि तें गरजत हैं अति भारी । तैसेई दादुर मोर करत रट  
 तैसी भूमि हरियारी ॥ २ ॥ सीतल मंद बहत मलयानिल लागत हैं सुख  
 कारी । नन्दनन्दन की या छवि ऊपर ‘गोविंद’ जन बलिहारी ॥ ३ ॥ ९९६

❀ ९९६ ❀ राग मलार ❀ रथ बैठे नंदलाल, तुम देखो सखी । अति विचित्र  
 पहरे पट भीनो उर सोहै बनमाल ॥ १ ॥ सुंदर रथ मनिजटित मनोहर सुंदर  
 हैं सब साज । सुंदर तुरंग चलत धरनी पर रह्यो घोख सब गाज ॥ २ ॥  
 ताल पखावज बीन बांसुरी बाजत परम रसाल । 'गोविंद' प्रभु पिय पर  
 बरखत हैं विविध कुसुम ब्रजबाल ॥ ३ ॥ ❀ ९९७ ❀ राग मलार ❀ रथ  
 बैठे ब्रजनाथ, तुम देखो सखी । संकर्षण के संग बिराजत गोपसखा लै साथ  
 ॥ १ ॥ एक ओर राधा जुवती सब छत्र चमर ललिता के हाथ । विविध  
 भौंति श्रीगोवर्द्धनधारी 'कृष्णदास' कियो सनाथ ॥ २ ॥ ❀ ९९८ ❀ राग मलार ❀  
 रथ चढि जादौपति आवत, देखो माई । मोर मुकुट बनमाल पीतपट नटवर  
 भेष बनावत ॥ १ ॥ गरजत गगन दामिनी दमकत पीत ध्वजा फहरावत ।  
 संख चक्र बाजत वेद धुनि सुनि जलधर माथो नावत ॥ २ ॥ नाचत देवमुनी  
 सिव सनकादिक नारद तुंबरु गावत ॥ ३ ॥ सकल नैन लोचन-फल दीने  
 'जन परमानंद' पावत ॥ ४ ॥ ❀ ९९९ ❀ चोथे दर्शन ❀ राग मलार ❀ लाल  
 माई खरेई बिराजत आज । रत्न खचित रथ ऊपर बैठे नवल-नवल सब  
 साज ॥ १ ॥ सूथन लाल काछिनी सोभित उर बैजयंतीमाल । माथें मुकुट  
 ओढें पीतांबर अंबुज नयन बिसाल ॥ २ ॥ स्याम अंग आभूषण पहिरें  
 भलकत लोल कपोल । बारबार चितवत सबहि तन बोलत मीठे बोल ॥ ३ ॥  
 यह छवि निरखि-निरखि ब्रजसुंदरि लोचन भरि-भरि लैहो । फिरि-फिरि  
 भांकि-भांकि मुख देखौ रोम-रोम सुख पैहो ॥ ४ ॥ उतरि लाल मंदिर में  
 आये मुरली मधुर बजाय । निरखि निरखि फूलति नन्दरानी मुख चूमत  
 ढिंग आय ॥ ५ ॥ अति सोभित कर लिये आरती करत सिहाय-सिहाय ।  
 'श्रीबिट्ठल' गिरिधरनलाल पर वारत नाही अघाय ॥ ६ ॥ ❀ १००० ❀  
 ❀ राग मलार ❀ जय श्रीजगन्नाथ हरिदेवा । रथ बैठे प्रभु अधिक बिराजत  
 करें जगत सब सेवा ॥ १ ॥ सनक सनन्दन और ब्रह्मादिक इन्द्रादिक जुरि

आयें । अपनी-अपनी भेट सबै लै गगन विमाननि छाये ॥२॥ रत्न जटित  
 रथ नीकौ लागत चंचल अश्व लगाये । नर नारी आनन्द भये अति प्रमुदित  
 मंगल गाये ॥ ३ ॥ गारी देत दिवावत अपन पै यह विधि रथ हिंच लाये  
 'रामराय' गोवर्द्धनवासी नगर उडीसा आये ॥४॥ ❀ १००१ ❀ राग मलार ❀  
 वा पट पीत की फहरान । कर गहि चक्र चरन की धावनि नहिं बिसरत वह  
 बान ॥ १ ॥ रथतें ऊतरि अवनि आतुर व्है कचरज की लपटान । मानों  
 सिंह सैल तें उतरयो महामत्त गज जान ॥ २ ॥ धन्य गोपाल मेरो प्रन  
 राख्यो मेदि वेद की कान । सोई अब 'सूर' सहाय हमारे प्रगट भये हरि  
 आन ॥ ३ ॥ ❀ १००२ ❀ भोग के दर्शन ❀ तमूरास ❀ राग मलार ❀ आयो  
 आगम नरेस देस-देस में आनन्द भयो मनमथ अपनी सहाय कों बुलायो ।  
 मोरन की टेर सुनि कोकिला की कुलाहल तैसोई दादुर हिलमिलि स्वर  
 गायो ॥१॥ छूट्यो धन मत्त हाथी पवन महावत साथी अंकुस बंकुस दैदैं चपला  
 चलायो । दामिनी ध्वजा पताको फरहरात सोभा भारी गरजि-गरजि धौं-धौं  
 दमामा बजायो ॥ २ ॥ आगें-आगें धाय-धाय बादर बरखत आय ब्यारन  
 की बहुकन ठौर-ठौर छिरकायो । हरी हरी भूमि पर बूढ़न की सोभा बाढी  
 बरन बरन रंग बिछौना बिछायो ॥३॥ बांधे हैं बिरही चोर कीनी है जतन  
 रोर संयोगी साधन सों मिलि अति सचुपायो । 'नन्ददास' प्रभु नंदनंदन को  
 आज्ञाकारी अति सुखकारी ब्रजवासिन मन भायो ॥ ४ ॥ ❀ १००२ ❀  
 ❀ संध्या समय ❀ राग मलार ❀ गाय सब गोवर्द्धनतें आई । बछरा चरावत  
 श्रीनन्दनन्दन बेनु बजाय बुलाई ॥ १ ॥ घेरी न घिरत गोप-बालकपें अति  
 आतुर ही धाई । बाढी प्रीति मदनमोहन सों दूध की नदी बहाई ॥ २ ॥  
 निरखि स्वरूप ब्रजराजकुंवर कौ नयनन निरखि निकाई । 'कुंभनदास' प्रभु के  
 सन्मुख ठाडी भई मानों चित्र लिखाई ॥ ३ ॥ ❀ १००४ ❀ शयन दर्शन ❀  
 ❀ राग मलार ❀ सुंदर बदन सदन-सोभा कौ निरखि नयन मन

थाक्यो । हों ठाडी बीथिनि हूँ निकस्यो उभकि भरोकन भांक्यो  
॥ १ ॥ मोहन एक चतुराई कीनी गेंद उछारि गगन मिस ताक्यो । वारौरी  
लाज बैरिन भई री मोकों मैं गँमार मुख ढांक्यो ॥ २ ॥ चितवन में कछु  
करि गयो मोतन मन न रहत क्यों राख्यो । 'सूरदास' प्रभु सर्वस्व लै गये  
हँसत हँसत रथ हाँक्यो ॥३॥ ❀ १००५ ❀ आषाढ सुदी ३ ( रथयात्रा के दूसरे दिन)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ तुम देखौ माई रथ बैठे जदुराय ।  
प्रात समै आवत अलसाने नैननि भुकि भुकि जाँय ॥ १ संख चक्र गदा  
पद्म विराजत सुंदरस्याम स्वरूप । स्वेत पिछोरा कुल्हे रही लसि मुक्तामाल  
अनूप ॥ २ ॥ सीसफूल भाल तिलक विराजत रवि ससि सम कनफूल ।  
आरति वारत प्रानप्यारे पर 'गिरिधर' जमुना-कूल ॥ ३ ॥ ❀ १००६ ❀  
❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ पावस ऋतु आगम जानि आये निज  
कुंजसदन नंदनंदन ब्रजनरेस चलत चाल गति गयंद । कटि सोहे आडबंद  
सीस कुल्हे पहिरें स्वेत मोरपच्छ श्रवननि कुंडल भलकत हैं अति अमंद  
॥ १ ॥ द्रुम बेलि हरित भूमि सोभित हैं इन्द्रवधु घन गरजत बूँद परत  
बहोत पवन मंद । कोकिल पिक करत सोर नाचत मन मुदित मोर  
'कृष्णदास' नीके बने राधा अरु ब्रजचंद ॥ २ ॥ ❀ १००७ ❀

### कसूँभी छठ ( आषाढ सुदी ६ )

❀ मंगला दर्शन ❀ राग स्रहा ❀ ठाडे रहो अंगना हो पिय जौलों देह  
नख-सिख लौं भीजे । न्हाय क्यों न लेहु गगन-पानी डार देहो वसन और  
पहरो तब गृह-देहरी पाँव दीजे ॥१॥ रैन के चिह्न पिय प्रगट देखियत ताहि  
पाँछ सौँह कीजे । 'धौंधी' के प्रभु तुम बहुनायक देह सुधारि मोहि बीजे  
॥ २ ॥ ❀ १००८ ❀ शृंगार ओसरा ❀ राग मल्हार ❀ षष्ठी-पंडगू फल प्राप्त  
यज्ञपुरुष पुष्टि-प्रवाह उदय किरन लछमन भट ग्रीष्म ऋतु अंत ।  
सुद अषाढ बरखा ऋतु आगम अवनी समाज गोपीजन मंगल गायो

प्रथम समागम राधिका-कंत ॥१॥ नर-नारिन मन आनंद देस-देस में आनंद  
 बन-बेली अति आनंद आदि जीव जंत । 'कृष्णदास' सुजस गायो आनंद  
 ऊर उपजायो श्रुति पुरान गायो सुनत सुख पायो मुनि संत ॥२॥ ❀१००६❀  
 ❀ राग मल्हार ❀ सुद अषाढ़ षष्ठि-पंडगू पुष्टिपंथ धर्मवीर लछमनभट  
 उदित अंग आनंद उपजायो । धरनीधर भूमिमंडल श्रुति पुरान सास्त्र  
 अर्थ आगम-आचार्य जानि गोपीजन मंगल गायो ॥ १ ॥ ग्रीष्म तपत  
 गयो बरखा ऋतु आगम भयो उबटि अंग पिय प्यारी जगत जनायो ।  
 करि सिंगार सुरंग बसन मुक्तामनि भूषन तन प्रथम समागम अबनि कुंज  
 सों मनायो ॥२॥ कोकिल पिक बंदीजन द्विज दादुर प्रगट रूप दाता बिंब  
 विकास रूप घन सम भर लायो । 'नंददास' पूरहि आस बन बेली हरित  
 भई भरिहैं सरोवर समीर नदी नीर सुहायो ॥३॥ ❀१०१०❀ राग मल्हार ❀  
 कारी घटा सुखकारी, उमड़ि धुमड़ि आई । पिय सिर पाग कसूँभी सोभित  
 प्रिया के कसूँभी सारी ॥ १ ॥ भुज अंसनि धरि विहरत डोलत नवल भूमि  
 हरियारी । 'श्रीविट्ठल गिरिधर' दंपति छवि इन्दु-वधू लखि हारी ॥ २ ॥  
 ❀१०११❀ राग मल्हार ❀ लाल माई बांधे कसूँभी पाग । कसूँभी छड़ी हाथ  
 में लिये भीजि रहे अनुराग ॥१॥ कसूँभोई केटि बन्यो है पिछोरा कसूँ-  
 भल है उपरैना । कसूँभी बात कहत राधा सों कसूँभे बने दोड़ नैना ॥२॥  
 हरित भूमि यमुना तट ठाड़े गावत राग मल्हार । 'श्री विट्ठल' गिरिधरन  
 छबीलो स्याम घटा उनहार ॥३॥ ❀१०१२❀ शृंगार दर्शन ❀ राग मल्हार ❀  
 नीके आज लागत लाल सुहाये । श्री वृषभाननंदिनी रचि-पचि आभूषन  
 पहिराये ॥ १ ॥ पाग कसूँभी सीस बिगजत मधि लटकन लटकाये ।  
 हीरा लाल रतन निरमोलक रचि-पचि पेच बनाये ॥ २ ॥ अलक तिलक  
 लखि आनन की छवि कोटि चंद लजाये । सिंघद्वार ठाड़े पिय मोहन  
 निरखत मो मन भाये ॥ ३ ॥ बलि-बलि जाऊँ मुखारविंद की दरसन

ताप नसाये । 'श्रीविठ्ठल' गिरिधरन छबीलो निरखि नैन सुख पाये ॥४॥  
 ❀ १०१३ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ ब्रज पर नीकी आज घटा हो ।  
 नैन्ही-नैन्ही बूँद सुहावनी लागें चमकत बीजु छटा हो ॥ १ ॥ गरजत गगन  
 मृदंग बजावत नाचत मोर नटा हो । तैसोई सुर गावत चातकपिक प्रगट्यो  
 है मदन भटा हो ॥ २ ॥ सब मिलि भेट देत नंदलाल हिं बैठे ऊँची अटा  
 हो । 'कुंभनदास' गिरिधरनलाल सिर कुसुंभी पीत पटा हो ॥३॥ ❀ १०१४ ❀  
 ❀ भोग के दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ देखौ सखि ठाढे नंदकिसोर । गोवर्द्धन  
 पर्वत के ऊपर तैसेई नाचत मोर ॥ १ ॥ लाल पाग सिर सुभग लाल के  
 लाल लकुटिया हाथ । लाल रतन सिरपेच बनी छवि मोतिन की लर  
 माथ ॥२॥ लालन के आभूषन अंग-अंग पीत बसन फहरात । 'श्रीविठ्ठल'  
 गिरिधरन छबीले स्याम सलोने गात ॥ ३ ॥ ❀ १०१५ ❀ संघ्या समय ❀  
 ❀ राग मल्हार ❀ भवन मेरो कैसो लागत नीको । जबहिं लाल आवत  
 यह मंदिर खरौ भांवतो जीको ॥ १ ॥ कसुंभी पाग खुभि रही नीकी  
 विकसित नंदकिसोर । तैसीय स्याम घटा जुरि आई अरु बोलत बन मोर ॥  
 ॥ २ ॥ ता दिन विधिना भली बनाई अकेली ही घर मांझ । 'श्रीविठ्ठल'  
 गिरिधरनलाल सों बातन ही भई सांझ ॥३॥ ❀ १०१६ ❀ शयन दर्शन ❀  
 ❀ राग मल्हार ❀ कुंज महल के आँगन मध्य पिय-प्यारी बाँह जोटी फिरत  
 रंग सों रगमगे । अरुन बसन तन मोतिनि की माला गरें चिहुँटे सरीर  
 चीर नीर सों सगवगे ॥ १ ॥ छूटे बार भीजन लागे ललित कपोलनि सों  
 कुंडल किरन नग भूषन भगमगे । 'नागरीदास' घन बरखत पानी  
 तामें रूप के जहाज मानों डोलत डगमगे ॥ २ ॥ ❀ १०१७ ❀  
 ❀ मान पोढवे में ❀ राग मल्हार ❀ रंग महल ठाढे पिय पाछें प्यारी दोऊन की  
 छवि रही मो जिय अटकि अटकी । इन के कसुंभी सारी लहंगा री  
 सोहे भारी उनके सिर लागि पाग रही लटकि-लटकी ॥ कोकिला करत

गान मधुर सुर लेत तान वारत ब्रजबधूप्रान ब्रीडा पटक-पटकी । 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी सरवसुलै चारुयो गटक गटकी ॥२॥ ❀ १०१८ ❀  
 ❀ राग मल्हार ❀ पहिरें कसुंभी सारी बैठे पिय संग प्यारी भूमि हरियारी तामे इन्द्रवधू सोहै । पियके निकट ठाडी कंचुकी अंग गाढी बाल मृग लोचनी देखत मन मोहे ॥ १ ॥ तैसीय पावस ऋतु तैसेई उनए धन तैसीय बानिक बनी उपमा कों को है । 'कुंभनदास' स्वामिनी विचित्र राधे भामिनी गिरिधर पिय एकटक मुख जोहैं ॥ २ ॥ १०१६ ❀

### देवशायनी ( आषाढ सुदी ११ )

❀ शृंगार ओसरा ❀ राग मल्हार ❀ रूप-सरोवर साजे, देखो माई । ब्रज बनिता वर बारी-वृंद में श्री ब्रजराज बिराजे ॥ १ ॥ लोचन जलज मधुप अलकावलि कुंडल मीन सलोले । कुच चक्रवाक विलोकि बदन विधु बिछुर रहे बिन बोले ॥ २ ॥ मुक्तामाल बगपाँति मनोहर करत कुलाहल कूल । सारस हंस चकोर मोर सुक वैजयंति समतूल ॥३॥ कनक कपिस निचोल विविध रंग विरह व्यथा विसरावे । 'सूरदास' आनंद-सिंधु की सोभा कहत न आवे ॥ ४ ॥ ❀ १०२० ❀ राग मल्हार ❀ प्रसन्न भये हो लाल दियो दरसन जैसी हों तरसत तैसी सोतैं लागी तरसन । अंग लाग्यो सरसन मन लाग्यो परसन पाव लाग्यो तरसन तू धन नीको लाग्यो बरसन ॥ १ ॥ ना मैं जानों अरचन ना मैं जानों चरचन अपने प्रीतम की सेवा करी परसन । 'तानसेन' के पिय ऐसे मिल बैठे जैसे संभू कों गौरी मिलि हुलसन ॥ २ ॥ ❀ १०२१ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ सजल जलद बादल दल देखियत भलेई लाल आये मेरे सदन । तैसीय कोयल कारी बन धन ठौरा ठारी तैसीय दामिनी लगी गगन रमन ॥ १ ॥ भले ही पिया जु आये चारु लोचन मिले हैं सोतिन के स्तन पर लगे हैं भरावरि । 'स्यामसाहि' के प्रभु तुम बहुनायक बारि फेरि डारों पिय आज की आवनि पर ॥२॥ ❀ १०२२ ❀



❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ आई जू स्याम जलद घटा, ओल्हर चहुँ-  
दिसि तें घनघोर । दंपति अति रस रंग भरे बांह जोटी फिरत कुसुम  
बीनत कालिंदी तटा ॥ १ ॥ न्हेंनी न्हेंनी बूंदनि बरखन लाग्यो तेसीय  
चमकत बीजु छटा । 'गोविंद' प्रभु पिय प्यारी उठि चलि ओढें लाल पट  
दौरि लियो जाय बंसीबटा ॥ २ ॥ ❀ १०२३ ❀ भोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀  
स्याम घटा जुरि आई, ब्रज पर । तेसीय दामिनी चहुँदिसि कोंधत लेत तरंग  
सुहाई ॥ १ ॥ सघन छाँह कोकिला कूजत चलत पवन सुखदाई । गुंजत  
अलिगन सघन कुंज में सौरभ की अधिकाई ॥ १ ॥ विकसित स्वेत पांति  
वगलनि की जलधर सीतलताई । नव नागर गिरिधरन छबीलौ 'कृष्णदास'  
बलिजाई ॥ ३ ॥ ❀ १०२४ ❀ शयन दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ राधे रूप की  
घटा पोषत चातक मदन गोपालें । दामिनी वारौं दसननि ऊपर छुटी  
अलकन पर धुरवा वारौं बग पंगति मुक्ता मालें ॥ १ ॥ इंद्र धनुस पचरंग  
सारी पर वारि डारौं और जावक पर बूढन लाल । 'जन भगवान' मदन  
मोहन पर तन मन पिक वारौं सुनि-सुनि बचन रसाल ॥ २ ॥ ❀ १०२५ ❀  
❀ मान पोढवे में ❀ राग मल्हार ❀ कौन करै पटतर, तेरी गुन रूप रासि हो राधा  
प्यारी । श्रिया प्रभृति जेती जग जुवती वारि फेरि डारौं तेरे रूप पर ॥ १ ॥  
राग मल्हार अलापति सकल कला गुन प्रवीन हेरी तू सुधर । 'गोविंद'  
प्रभु कों तू न्यायन बस करि कहत भलें जु भलें ब्रजराजकुँवर ॥ २ ॥  
❀ १०२६ ❀ राग मल्हार ❀ सघन घटा घनघोर न्हेंनी-न्हेंनी बूंदनि हो  
पिय बरसे । चहुँदिसि तें गरजत मंद-मंद तेसीय कनक चित्रसारी तामें पौढे  
पिय प्यारी तेसीय दामिनी अति हरसे ॥ १ ॥ तैसेई बोलत मोर कोकिला  
करत रोर उठत मन कलोल दंपति हिय हुलसे । 'गोविंद' प्रभु सुधर  
दोऊ गावत केदारो राग तान अब हीं सरसे ॥ ३ ॥ ❀ १०२७ ❀

आषाढ़ी पून्यो ( आषाढ़ सुदी १५ )

❀मंगलादर्शन❀राग मलार❀ हों जगाई माई बोलि-बोलि इन मोरा । बरखत मेह  
 आँधियारी चौमासे की कैसे मिलों नन्दकिसोरा ॥१॥ सेज अकेली और दामिनी  
 कोंधति घन गरजत चहुं ओरा । 'कुंभनदास' प्रभु गिरिधर मोही मेरो  
 मन नहिं मो कोरा ॥ २ ॥ ❀ १०२८ ❀ शृङ्गार ओसरा ❀ राग मलार❀ एरी  
 माई घन मृदंग रस भेद सों बाजत नाचत, चपला चंचल गति । कोकिला  
 अलापत पपैया उरपि लेत मोर सुघट सुर साजत ॥१॥ दादुर तार धार ध्वनि  
 सुनियत रुनभुन रुनभुन पर बाजत । 'तानसेन' के प्रभु तुम बहुनायक कुंज महल  
 दोऊ राजत ॥ २ ॥ ❀ १०२९ ❀ राग गौड मलार ❀ बाजत मृदंग उघटित  
 सुधंग तक्कमं तक्कमं धुमकिटता धुमकिट धुमकिट धिलांग तक । द्रगदां-द्रगदां  
 धिन्न दाना जगन रटत भौँत भौँ भौँत ॥१॥ गत बादर गरज घन दामिनि  
 लरज अलाप लेत खरज होत अनुपम तरज । 'कृष्णदास' प्रभु पास पूरन  
 भई आस नृत्य करत सों विलास थोंदिग थोंदिग तक थोंदिग-थोंदिग तक  
 थुंग तक थुंग तक ॥ २ ॥ १०३० ॥ शृङ्गार दर्शन ❀ राग मलार ❀ नाचत  
 लाल त्रिभंगी, रस भरे तैसेई नाचत मोर । जैसी जैसी धुनि मुरली बाजत  
 तैसे तैसे घन गरजत मुरज बजावत री मानो मधवा मृदंगी ॥ १ ॥ सस  
 सुरनि लै अलाप गावत तान बंधान मूर्च्छना सुरदेत मधुप उमंगी । 'सूरदास'  
 मदनमोहन जानेजु मुकुट मनी उघटत सस भेद तान तरंगी ॥२॥ ❀ १०३१ ❀  
 ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मलार ❀ वृंदावन भुवि कुँदादिकयुत मंदानिल रुचिरे  
 ॥ ध्रु० ॥ पुलिनोदित नवनलिनोदर मिलदलिनोदितरसगाने । कर्णादिक  
 पुट चरणांबुज ध्वनि चारु हरिणाक्षि वलिते ॥ १ ॥ निजरसमयताप्रकटन  
 परितः प्रकटित रास बिहारे । गिरिधारण रतिहारण कारण मम रतिरस्तु  
 सदारे ॥ २ ॥ ❀ १०३२ ❀ राग मलार ❀ नागर नंदलाल कुँवर मोरनि संग  
 नाचे । कटितट पट किंकिनी कल नूपुर रुनभुन करे नृत्य करत चपल

चरन पात घात सांचे ॥ १ ॥ उदित मुदित सघन गगन घोरत घन दै दै  
 भेद कोकिला कलगान करत पंचमस्वर बांचे । 'छीतस्वामी' गोवर्द्धननाथ  
 साथ विहरत वर विलास वृंदावन प्रेमवास याचें ॥ २ ॥ ❀ १०३३ ❀  
 ❀ भोग के दर्शन ❀ राग मलार ❀ इनि मोरनि की भांति देख नाचे गोपाला ।  
 मिलवत गति भेद नीके मोहन नट-साला ॥ १ ॥ गरजत घन मंद मंद  
 दामिनी दरसावे । रमक भ्रमक बूंद परे राग मल्हार गावे ॥ २ ॥ चातक पिक  
 सघन कुंज बारबार कूजे । वृन्दावन कुसुमलता चरनकमल पूजे ॥ ३ ॥ सुर  
 नर मुनि कामधेनु कौतुक सब आवे । वारि फेरि भक्ति उचित 'परमानंद'  
 पावे ॥ ४ ॥ ❀ १०३४ ❀ संध्या समय ❀ राग मलार ❀ नाचत मोरनि संग  
 स्याम मुदित स्यामाहि रिझावत । तैसोई कोकिला अलापत पपैया सब्द देत  
 तैसै मेघ गरज मृदंग बजावत ॥ १ ॥ तैसोई वृंदावन तैसी है हरित  
 भूमि तैसी ब्रजबधू हिलमिलि स्वर गावत । 'विचित्र बिहारी' जूकी या छबि  
 ऊपर तन मन धन सब वारत ॥ २ ॥ ❀ १०३५ ❀ शयन दर्शन ❀ राग मलार ❀  
 माईरी स्यामघन तन दामिनी दमकत पीतांबर फरहरे । मुक्तामाल बगजाल  
 कहि न परत छबि विसाल मानिनी की अर हरे ॥ १ ॥ मोर मुकुट इन्द्र-धनुस  
 सो सुभग सोहत मोहत मानिनी द्युति थरहरे । 'कृष्णजीवन' प्रभु पुरंदर  
 की सोभानिधान मुरलिका की घोर घरहरे ॥ २ ॥ ❀ १०३६ ❀ ❀ मान ❀  
 ❀ राग मल्हार ❀ प्यारी के गावत कोकिला मुख मूंदि रहे पिय के गावत  
 खग नैना मूंदि रहे सब । नागरी के रस गिरिधरन रसिकवर मुरली  
 मल्हार राग अलाप्यो मधुरे जब ॥ १ ॥ दंपति तान सुनत ललितादिक  
 वारति है तनमन फेरत हैं अंचल तब । 'चतुर्भुज' प्रभु को निरखि सुख  
 दंपति कहत कहांधों कीजे रहिरी भवन अब ॥ २ ॥ ❀ १०३७ ❀

**हिंडोरा** (श्रावण वदी १)

❀ हिंडोरा बिराजे वा दिन ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग मलार ❀ जहाँ तहाँ बोलत

मोर सुहाये । श्रावन रमन भवन वृंदावन घोर घोर घन आये ॥१॥  
 नेंन्ही नेंन्ही बूंदन बरखन लाग्यौ ब्रज मंडल पे छाये । 'नंददास' प्रभु संग  
 सखा लिये कुंजन मुरली बजाये ॥२॥ ❀ १०३८ ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀  
 ❀ राग बिलावल ❀ गोपाल माई फेरत हैं चकडोरि । लरिका पांच-सात  
 संग लीने निपट सांकरोखोरि ॥१॥ चढ़ि घर हौं री भरोखा चितयो सखी  
 लियो मन चोरि । बाँए हाथ बलैया लीनी अपनो अंचल छोरि ॥२॥ चारों  
 नयन मिले जब सन्मुख रसिक हँसे मुख मोरि । 'परमानंददास' रति नागर  
 चितै लई रति जोरि ॥३॥ ❀ १०३९ ❀ राग मलार ❀ लाल सिर फबी  
 कहुंभी पाग । वाही रंग रगमगी सारी बनाय के अनुराग ॥१॥ अचरज  
 एक लगत है प्यारी कही समुक्त बेंन । तुम प्रसन्न उत मान वे ते चँवर  
 दुरत छवि रैन ॥२॥ कोमल यह सुभाव तियन को सोचत माँझ समात ।  
 यह सुभाव इनको सावन ये अलट-पलट को जात ॥ ३॥ सघन घटा वर  
 बरस रही रस प्रगट्यो स्याम अमोल । 'द्वारिकेस' प्रभु कमल-रसके भूले  
 आज हिंडोल ॥४॥ ❀ १०४० ❀ ❀ संध्या आरती भोतर होय तब नित्य हिंडोरा  
 विजय तक संध्या में ❀ राग गौरी ❀ लटकत चलत जुवती-सुखदानी । संध्या  
 समै सखा मंडल में सोभित तन गौरज लपटानी ॥१॥ मोर मुकुट गुंजा  
 पियरो पट मुख मुरली गुंजत मृदुबानी । 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधारी आये  
 बन तैं लै आरती वारति नंदरानी ॥२॥ ❀ १०४१ ❀ हिंडोरा में भोग आये पे❀  
 ❀ राग धनाश्री ❀ साखी—रोप्यौ हिंडोरा नंदगृह महूरत सुभ घरी देखि ।  
 विश्वकर्मा रचि पचि गढ्यो सुहाटक रत्न विसेखि ॥ १ ॥ चाल—हिंडोरना  
 हो मनिमय भूमि सुवास । हिंडोरना हो विश्वकर्मा सूत्रधार । हिंडोरना हो  
 कंचन खंभ सुठार ॥ छंद—कंचन खंभ सुठार दांडी साल भमरा फबि रहे ।  
 हीरा पिरोजा कनक मनिमय जोति अति जगमग रहे ॥ चित्र फटक  
 प्रकास चहुँ दिसि कहा कहाँ निरमोलना । कहै 'कृष्णदास' विलास

निसिदिन नंदभवन हिंडोरना ॥ १ ॥ साखी—सोलह सहस्र ब्रजसुंदरी  
 निरखति स्याम सुभाय । अति आनंदे हुलसि के जुवजन हिलमिल गाय ॥  
 चाल—हिंडोरना हो जुवजन हिलमिल गाय । हिंडोरना हो आनंद उर न  
 समाय ॥ हिंडोरना हो निरखत नयन निहार । हिंडोरना हो सोलह सहस्र  
 ब्रजनार ॥ छंद—सोलह सहस्र सब जुरि के आई फिरि न उलटि भवन  
 गई । नव-नेह नयन-कुरंग राची अच्युत तनमनमय भई ॥ पीत लहँगा  
 लाल चूनरी स्याम कंचुकी बांहि । कहै 'कृष्णदास' विलास निसिदिन जुव-  
 जन हिलमिल गाँहि ॥ २ ॥ साखी—रुनक भुनक नूपुर बजें किंकिनी कनित  
 रसाल । परम चतुर बनवारी हैं भुलवत सुंदरि नारि ॥ चाल—हिंडोरना  
 हो भुलवत सुंदर नारि । हिंडोरना हो परम चतुर बनवारि ॥ हिंडोरना हो  
 रमकन भ्रमक विसाल । हिंडोरना हो किंकिनी कनित रसाल ॥ छंद—कनित  
 किंकिनी रुनत नूपुर जटित तरौना सोहहीं । उर उड़त अंचल मदन बेरख देखि  
 गिरिधर मोहहीं ॥ खसित फूलजो सिथिल बेंनी गुप्त प्रगट विहार । कहै 'कृष्ण-  
 दास' विलास निसिदिन भुलवत सुंदर नारि ॥ ३ ॥ साखी—गावत सुघर रस भेद  
 सों तान-मान बंधान । रीझि देति वृषभानुजा हरिगुन सकल निधान ॥ चाल—  
 हिंडोरना हो हरिगुन सकल निधान । हिंडोरना हो श्रोराधाजू परम सुजान ॥  
 हिंडोरना हो गावत सुघर समाज । हिंडोरना हो मुरली मधुर धुनि बाज ॥  
 छंद—ताल मुरली बीन बाजे लालगिरिधर गावहीं । हरषि सुरपति कुसुम  
 बरषे नभ-निसान बजावहीं ॥ हरषि के कर देत तारी अति प्रकासित गान ।  
 कहैं 'कृष्णदास' विलास निसिदिन हरिगुन सकल निधान ॥ ४ ॥ साखी—  
 सहज गोपाल नट भेष ही सब ब्रज देखनि आई । जो सुख गोकुल में लहे  
 सो सुख बकुंठ नाही ॥ हिंडोरना हो यह सुख गोकुल मांही ।  
 हिंडोरना हो यह सुख वैकुंठ नाही ॥ हिंडोरना हो सहज गोप नट भेष ।  
 हिंडोरना हो सबहि नयन भरि देख ॥ छंद—नैन निरखत बैन मीठे मैन

कोटिक वारहीं । भुज भरें सुंदरि हरें हरि मन कहत कछुअन आवहीं ॥  
 स्यामसुंदर भक्तवत्सल लालगिरिधर जहाँ हैं । कहै 'कृष्णदास' विलास  
 निसिदिन यह सुख गोकुल मां है ॥ साखी—श्री जमुनातट संकेत वट निसि-  
 दिन यह विलास । कुंज सदन गिरिवरधरन हृदय बसौ 'कृष्णदास' ॥  
 ❀१०४२❀ राग जैतश्री ❀ दंपतिभूलत सुरंग हिंडोरे । गौर स्याम तन अति  
 छबि राजत जानों घनदामिनी ऊनिहोरे ॥१॥ विद्रुम खंभ जटित नग पटुली  
 कनक दांडी सोभा देत चहुं ओरे । 'गोविंद' प्रभु कों देखि ललितादिक हरषि  
 हँसति सब नवल किसोरे ॥२॥ ❀१०४३❀ भोग सरे भीतर भूले तब ❀राग जैतश्री❀  
 माई भूले हैं कुँवरि गोपरायन की मध्य राधा सुंदर सुकुमारि ॥ ध्रुव० ॥  
 प्रथम ही ऋतु पायस आरंभ । श्रीवृषभान मँगाये खंभ ॥ काढि भवन तें  
 रतन अमोल । रचि-पचि रुचिर रच्यो है हिंडोल ॥ १ ॥ एक तें एक सरस  
 सुकुमारि । मानों रची विधि कुंकुमगारि ॥ जगमगात नव जोबन जोति ।  
 निरखि नयन चकचौंधी होति ॥ २ ॥ बरन-बरन चूनरी सुरंग । फवी लौने  
 सोने से अंग ॥ राजत मनि आभरन रमनीय । जुही गुही कवरी कमनीय ॥  
 ॥ ३ ॥ गावत सुघर सरस सुर गीत । दुलरावत मनमोहन मीत ॥ प्रेम  
 विवस भई सकत न गाय । उमग्यो है आनंद उर न समाय ॥ ४ ॥ दुरि  
 देखत गोकुल के राय । सोभा निरखत मन न अधाय ॥ मुदित  
 'गदाधर' नंदकिसोर । लोचन भये भरे के चोर ॥ ५ ॥ ❀१०४४❀  
 ❀ हिंडोरा दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ भूलनि आईं ब्रजनारि गिरिधरनलाल जू  
 के सुरंग हिंडोरना । सुभग कंचन तन पहिरें कसूँभी सारी गावत परस्पर  
 हँसि मृदु बोलना ॥ १ ॥ इत नंदलाल रसिकवर सुंदर उत वृषभानु-सुता  
 छबि सोहना । रमकत रंग रह्यो पिय प्यारी 'गोविंद' बलि बलि रतिपति  
 जोहना ॥ २ ॥ ❀१०४५❀ राग मल्हार ❀ माई तैसोई वृंदावन तैसीये  
 हरित भूमि तैसिये वीरवधू चलत सुहाई माई । तैसेई कोकिला कल कुहू

कुहू कूजत तैसेई नाचत मोर निरखत नयनां सुखदाई ॥ १ ॥ तैसी ही  
नवरंग नवरंग बनी जोरी तेसेई गावत राग मल्हार तान मन भाई ।  
'गोविंद' प्रभु सुरंग हिंडोरे भूलें फूलें आछे रंग भरे चहुँदिसि तें घटा  
जुरि आई ॥ २ ॥ ❀ १०४६ ❀ राग मल्हार ❀ रंग मच्यो सिंघद्वार हिंडोरे  
ऽव भूलना । गौर स्याम तन नील पीत पट घन दामिनी हेम विराजत  
निरखि निरखि ब्रजजन मन फूलना ॥ १ ॥ उर पर वनमाल सोहै इंद्र  
धनुष मानों उदित भयो मोतिनि हार बग पंगति समतूलना । बरखत नव  
रूप वारि घोख अवनि रत्न खचित 'गोविंद' प्रभु निरखि कोटि मदन  
भूलना ॥ २ ॥ ❀ १०४७ ❀ राग मल्हार ❀ भूलत सुरंग हिंडोरे राधा  
मोहन । बरन बरन चूनरी पहिरें ब्रजबधू चहुँओरें ॥ १ ॥ राग मल्हार  
अलापत सप्त सुरन तीन ग्राम जोरें । मदनमोहन जू की या छवि ऊपर  
'गोविंद' बलि तून तोरें ॥ २ ॥ ❀ १०४८ ❀ शयन दर्शन ❀ तमूराख ❀  
❀ राग ईमन ❀ सैन काम की लायो सो सावन आयो । चलि सखी भूलिये  
सुरत हिंडोरे कीजै स्याम मन भायो ॥ १ ॥ हाव भाव के खंभ मनोहर  
कच घन गगन सुहायो । काम-नृपति वृषभानुनंदिनी रसिकराय वर  
पायो ॥ २ ॥ ❀ १०४९ ❀

**दुहेरामंडान, उत्सव श्रीबालकृष्णलालजी को** ( श्रावण वदी १३ )

❀ मंगला दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ बोले माई गोवर्द्धन पर मुरवा । तैसीये  
स्याम घन मुरली बजाई तैसे ही उठे भुकि धुरवा ॥ १ ॥ बडी बडी बूंदनि  
बरखनि लाग्यो पवन चलत अति भुरवा । 'सूरदास' प्रभु तुम्हारे मिलनि  
कों निसि जागत भयो भूरवा ॥ २ ॥ ❀ १०५० ❀ राजभोग सरे ❀  
❀ राग सारंग ❀ प्रगटे श्री बालकृष्ण सुजान । भक्त मन आनंद भयो अति  
सुंदर रूप निधान ॥ १ ॥ श्रीविट्ठल के महा महोत्सव बाजत भेरि निसान ।  
बांधी वंदनवार तिहूँ मिलि करत जुवती जन गान ॥ २ ॥ श्रीविट्ठल तब

महा मुदित मन देत ही विप्रनि दान । आसीरवाद पढत द्विजवर बंदीजन  
करत बखान ॥ ३ ॥ बने विसाल दृग चंचल लोचन मनहु मदन के बान ।  
मृदुल सुभाव मनोहर मूरति श्रीवल्लभकुल के भान ॥ ४ ॥ रुक्मिणी माय  
परम सुखदायक निजजन जीवन प्रान । 'केसौदास' प्रभुके गुन गावत गावत  
वेद पुरान ॥ ५ ॥ ❀ १०५१ ❀ राग मारंग ❀ भयो श्री विट्ठल के मन मोद ।  
पूरन ब्रह्म श्रीबालकृष्ण प्रभु धाय लिये जब गोद ॥ बारंबार बिधु वदन  
विलोकत फूले अंग न समाय । बाल दसा की सहज माधुरी अचवत दृग  
न अघाय ॥ २ ॥ यह सुख देखें ही बनि आवैं जानो रसिक सुजान ।  
दोऊ ओर सत सोभा बाढी 'विष्णुदास' के प्रान ॥ ३ ॥ ❀ १०५२ ❀  
❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मन्हार ❀ सावन दूल्है आयो, देखो माई । सीस सेहरो  
सरस गज मुक्ता हीरा बहुत जरायो ॥ १ ॥ लाल पिछोरा सोहै सुंदर  
सोवत मदन जगायो । तैसीये वृषभाननंदनी ललिता मंगल गायो ॥ २ ॥  
दादुर मोर पपैया बोलत बदरा बराती आयो । 'सूरदास' प्रभु तिहारे दरस  
कों दामिनि दरस दिखायो ॥ ३ ॥ ❀ १०५३ ❀ राग मलार ❀ रंग महल  
रंग राग, तहाँ बैठे दुल्है लाल तू चलि चतुर रंगीली राधा । अति बिचित्र  
कियो साज तोसों रंग रहेगो आज तैसेई दादुर मोर पपैया फूले फूल द्रुम  
बाग ॥ १ ॥ नव सत अंग साजें पहिरे कसँभी सारी तापर रीके लाल बीच  
बीच सोंधे दाग । दूती के बचन सुनि उठि चली पिय पैं यह छवि निरखि  
गावे 'नंददास' बडभाग ॥ २ ॥ ❀ १०५४ ❀ संख्या समय ❀ चौकडा ❀  
हेम हिंडोरना माई ए हरि प्यारे के संग ॥ ध्रुव० ॥ कनक खंभ ये चार  
दांडी नग लगे हैं लाल । चुनी चित्र मयार मरुबे बन्यो है परम रसाल ॥  
॥ टेक ॥ भमरा पिरोजा पांति पटुली लगे हैं रतन विसाल । नव भूलें  
भूलै नागरी हो नवल श्री नंदजू कौ लाल ॥ १ ॥ सजल जलधर घूमरे  
धुरवा धसे हैं चहुँओर । चपला चहुँदिसि चमकहीं हो दादुरा घनघोरा ॥ टेक ॥



कोकिला अलि कूक कूजत रटत चातक मोर । पवन राग मलार रस बस  
कीने श्री नंदकिसौर ॥ २ ॥ हरित भूमि सुदेस बादर भरे हैं कमल सुरंग ।  
हंस सारस बतक बगुला लीने हैं बालक संग ॥ टेक ॥ चकवा चकई कहाँ  
लों तहाँ बने हैं विविध विहंग । सरस सरोवर निरखि के मानो लज्जित  
कोटि अनंग ॥ ३ ॥ सुभ जुवती भार जोबन चलत चाल मराल । चंद-  
बदनी लंक केहरि मृगनैन विसाल ॥ टेक ॥ सिंगार सोलहो साजिकें हो  
बनि चली ब्रजवाल । मनु हो कृष्ण-कुरंग के संग मुदित है मृगमाल ॥४॥  
चहुँओर चम्पो मोगरो मरुवो चमेली जाय । बेल बकुल गुलाब को जो  
मालती महेकाय ॥ टेक ॥ केतकी करन कुंदी रस रहे भँवर भुलाय । श्री  
जगन्नाथ विलास 'माधौ' रहे हैं रुचि पाय ॥ ५ ॥ ❀१०५५❀ चौकड़ा ❀  
रसिक हिंडोरना माई भूलत मदनगोपाल ॥ ध्रुव० ॥ हरि हिंडोरो ही रच्यो  
कुंजन जमुना कूल । तहाँ बेल चम्पो मोरियो केवरो अरु बहु फूल ॥  
निरखि सोभा थकि रह्यो मिटि गयो मन को सूल । तुव लाज खुभी चित्र  
विचित्र नयन दिये हैं दुकूल ॥ १ ॥ रत्न जटित के खंभ दोऊ लगे प्रवाल  
ही लाल । कंचन को मरुवा बन्यो पटुली जु परम रसाल ॥ तन कसंभी  
चीर पहिरे आई सब ब्रजवाल । अंग-अंग सजि नवसत भामिनी दियें  
तिलक सुभाल ॥ २ ॥ गोपी जू हरि संग भूलहिं आनंद सुख के बोल ।  
वक्र भ्रौंह लगायें वेसर मुखहि भरे तमोल ॥ स्यामसुंदर निकसि ठाडे अपने  
अपने टोल । गावत राग मल्हार दोऊ मिलि देत हिंडोल झकोल ॥३॥  
धन्य-धन्य गोपी सुफल जीवन करत हरि संग केलि । कृष्ण-कृष्ण कहि-  
कहि नाम बोलत देत हैं रंगरेलि ॥ चिरजियो सखी मदनमोहन फले जसोदा  
बेलि । 'परमानंद' नंदनंदन चरन निज चित्त मेलि ॥ ४ ॥ ❀ १०५६ ❀  
❀ हिंडोरा के दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ हिंडोरें ऽव भूलत हैं लाल दुलहा दुलहिनि,  
बिहारी बर ललना । गौर स्याम तन अति द्युति भाँति भाँति, ए बिहारी

वर ललना ॥ १ नीलांबर पीतांबर की छवि चलत धुजा फहरात, बिहारी  
 वर ललना । 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी ए बिहारी वर ललना ॥ २ ॥  
 ❀ १०५७ ❀ राग मल्हार ❀ ए दोऊ रीभे भीजे भूलत रस रंग हिंडोरे । ध्रु ।  
 नेह खंभ दांडी चतुरायो हाव भाव मरुवे बेलन चोंप पटली अनूप भाव  
 कटाच्छ रमक चित्त चोरे । रस उन्नत रस बरखत मंद गरज हँसनि किलक  
 दसनि चमक चपला हुलास पवन भकभोरें ॥ १ ॥ क्वनित वलय नूपुर मानों  
 विहंग बोलें । 'जगन्नाथ' प्रभु दंपति जात काम रस भोरें ॥ २ ॥ ❀ १०५८ ❀  
 ❀ राग मल्हार ❀ भूलत दुल्है दुलहिन संग लिये भुलावत हैं रंगीली  
 नारी । सो है सिर सेहरो नवल नयो नेहरो ठाठ जोरे बैठे दोऊ सोभा  
 लागत भारी ॥ १ ॥ केसरी धोवती उपरैना सो है केसर भीनी सारी । पिय  
 'बिहारीलाल' निरखि सुख दंपति गावत मल्हार राग रंग रह्यो भारी ॥ २ ॥  
 ❀ १०५९ ❀ ❀ राग मल्हार ❀ स्यामा जू दुलहनि दुल्है हो रसिकवर  
 रमकि-रमकि दोऊ भूलत रस भरे । गोपीसब चहुँओर भोटा देति हँसि-हँसि  
 सोभा देखि सुर मुनि थकित चहल परे ॥ १ ॥ वृषभानुनंदिनी कों  
 भुलवत व्याप्यो है उर तिहिं छिनु उर लाय लजाय नैना ढर । देखिकें  
 गई मटक सेहरो गयो लटकि उरफि परे मोती छूटी कलीसी जो लर ॥ २ ॥  
 ललिता निरवारि वे कों गहि कर राख्यो भोटा तरल भये वार भूषन भरे ।  
 तन मन धन वारों पल न विसारों लाल ऐसी सोभा देखि 'सूरदास' द्रगनि  
 अरे ॥ ३ ॥ ❀ १०६० ❀ शयन दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ नवल लाल कों  
 सेहरो, जगमग रह्यो मेरी माइ । दुलहिन नवल किसोरी, दुल्है स्याम  
 कन्हाइ ॥ कुंज महल में हिंडोरना, बांध्यो परम सुहाइ । भुलवत हैं सब  
 सहचरी भुँडनि-भुँडनि आइ ॥ २ ॥ बोलत मोर पपैया दादुर सब्द  
 सुहाइ । यह सुख सोभा निरखत 'दास रसिक' बलिजाइ ॥ ३ ॥ ❀ १०६१ ❀  
 ❀ राग केदारो ❀ औल्हर आई हो घन घटा हिंडोरे भूलत है स्यामा स्याम ।

कंचनखंभ जटित दांडी पटरी लर मरुवा री पीतबसन फरहरात भूकुटी  
जीते कोटि काम ॥ १ ॥ बनी है अद्भुत जोरी उपमा कों दीजे कोरी भोटा  
देति सब मिलि ब्रज की बाम । आनंद बाढ्यो ठौर-ठौर नाचत हैं मोरी-मोर  
यह सुख निरखि-निरखि 'सूर' पायो है सुखधाम ॥ २ ॥ ❀ १०६२ ❀

### हरियारी अमावस्या (श्रावण वदी ३०)

❀ शृंगार ओसरा ❀ राग मल्हार ❀ सखीरी हरियारो सावन आयो । हरे  
हरे मोर फिरत मोहन संग हरे बसन मन भायो ॥ १ ॥ हरी हरी मुरली  
हरि संग राधे हरी भूमि सुखदाई । हरे हरे बसन राजत द्रुम बेली हरी-हरी  
पाग सुहाई ॥ २ ॥ हरी-हरी सारी सखी सब पहिरें चोली हरी रंग भीनी ।  
'रसिक' प्रीतम मन हरित भयो है तन मन धन सब दीनी ॥ ३ ॥  
❀ १०६३ ❀ राग मल्हार ❀ यह पावसच्छतु आई न्हेंनी-न्हेंनी बूंदनि  
बरखत रिमझिम पवन चलत पुरवाई ॥ १ ॥ हरी भूमि पर अरुन देखियत  
दामिनी अति दरसाई । तैसेई चातक रटत श्रवन सुनि विकल होत अधिकाई  
॥ २ ॥ करि विचार सबै मिलि सजनी यह निश्चय ठहराई । 'श्रीविठ्ठल'  
गिरिधरनलाल कों मिलहि कुंज बन जाई ॥ ३ ॥ ❀ १०६४ ❀ राग मल्हार ❀  
देखो माई हरियारो सावन आयो । हरयो टिपारो सीस बिराजत काछ हरी  
मन भायो ॥ १ ॥ हरि मुरली है हरि संग राधे हरी भूमि सुखदाई ।  
हरी-हरी बन राजत द्रुम बेली नृत्यत कुंवर कन्हाई ॥ २ ॥ हरी हरी सारी  
सखिजन पहिरें चोली हरी रंग भीनी । 'रसिक' प्रीतम मन हरित भयो है  
सर्वस्व न्यौछावर कीनी ॥ ३ ॥ ❀ १०६५ ❀ राग मल्हार ❀ हरयो टिपारो  
सीस बिराजत हरी ही काछनी कटि हरे हरे नृत्य करें जमुना के कूलें ।  
भलक रही चंद्रिका लहलहात हरे हरे हरो ही सिंगार राधा नाहिंन समतूले  
॥ १ ॥ हरयो ही कुंज भवन हरी हरी द्रुम बेली हरे ही सुर अलापत मन  
फूले री । गिरिवरधर 'रसिकराय' देखत नैन अधाय इंद्रादिक ब्रह्मादिक

सिव समाधि भूले री ॥ २ ॥ ❀ १०६६ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग मन्हार ❀  
 सीस टिपारो धरें मल्लकाञ्च उर गजमोतिन माल । तापर तीन चंद्रिका राजत  
 सोभित हैं नंदलाल ॥ १ ॥ नकबेसर भलकनि कुंडल की मृगमद तिलक  
 सुभाल । कहा कहों अंग-अंग की माधुरी अंबुज नैन विसाल ॥ २ ॥ भोरहि  
 उठि जात दधि बेचन मैं देखे नंदद्वार । 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर चित्त चोरयो  
 एकटकी लागी तन रही न संभार ॥ ३ ॥ ❀ १०६७ ❀ राग महार ❀  
 मदनमोहन बन देखत अखारौ रंग । सुलप संचगति बरहा नृत्य करें  
 कोकिला कुहू कुहू तान तरंग ॥ १ ॥ उघटत सब्द पपैया पीउ-पीउ करें  
 मधु व्रत गुंज मानों सरस उपंग । 'गोविंद' प्रभु रीभे सकल सभा सहित  
 जलधर सुधर बजावत मृदंग ॥ २ ॥ ❀ १०६८ ❀ राजभोग दर्शन ❀  
 ❀ राग मन्हार ❀ पावस नट नट्यो अखारौ वृंदावन अवनी रंग । नृत्यत  
 गुनरासि बरहा पपैया सब्द उघटत और कोकिला कल गावत तान-तरंग  
 ॥ १ ॥ जलधर तहाँ मंद मंद सुलप संचगति भेद उरपि तिरपि मानु लेत  
 सरस मृदंग । 'गोविंद' प्रभु गोवर्द्धन सिंहासन पर बैठे सुरभी सखा सभा  
 मध्य रीभे वह ललित त्रिभंग ॥ २ ॥ ❀ १०६९ ❀ हिंडोरे दर्शन ❀  
 ❀ राग मन्हार ❀ भूलै माई गोकुलचंद हिंडोरे नटवर भेष कियें । सोभित  
 तीन चंद्रिका माथे मुरली कर जु लियें ॥ १ ॥ कसूँभी पाग सुरंग पिछोरा  
 मुक्ता माल हियें । रमकि-रमकि भूलत राधा संगे ब्रजजन सुखहि दियें  
 ॥ १ ॥ निरखि-निरखि फूलत जुवती जन यह सुख नयन पियें । 'श्रीविठ्ठल'  
 गिरिधर सुखदायक सब छबि देख जियें ॥ ३ ॥ ❀ १०७० ❀ राग मन्हार ❀  
 हिंडोरे माई भूलत गिरिवरधारी । लाल टिपारो सीस बिराजत मल्लकाञ्च  
 छबि न्यारी ॥ १ ॥ बाम भाग सोहत है राधा पहिरि कसूँभी सारी । भोटा  
 देत सखी ललितादिक पवन बहत सुखकारी ॥ २ ॥ बाजत ताल मृदंग  
 भालरी गावत सब सुकुमारी । 'कुंभनदास' प्रभुकी छबि ऊपर सर्वसु

डरत वारी ॥ ३ ॥ ❀ १०७१ ❀ राग ईमन कल्याण ❀ हिंडोरे नीकी आज  
रमकी । उमड़ धुमड़ आई घन घटा बरसि बूँद रस भमकी ॥१॥ हरियारी  
में हरी सी कंचुकी गोरे गात खय खमकी । सारी सुही सांभ सी फूली  
मुक्तामाल बग समकी ॥ २ ॥ नवललाल जलधर अंग संग मिलि दीपति  
दामिनी दमकी । 'रससुजान' रीझि रस बस भये पावस ऋतु अनुपम की ॥  
॥ ३ ॥ ❀ १०७२ ❀ राग ईमन ❀ सोहत बन, आयो री सावन हरियारो ।  
हरित भूमि पर इंद्रवधू सी राधिका सब सखियनि संग लीने पहिरे कसुंभी  
सारी कंचन तन ॥ १ ॥ रंग भरि सुरँग हिंडोरे भूलत नवनागरी-नागर  
मानों रंग चै चल्यो है एड़ी अँगुरिन । 'सूरदास' मदनमोहन पिय के  
गुन गावत ये सुख अति आनंद मगन मन ॥ २ ॥ ❀ १०७३ ❀

### ठकुरानी तीज ( श्रावण सुदी ३ )

❀ मंगला दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ कहौ तुम कौन हो कहाँ ते आये अब  
कित जाओगे सवेरे । जानत हौं पहचानत नहीं आवत हो जु डरे रे ॥१॥  
लाल पाग अध भाल लटक रही मोतिनि माल याही तैं कहावत तुम चतुर  
रीके रे । 'तानसेन' के प्रभु ठाढ़े रहो जु स्याम सब सखियनि मिलि घेरे ॥  
॥२॥ ❀ १०७४ ❀ शृंगार ओसरा ❀ राग मल्हार ❀ चलि वर कुंजन बरसत  
मेह । पहरि चूनरी सज आभूषन नयननि अंजन देह ॥ १ ॥ नेंहीं-नेंहीं  
बूँदनि बरस्यो ही चाहत तैसोही बढ्यो सनेह । 'श्रीविठ्ठल' गिरिधरन पिया  
कों दोऊ भुजा भरि लेह ॥ २ ॥ ❀ १०७५ ❀ राग मल्हार ❀ सुरँग चूनरी  
प्यारी पचरंग पहिरें पिया को चोर चित्त डगरी । स्याम कंचुकी पर अँचरा  
उलटि दियो खमकि धरी सिर गगरी ॥ १ ॥ लहँगा हरयो छपाऊ कटि  
घूमत नखसिख रूप अगरी । 'श्रीविठ्ठल' गिरिधर तोहि सों रति लाइ लई  
उर सगरी ॥ २ ॥ ❀ १०७६ ❀ राग मल्हार ❀ गायो है मलार धुनि सुनि  
आई ब्रजनारि करि के सिंगार चली ठाडी कहा अरसे । चूनरी की सारी

सो है कंचन किनारी तामें बाल सुकुमारी तिय हांस हिये हरसे ॥१॥ सुनि  
 मान छांडि दियो जल भरनि को मिस कियो इंडुरी जराय लियें कंचन के  
 कलसे । मानिये त्यौहार भटु ठकुरानी तीज आज चमकत बीज सोभा देत  
 देखो मेह बरसे ॥ २ ॥ ❀१०७७❀ राग मल्हार ❀ लाल मेरी सुरंग चूनरी  
 देहु । मदनमोहन पिय भगरो कौन बद्यो सो अपनो पीत पट लेहु ॥१॥  
 तुम ब्रजराजकुमार कौन को डर हौं अब कहा कहूंगी गेह । 'गोविंद' प्रभु  
 पिय देहु बेगि आवत चहुंदिसि तें मेह ॥ २ ॥ ❀१०७८❀ शृंगार दर्शन ❀  
 ❀ राग मल्हार ❀ सावन तीज हरियारी सुहाई माई रिमझिम-रिमझिम बरसत  
 भारी । चूनरी की पाग बनी चूनरी पिछोरा कटि चूनरी की चोली बनी  
 चूनरी की सारी ॥ १ ॥ दादुर मोर पपैया बोलत कोयल सब्द करत  
 किलकारी । गरजत गगन दामिनी दमकति गावत मलार राग तान लेत  
 न्यारी ॥ २ ॥ कुंज महल में बैठे दोऊ करत विलास भरत अंकवारी ।  
 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर छबि निरखत तन-मन नौछावरि वारी ॥ ३ ॥  
 ❀१०७९❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ स्याम सुनि नियरे आयो मेहु ।  
 भीजेगी मेरी सुरंग चूनरी ओट पीतांबर देहु ॥ १ ॥ दामिनी देखि डरपति  
 हौं मोहन निकट आपुने लेहु । 'चतुर्भुजदास' लाल गिरिधर सों बाढ्यो  
 अधिक सनेहु ॥ २ ॥ ❀१०८०❀ चूनरी पाग और चूनरी पिछोरा मुक्ता-  
 माल हिये । उमगी घटा सावन भादों की पंखी सब्द किये ॥ १ ॥ दादुर मोर  
 पपैया बोलत कोयल ढेर दिये । 'ब्रजजीवन' प्रभु गोवर्द्धनधर यह सुख  
 नैन पिये ॥ २ ॥ ❀१०८१❀ हिंडोरा में उत्सव भोग आये ❀ राग मारू ❀ निज  
 सुख पुंज वितान, कुंज हिंडोरना । झूलत स्याम सुजान, कुंज हिंडोरना ॥  
 संग स्यामाजू परम प्रवीन । जाके सदा रसिक आधीन ॥ ध्रुव० ॥ कंचन  
 खंभ पेचवा बलेंडी जटित जराऊ सगरी । पन्ना खचित पिरोजा बीच-बीच  
 कनक कलस जगमग री ॥ १ ॥ गजमोतिन सों डाँडी गूँथी चौकी चमक

सुरंगी । रमकत भमकत गहि-गहि लटकत मोहन मदन त्रिभंगी ॥ २ ॥  
 मरुवे बेलन ध्वजा झालरी द्युति गहवर विस्तरनी । चोंकारत झोटन में  
 मानों कोकिल सब्द उचरनी ॥ ३ ॥ चहूं ओर द्रुम बेली फूली लता सघन  
 गंभीर । जब रमकत दमकत दामिनि सी झलमल जमुना नीर ॥ ४ ॥  
 सारस हंस चकोर चातक पिक नेह धरे सब पैठे । गुल्म लता द्रुम तनक  
 न दीसत ऐसैं जुरि जुरि बैठे ॥ ५ ॥ विजय सुभाव कियें घन संपत्ति उल्हर  
 विपिन पर आए । गरजत तरजत मधुर राग लियें केकी सब्द सुहाये ॥  
 ॥६॥ सहचरी गान करत ऊँचे स्वर श्रीवृन्दावन गाजें । मधुर मंजीर गगन  
 उघटत सम सुभट पखावज बाजें ॥ ७ ॥ नीलांबर पहिरें नव नागरीलाल  
 कंचुकी सोहें । भींजि गई श्रमजल सों उरजन प्रीतम को मन मोहें ॥८॥  
 लट सगमगी सलोल बदन पर सीसफूल उलटानो । प्रिया की चौकी सों  
 गिरिधर को चंद्रहार अरुझानो ॥ ९ ॥ दृग रसाल रस भरी भौंह सों हँसि-  
 हँसि अर्थ जनावे । दुरनि मुरनि में चित करषत हैं लालची मन ललचावे ॥  
 फैलि रह्यो सौरभ सिंगरे सखी कुमकुम कृष्णागर को । कहाँ लौं कहाँ  
 मत्त भयो बरनौं भाव 'गदाधर' उर को ॥ ११ ॥ ❀ १०८२ ❀  
 ❀ राग मलार ❀ सावन की तीज हिंडोरे झूलै राधा प्यारी सुनिकै मनमोहन  
 आये हैं झूलनि । सखी भेष किये स्याम आये प्रान प्यारी पास अंग-अंग  
 भूषन बैनी भरी फूलनि ॥ १ ॥ नैननि काजर सोहे देखत त्रिभुवन मोहे  
 तापर बेसर के मुक्ता की झूलनि । 'सूरदास' प्रभु नारीरूप किये प्यारी संग  
 झूलत जमुना के झूलनि ॥ २ ॥ ❀ १०८३ ❀ हिंडोरा दर्शन ❀ राग मलार❀  
 तीज महातम आयो, देख सखी । स्यामास्याम परस्पर झूलत निरखि परम  
 सुख पायो ॥ १ ॥ दिसि-दिसि घोर-घोर घन गरजत मंद-मंद बरखायो ।  
 दादुर मोर पपैया बोलत कोयल सब्द सुहाय ॥ २ ॥ ताल मृदंग किन्नरी  
 दुंदुभि प्रेम निसान बजायो । 'सूरदास' प्रभु जुगल बिराजत अखिल भुवन

जस गायो ॥ ३ ॥ ❀ १०८४ ❀ राग अढानो ❀ रंग हिंडोरना प्यारी  
 जू भूलनि आई तैसीय पावस ऋतु परम सुहाई । घटा चहुं ओर छाई कोकिला  
 सब सुहाई तैसीय अधर धरें मुरली बजाई ॥ १ ॥ बने दोऊ एकदाई तान  
 लेत मन भाई रीझि-रीझि प्यारी उर कंठ लगाई । देववधू उठि धाई पहोप  
 वृष्टि कराई 'रसिक' प्रीतम तहां बलि-बलि जाई ॥ १०८५ ❀ राग अढानो ❀  
 रंग हिंडोरना भूलत राधा सब सखिनि संग बनि-ठनि प्रानप्यारी देखिवे कों  
 आयो । जाके अंग संग कोटि-कोटि सचु पाइयत ललिता अपनी प्यारी के  
 संग भुलायो ॥ १ ॥ सावन तीज सुहाई दुहुँनि के मन भाई प्रथम समागम  
 आनंद घुमढायो । घन दामिनी देह बरसन लाग्यो मेह दोऊ रूपरासि सबहि  
 कों जिय भायो ॥ २ ॥ वे हरखि-हरखि कें भुलाये जब नंदलाल डरपनि  
 लागे और अति सचुपायौ । कहि 'भगवान हित रामराय' प्रभु प्यारी भूलि  
 रति मानी सुख-सिंधु बढायो ॥ ३ ॥ ❀ १०८६ ❀ राग अढानो ❀ राधेजू  
 भूलति रमक-रमक । मनि कंचन को सुरंग हिंडोरा तामधि दामिनि चमक  
 चमक ॥ १ ॥ गावत गुन गिरिधरलाल के उठत दसन धुति दमक-दमक । बाढ्यो  
 रंग 'गदाधर' प्रभु जहाँ गयो है दमन सब तमक तमक ॥ २ ॥ ❀ १०८७ ❀  
 ❀ शयन भोग आये ❀ राग इमन ❀ तीज सुनि आये हैं हरि मेरे । आनंद भयो  
 विरह दुख भूल्यो श्रीहरि कमल नयन मुख हेरे ॥ १ ॥ भरि अंकवार भूलि  
 पिय के संग सब सखियनि कों कह्यो सिधारो । कृष्णनाम लै हँसि-हँसि मुरि  
 मुसकाई प्रीतम के बदन निहारो ॥ २ ॥ जब नंदलाल तरल भोटा करि  
 डरपावन मिस रमक बढाई । स्यामा लपटी स्याम गरे में भूमि-भूमि हरि गरे  
 लपटाई ॥ ३ ॥ सो सुख देखि हरखि हिय की रति फूलि-फूलि अंग  
 न माई । वारि फेरि करि-करि न्यौछावर 'नन्ददास' कों बोलि गहाई ॥ ४ ॥  
 ❀ १०८८ ❀ राग इमन ❀ बाल आलिनि की मंडली फूली अति अंग न माई ।  
 गोपीजन मिलि तीज महातम अप-अपनो करि-करि सरसाई ॥ १ ॥ राधाजू



पै नाम लिवावत हँसि हँसि मोहन संग भुलवत । राधाजू कह्यो कृष्ण श्री  
 वल्लभ कृष्ण कह्यो राधा प्रान ही भावत ॥ २ ॥ रह्यो रंग संग खेलत खात  
 सब सावन मास रतिरस बितयो । 'कृष्णदास' गिरिधर संग मिलि काम नृपति  
 मिस हि मिस जितयो ॥ ३ ॥ ❀ १०८६ ❀ राग ईमन ❀ सुदी सावन हरियारी  
 तीज आज सुभ दिन परम सुहायो । पुन्य-पुंज गहवर हरि राधा-वर पायो  
 ॥ १ ॥ घर वन बसि कुंजनि सुख बिलसत करत आप मन भायो । गोपीजन  
 के जूथ मिले सुख सखियनि मंगल गायो ॥ २ ॥ भयो मनोरथ गोपीजन  
 को हाव-भाव फल पायो । यह सुख बसो सदा जिय मांही 'नन्ददास' जस  
 गायो ॥ ३ ॥ ❀ १०९० ❀ राग ईमन ❀ भूलत रसिक लाडिली सघनवन  
 छायो । लता कुसुम अलि गान मोरपिक त्रिविध समीर बहायो ॥ १ ॥  
 घन बूंदें सुर कुसुमानि वरषत दामिनि-दीप बनायो । ब्रजनारी दृग मीन  
 लखे प्रभु 'ब्रजाधीस' मन भायो ॥ २ ॥ ❀ १०९१ ❀ राग ईमन ❀ रमकि  
 भ्रमकि भूलनि में भ्रमकि मेह आयो नहि सुरभूत बातन तें । नव पल्लव  
 संकुलित फूल-फल वरन-वरन द्रुमलतान तर ठाडे भयो है बचाव पातनतें  
 ॥ १ ॥ मंद-मंद भुलवत खंभन लागि ओठें अंबर निज गातन तें । 'कृष्णदास'  
 गिरिधारी दोऊ भीज्यो बागो सारी भमरन की भीर भारी टारी न टरत क्योंहू  
 प्रगटी छबीली छटा निज गातन तें ॥ २ ॥ ❀ १०९२ ❀ राग ईमन ❀  
 सघनकुंज परछाँही प्रीतम दोऊ भूलत रंग हिंडोरे । दादुर मोर पपैया बोलत  
 सीतल पवन भूकोरे ॥ १ ॥ तैसेई वरन-वरन आये बादर मंद मंद घन-  
 घोरे । 'रसिक' प्रीतम भूलें सुरंग हिंडोरे निरखि ब्रजबधू तृन तोरे ॥ २ ॥  
 ❀ १०९३ ❀ राग केदारो ❀ भूलत दोऊ कुंज कुटीरे । कंचन खंभ हिंडोरे  
 बिराजत तरनि-तनया तीरे ॥ १ ॥ मुकुलित कुसुम मल्लिका प्रफुल्लित रुचिकर  
 बहत समीर । सारस हँस चकोर मोर खग बोलत कोकिला कीर ॥ २ ॥  
 मधुरे सुर गावत केदारो वृषभानु-सुता बलवीर । 'गोविंद' प्रभु गिरिराज

धरन पिय सुरस सुभग रनधीर ॥ ३ ॥ ❀ १०९४ ❀ राग बिहाग ❀ नवल-  
 लाल पियके सँग भूलनि आई एहो हिंडोरें । लटपटात पाट की चूनरी  
 बदल परी कछु भोरें ॥ १ ॥ सगवगात गिरिधर पिय के संग बतियाँ कहत  
 थारैं थोरें । 'दासन' के प्रभुरमकि भूमकि भूलें कछुक हँसत मुख मोरें ॥ २ ॥  
 ❀ १०९६ ❀ राग बिहाग ❀ ये दोऊ भूलत हैं बांह जोरें । नवल कुंज के  
 द्वारें देखो रमकत हैं चहुँ ओरें ॥ १ ॥ सस सुरनि मिलि मुरली बजावत  
 बिच-बिच तान लेत रस थोरें । 'हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी' छवि  
 निरखत तृन-तोरें ॥ २ ॥ ❀ १०९७ ❀ राग अढानो ❀ ब्रज के आंगन  
 माँच्यो, हिंडोरो । वृंदावन की सघन कुंज में जहाँ रंग राच्यो ॥ १ ॥ ब्रज  
 की नारी सबै जुरि आई गावति हैं सुर सांचो । 'रसिक' प्रीतम की बानिक  
 निरखत संकर तांडव नाच्यो ॥ २ ॥ ❀ १०९६ ❀ राग रायसो ❀ भूलत  
 मोहन रंग भरे गोप बधु चहुँ ओर । श्रीजमुना पुलिन सुहावनो वृंदावन  
 सुभ ठोर ॥ १ ॥ राधाजू करें किलकारी ज्यों गरजत घन घोर । तापाछें  
 सब सखियनि मिलि जु करत हैं सोर ॥ २ ॥ तैसेई रटत पपैया बोलत दादुर  
 मोर । 'नंददास' आनंद भरे निरखत जुगल किसोर ॥ ३ ॥ ❀ १०९८ ❀  
 ❀ शयन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ यमुना तट नव सघन कुंज में हिंडोरना  
 भूलनि आई । मध्य राधा माधौ बैठे आसपास युवती मन भाई ॥ १ ॥  
 सावन मास हरित घन वन में रिमझिम रिमझिम बूँद सुहाई । कछु भीजे  
 पट अंग भलमले नव-नव छवि बरनी नहि जाई ॥ २ ॥ विविध भांति  
 भूलत मिलि फूलत रस-प्रवाह उमग्यो न समाई । गावत सावन-गीत मुदित  
 मन संक न मानत निडर सुहाई ॥ ३ ॥ अति रस भरी युवती सब देखीं  
 स्यामसुंदर तब ले उर लाई । चिर संचित अभिलास भयो तब अधरसुधा  
 पीवत न अघाई ॥ ४ ॥ बिच-बिच मुरली धुनि सुनि कूकत केकी पिक  
 चातक तिहिं ठाई । 'चत्रभुजदास' वारने लौ लौ गिरिधर पिय रति कीरत

गाई ॥ ५ ॥ ❀ राग केदारो ❀ सो तू राखि लैरी भोटा तरल भये । इत नव कुंजद्वार कदंब परसि जात उत जमुना लौं गये ॥ १ ॥ आवत जात पट लपटात लतनि सों ता ऊपर द्रुम पात छये । ‘कल्याण’ के प्रभु गिरिधर रीफि बस भये भूलत नये-नये ॥ २ ॥ ❀ ११०० ❀ मान पोढवे में ❀ राग मलार ❀ घन-घटा आई धूमि-धूमि नहेंनी-नहेंनी बूँदनि हो पिय बरसे । चहुँदिसि तें गरजत मंद-मंद तैसीय कनक चित्रसारी तामें पोढे पिय प्यारी तैसीय दामिनी अति दरसे ॥ १ तैसेई बोलत मोर कोकिला करत रोर उठत मन कलोल दंपति हिय हुलसे । ‘गोविंद’ प्रभु सुघर दोऊ गावत केदारो राग तान अब ही सरसे ॥ २ ॥ ❀ ११०१ ❀ श्रावण सुदी ४ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग मलार ❀ आवत लाल-लाडिली फूले । कुंज केलि नवरंग बिहारी सुरति हिंडोरे भूले ॥ १ निसि जागे अलसात रगमगे पट पलटे गत भूले । ‘विट्ठल विपिन विनोद बिहारी’ दुरि देखत द्रुम मूले ॥ २ ॥ ❀ ११०२ ❀ राग मलार ❀ भूलत कुंजनि कुंज किसोर । सुरत रंग सुख सेन सूचित नैन रँगीले भोर ॥ १ ॥ सिथिल पलक मैहि बंक विलोकनि बिहँसनि चित के चोर । फिरि-फिरि उर लपटात स्याम-तन फूले तन कुच कोर ॥ २ ॥ अधरः मधुर मधु प्याय जिवाये विविध वर वदन-चकोर । मादक रस रसानन अघाते लहत मंडल चल छोर ॥ ३ ॥ बिच-बिच नाचत मिलि गावत सुर मंदिर कल भोर । रीफि पलक चुंबन करि पुलकित भुलावत जोवन जोर ॥ ४ ॥ हरिबंसी फूलि हरिदासी निरखत सुरत हिंडोर । ‘व्यासदास’ अंचल चंचल करि मोद-विनोद न थोर ॥ ५ ॥ ❀ ११०३ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ उमड़ि-धुमड़ि घटा आई भूमि-भूमि लता रही भूमि हरियारी लागे सुभग सुहाई । तहाँ बैठे पिय प्यारी भूषन छवि न्यारी-न्यारी मुख की उजियारी मानों चाँदनी सी छाई ॥ १ ॥ तनन-तनन तान लेत प्यारी करताल देत गावत मल्हार राग अति मन भाई । ‘श्रीविट्ठल’ गिरि-

धारीलाल लखि मोही ब्रजबाल रीझि-रीझि रहे दोऊ कंठ लपटाई ॥ २ ॥  
 ❀ ११०४ ❀ शृंगार में झूले तो ❀ राग मल्हार ❀ झूलौ तो सुरत-हिंडोरे  
 झुलाऊँ । मरुवे मयार करौँ हित-चित के तन-मन खंभ बनाऊँ ॥ १ ॥  
 सुधि पटुली बुद्धि दांडी बेलन नेह बिछोना बिछाऊँ । अति औसेर धरौं  
 रुचि कलसा प्रीति ध्वजा फहराऊँ ॥ २ ॥ गरजन कुहुक हिलग मिलिवे  
 की प्रेम नीर बरसाऊँ । 'श्रीविठ्ठल' गिरिधरन झुलाऊँ जो इकले करि  
 पाऊँ ॥ ३ ॥ ❀ ११०५ ❀

### पवित्रा एकादशी ( श्रावण सुदी ११ )

❀ शृंगार दर्शन पवित्रा धरे तब ❀ राग सारंग ❀ पवित्रा परिहत गिरिधर-  
 लाल । सुंदर स्याम छबीलो नागर सकल घोष प्रतिपाल ॥ १ ॥ हँसि मन  
 हरत हमारो मोहन संग नागरी बाल । फूली फिरत मत्त करिनीवत् अति  
 आनंद नंदलाल ॥ २ ॥ देखि स्वरूप ठगी सी ठाड़ी दंपति दल के साज ।  
 'परमानंद' प्रभु पर न्यौछावर प्रान-प्रिया के काज ॥ ३ ॥ ❀ ११०६ ❀  
 ❀ राग सारंग ❀ पवित्रा पहरे श्री गिरिधरलाल । वाम भाग वृषभानुनंदिनी  
 बोलत बचन रसाल ॥ १ ॥ आसपास सब ग्वाल मंडली मानों कमल  
 अलिमाल । 'कुंभनदास' प्रभु त्रिभुवन मोहन नंद भवन ब्रजबाल ॥ २ ॥  
 ❀ ११०७ ❀ राग सारंग ❀ पवित्रा पहिरत श्रीगिरिधरलाल । तीनो लोक  
 पवित्र किये हैं श्रीविठ्ठल नयन-विसाल ॥ १ ॥ कहा कहीं अंग-अंग की  
 बानिक उर राजत बनमाल । 'विष्णुदास' प्रभु गोकुल महियाँ बिहरत  
 बाल गोपाल ॥ २ ॥ ❀ ११०८ ❀ राग सारंग ❀ पहिरतपाट पवित्रा मोहन  
 नंदरानी पहिरावत । जंबू नद कंचन के तारे बिच बिच रतन जरावत ॥ १ ॥  
 पूवा सुहारी और लडुवा लै हँसिहँसि गोद भरावत । 'कृष्णदास' गिरिधर  
 के मंदिर प्रमुदित मंगल गावत ॥ २ ॥ ❀ ११०९ ❀ श्रावण सुदी १२ ❀  
 ❀ हिंडोरा दर्शन ❀ राग कानरो ❀ झूलत तेरे नैन-हिंडोरे । श्रवन खंभ भ्रू भई

मयार दृष्टि करन डांडी चहुँ ओरें ॥ १ ॥ पटली अधर कपोल सिंहासन बैठे  
 जुगल रूप-रति जोरे । कच घन आड दामिनी दमकति मानों इन्द्र धनुष  
 अनुहोरे ॥ २ ॥ दूर देखत अलकावलि अलिकुल लेत सुगंधनि पवन भकोरें ।  
 बरनी चमर दुरत चहुँ दिसितें लर लटकन फुंदना चित चोरें ॥ ३ ॥ थकित  
 भये मंडल जुवतिन के जुग ताटंक लाज मुख मोरे । 'रसिक' प्रीतम रसभाव  
 भुलावत रीझि रीझि ताननि तृन तोरें ॥ ४ ॥ ❀ १११० ❀ राग कान्हारा ❀  
 ब्रजजुवतिन के जूथ में भूलें प्रिय-प्यारी हिंडोरे । तैसीय सुरंग सारी  
 पहिरे सुभग अंग खमकि कंचुकी पिय सरसत परसत बरसत रस द्रग कोरे  
 ॥ १ ॥ सुभग सहचरी मिलि ज्यों-ज्यों भुकि भोटा देत त्यों-त्यों तोरि मोरि  
 तन डरी सी आँकौ भरत लेत चतुर चित्त-चोरे । 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर की  
 बानिक देखि रीझि-भीजि सब ब्रजजन हुलसत वारत है तृन तोरे ॥ २ ॥  
 ❀ ११११ ❀ राग कान्हरो ❀ हिंडोरे माई, भूलत री नंदनंदन । संग वृषभानसुता  
 अति सो है रिमझिम रिमझिम बूँद सुहाई ॥ १ ॥ गावत सावन-गीत बानिक  
 बनि ब्रज-बनिता पिय जिय मन भाई । 'चतुर्भुज' प्रभु तब छबिली छवि  
 निरखि रीझि भीजि सब उर लाई ॥ २ ॥ ❀ १११२ ❀ शयन दर्शन ❀ राग विहाग ❀  
 दीपत दिव्य दरबार श्रीब्रजराज को । रतन जटित को आज हिंडोरो साज  
 को ॥ टेक ॥ छंद—सजे साज चहुँ ओर भगमगे रंगमहल भगमगि रह्यो ।  
 भगमगात हिरन के झार मानों पन्नन के जात है नहीं कह्यो ॥ १ ॥  
 लटकन लटकि रहे चहुँ ओर सारंग न्यारे न्यारे । राते पीरे हरे स्याम सोसनी  
 भरे रंग भारे ॥ २ ॥ चाल—आसमान सो स्वेत सरस और कहि कहि कहा  
 बखानिये । श्रीपति को वैभव बरननि कों पटतर कहा कहि ठानिये ॥ २ ॥  
 सब गिलास भगमग जहाँ अस चित्र विचित्र समारे । लटकन भगमगत  
 लरिन के मानो गगन तारे ॥ चाल—भगमग जोति देखि भ्रम भूल्यो आई मानो  
 दौरि दिवारी । रमा संकर सेस नारद देखि विधि नहीं जात विचारी ॥ ३ ॥

जहाँ भूलत पिय अरु प्यारी तहाँ मिलि गोपीजन गुनगावें । राग रागिनी  
 सप्त सुरनि मिलि तान तरंग उयजावे ॥ चाल-भोटा देत ललितादिक फूलि  
 अंग न माय । बढ्यो रंग तहाँ अति अद्भुत छवि मीन बिछुरे नहिं माय ॥४॥  
 फेंटा फब्यो स्याम के सिर पर उपरैना सुखकारी । सहज सिंगार स्यामा तन  
 सोहे नवल केसरी सारी ॥ चाल-आलस भरे नैन ललिता लखि सैय्या सरस  
 सँवारी । आरति वारि देत न्यौछावर राई लोन उतारी ॥ हँसि चंद्रावली  
 करत समस्या सुरत हिंडोरे भूलिये । 'कृष्णदास' गिरिधरन को जस अब  
 रमक बढावन हूलिये ॥ ५ ॥ ❀ १११३ ❀ राग विहाग ❀ बाल भूलावनि  
 आई, भूले नवल बिहारी । सुरंग हिंडोरो लाल को तहाँ जुगलकिसोर  
 सुहाई ॥ १ ॥ मनि कंचन के खंभ मनोहर विद्रुम डांडी सुहाई । पचरंग  
 डोरी पाट की तहाँ पटुली पाँच जराई ॥ २ ॥ बरन-बरन के फौंदना तहाँ  
 मोती भालर बनाई । मानिनी गावे मोद तहाँ बाजे बहुत बजाई ॥ ३ ॥  
 रीम्कि रीम्कि सुर सुंदरी तहाँ कुसुमनि वृष्टि कराई । देखत सोभा दंपति की तहाँ  
 'कृष्णदास' बलिजाई ॥ ४ ॥

### उत्सव राखी को ( श्रावण सुदी १५ )

❀ शृंगार में राखी धरे तो ❀ राग सारंग ❀ मात जसोदा राखी बाँधति  
 बल अरु श्रीगोपाल के । कंचन थार में अच्छत कुमकुम तिलक कियो  
 नंदलाल के ॥ १ ॥ आरती करत देत न्यौछावर वारत मुक्ता माल के ।  
 'छीतस्वामी' गिरिधर मुख निरखति बलि-बलि नैन विसाल के ॥ २ ॥  
 ❀ १११५ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ आज हों नंदे जाँचन आई ।  
 बाबाजू हँसि कह्यो दसौ दिसि भीतर भवन बुलाई ॥ १ ॥ ठौर-ठौर ब्रज  
 घोषनि घर-घर बजत बधाई । जीवन-जनम सुफल करिवे कौ अवलोकन  
 सुखदाई ॥ २ ॥ परम पुनीत तप कौ फल भामिनि जो कोऊ दैहै दिखाइ ।  
 साज बाज सब संग कर लीने हौं तहाँ दर्ई है पठाई ॥ ३ ॥ भभक भभ-

जीजी भभक जीजी-जीजी भभ-भभ-भभभ भकाई । रुनन-भुनन और  
 भनन-भनन और घनन-घनन अधिकाई ॥४॥ पोंहोंपंबी-पोंहोंपंबी ढाढी-ढाढिन  
 बजाई । बाबा जू हँसि कह्यो दसोदिसि भीतर भवन बुलाई ॥ ५ ॥ जब  
 जसुमति धाय नंदरानी पहिचानी पाँय लगाई । बाजत हरषि मंजीरा  
 बाजत नव-नव भांति नचाई ॥ ६ ॥ करिहौं नची सची संपति भई पाँय  
 परी तब धाई । मनिमय आँगन में दोउ डोलति मोहन कों उर लाई ॥७॥  
 गोप वधू निरखत सुख पावत गावत गुन समुदाई । बरस द्योस राखी सुख  
 साखी भाखी वेद बताई ॥ ८ ॥ मंगलमुखी सदा आवत हैं सखी सर्वदा  
 पाई । ढाढिन कह्यो जाय किन देखौ सुख संपति अधिकाई ॥ ९ ॥ बड़े-  
 बड़े गाडा दस दीने रूपे सों लदवाई । चंडौली-चंडौल डोल निरमोल अधिक  
 धन लाई ॥१०॥ को कहि सकै दसों दिसि यासों जब तें मिले कन्हाई ।  
 'खेमदास' प्रभु गिरिधर जू की जुग-जुग होत बड़ाई ॥ ११ ॥ ❀ १११६ ❀  
 ❀ हिंडोरा दर्शन ❀ राग अडानो ❀ सावन की पून्यो मन भावन हरि आये  
 घर भूलँगी पचरँग डोरी बांधि हिंडोरे । पहिरौंगी सुरंग सारी कंचुकी कसि  
 बाँधों कारी हीरा के आभूषन सोहै तन गोरे ॥ १ ॥ धरि हों उर कुसुम  
 हार निरखौंगी बारंबार नयन निहारि नंदलाल कछुक वेष थोरे । 'रसिक'  
 प्रीतम संग सुखद पावस ऋतु बिलसौंगो भेटौंगी आनंद भरि कंठ भुजा जोरे  
 ॥ २ ॥ ❀ १११७ ❀ राग अडाना ❀ भली करी आये प्रीतम प्यारे परव मना-  
 वन सलोनौ । भूमि-भूमि भूलवत रंग रंगन रस बरखत ब्रज दूनौ ॥१॥ एक  
 वेष एक रूप एक गुन पूरन नाहिन ऊनौ । 'द्वारकेस' स्वामिनी हँसि यों  
 कह्यो भूलिये आज है पूनौ ॥२॥ ❀ १११८ ❀ राग अडाना ❀ सुघर रावरे  
 की गोपकुमारि गोकुल की राखी बाँधे हरि राधा हिंडोरे भूलनि नंदसदन  
 आई । प्रफुलित मुख सोभित अलक चपल नैना पट भूषन भगमग तन  
 चटक मटक जसुमति मन भाई ॥ १ ॥ कोऊ मृदंग बजावे गावे बीन

सरस सुर मिलावे पिक रिभावे लजावे मोरनि कूक मचाई । 'ब्रजाधीस' केलि करत फूले बन हरित भूमि बडभागिनि पून्यो यह सावन सुखदाई ॥२॥

❀१११६❀ राग अढाना ❀ गोपीजन गावे गीत राखी को है दिन पुनीत स्यामास्याम भूले दोऊ रंग हिंडोरे । रमकि-भ्रमकि भोटा देत नैननि कों सुख देत निरखि-निरखि छवि पर तृन तोरे ॥ १ ॥ सावन की पून्यो मन भावन संग राखी बांधि जमायो है राग-रंग बैठी बाँह जोरे । काछनी काछे लाल मोर मुकुट मुक्तामाल स्यामा को सुहाग-भाग सुजस चहुँओरे । श्रीविठ्ठल सुख-साज सज्यो जसुमति ब्रजराज भजो हरि अविचल राधा को चूरो । 'नंददास' बलिहारी भक्तनि कों सुखकारी प्रीतम चकोर प्यारी सरद-ससि पूरो ॥३॥ ❀११२०❀ शयन दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ यह सुख सावन में बनि आवे दुलहै दुलहनि संग भुजावे । नंदभवन रोप्यो सुरंग हिंडोरो गोपवधू मिलि मंगल गावे ॥१॥ नंदलाल कों राधा जू पै हरिजू पै राधाजी को नाम लिवावे । जसुमति सों 'परमानंद' तिहिं छिन बारि फेरि न्यौछावर पावे ॥२॥ ❀११२१❀

❀ जन्माष्टमी की बधाई में सेहरा धरें तब ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आसावरी ❀ रानी जू जीअों दुलहैं तेरो ब्रजजीवन जायो । गोकुल को कुल मंडन पूत यह पायो ॥ १ ॥ देखि द्रग कमल जब स्याम गात सुहायो । लै करि निज गोद मोद सों हुलरायो ॥ २ ॥ पूरव कृत पुन्य पुंज भाग बडे तें पायो । कूखि की बलिहारी जाऊँ जस 'कल्यान' गायो ॥ ३ ॥ ❀११२२❀

❀ जन्माष्टमी की बधाई में किरीट धरे तब ❀ मंगला दर्शन ❀ राग रामकली ❀ हरि मुख देखिये बसुदेव । कोटि काम स्वरूप सुंदर कोऊ न जाने भेव ॥१॥ चारि भुजा जाकें चारि आयुध देखि हो नर ताहि । अजहुँ मन परतीति नाँही कहे नंद-गृह लै जाहि ॥ २ ॥ भरे तारे परे पहरुबा नींद ब्यापी गेह । निसि अंधियारी बीजु चमके सघन बरसे मेह ॥ ३ ॥ कंस सोयो स्वान सोये मुक्त भये द्वार । बंधी बेडी छूटि गई यह कहो कौन विचार ॥ ४ ॥



सिंह आगें सेस पाछे बहै जमुना पूर । नासिका लौं नीर आयो पार पहिलो  
 दूर ॥ ५ ॥ श्रीमुख ते' हुंकार कियो दियो जमना पार । वसुदेव मन  
 परतीति आई बालक गृह-अवतार ॥ ६ ॥ नंद सों मनुहार कीनो कहत हैं  
 वसुदेव । कहें 'सूर' सुत जानि अपनो बोहोत कीजै सेव ॥ ७ ॥ ❀ ११२३ ❀  
 ❀ शृंगार समय ❀ राग बिलावल ❀ प्रगटित मथुरा माँझ हरी । मात तात  
 हित पुत्र रूप मिस अपनी प्रतिज्ञा सत्य करी ॥ १ ॥ स्याम वरन वपु उर  
 पर भृगु-पद जटित कंचन सिर क्रीट खरी । चारि भुजा बनमाल कोटि रवि  
 संख चक्र गदा पद्म धरी ॥ २ ॥ द्वार कपाट भेदि चले ब्रजपति तब सुर  
 कुसुमनि वृष्टि करी । परम पुरुष भगवान जानि जिय वसुदेव मन अति  
 भीति हरी ॥ ३ ॥ जय जय सब्द बोलि निसान ध्वनि व्योम विमाननि  
 भीर भरी । 'गोविंद' प्रभु गिरिधर जसुमति सुत भक्तनि हित आये नंद  
 घरी ॥ ४ ॥ ❀ ११२४ ❀ राग बिलावल ❀ जागी महरि पुत्र मुख देख्यो  
 आनंद तूर बजायो हो । कंचन कलस होम द्विज-पूजा चंदन भवन लिपायो  
 हो ॥ १ ॥ दिन दस ही ते' वरषि कुसुम अति फूलनि गोकुल छाये ।  
 नंद कहै इच्छा मन पूजी मनबांछित फल पायो ॥ २ ॥ आनंद भरे  
 करे कोलाहल उदित मुदित नर नारी । निरभै भए निसान बजावत देत  
 निसंकन गारी ॥ ३ ॥ नाचत महर मुदित मन कीने पात बजावत तारी ।  
 'सूरदास' प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा कंस-प्रहारी ॥ ४ ॥ ❀ ११२५ ❀  
 ❀ राग बिलावल ❀ आनंद ही आनंद बढ्यो अति । देबनि मिलि दुंदुभी  
 बजाये निसि मथुरा प्रगटे जादोंपति ॥ १ ॥ गावत गुन गंधर्व पुलिक  
 चित नाचें सुर भारी जु रसिक रति । विद्याधर किन्नर सुकंठ कल तिहिं  
 तिहिं ताल जात उघटत गति ॥ २ ॥ सिव विरंचि सनकादि अगोचर  
 फूले चित न मात अमित मति । बरखत सुर समूह सुमन गन हरखत  
 कलोल करतजु मुदित गति ॥ ३ ॥ कमलनैन अति वदन मनोहर

देखियत ये विचित्र अनूप गति । स्याम सुभग तन पीत वसन द्युति और  
मानों सोहैजु सुभग अति ॥ ४ ॥ नखमनि मुकुट प्रभा अति उदित चित्त  
चक्रत भयें अनुमान न पावत । अति प्रकास निसि विमल तिमिर घट  
भलमलात रति पति हि लजावत ॥ ५ ॥ दरसन सुखी दुखी अति सोचत  
खट सुत-सोक सुरति उर आवत । 'सूरदास' प्रभु भये हैं प्राकृत भुज के  
चिह्न सबैजु दुरावत ॥ ६ ॥ ❀ ११२६ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग घनाश्री ❀  
कमलनयन ससि-बदन मनोहर देखियत ए विचित्र अनूप गति । स्याम सुभग  
तन पीत वसन द्युति उर बनमाला सोहित है अति ॥ १॥ नखमनि मुकुट  
प्रभा अति राजत चितैं चकित उपमा नहिं पावत । अति प्रकास निसि विमल  
तिमिर छटि कमलापति कौं नाहि जगावति ॥ दरसन सुखी दुखी अति सोचत  
षट सुत सोच सुरति उर आवत । 'सूरदास' प्रभु होऊ प्राकृत लै लै भुज के  
बीच दुरावत ॥ ३ ॥ ❀ ११२७ ❀ राजभोग आये ❀ राग घनाश्री ❀ आज बाबा  
नंदहि जाचन आयो । जनम सुफल करिवे कौं अब मैं रहसि बधायो गायो ।  
महरिकहति या बालक के गुन किनहु न मोहि सुनायो । भलो भलो सब लोग  
कहत हैं सोई गीतनि गायो ॥ २॥ प्रथम ही मच्छ संखासुर मारयो कमठ पीठि  
ठहरायो । श्रीवाराह नरसिंह औतरे देतन नखन दुरायो ॥ ३॥ श्रीवामन वैराट  
विस्तारयो बलिही पाताल पठायो । परसराम पृथ्वी निच्छत्रि करी विप्रनिदान  
दिवायो ॥ ४॥ रघुपति रावनके सीस भुजा हनि जानकी लै घर आयो । विभि-  
षन कौं राजतिलक दै लंका में बैठायो ॥ ५॥ अब श्रीकृष्ण प्रगटे पुन्यनि तें  
तुम्हारो पुत्र कहायो । बालकेलि रसकेलि करेंगे नटवर भेष बनायो ॥ ६॥ श्री  
गोवर्द्धन सात दिवस बांये नख अग्र उठावें । रास विलास करें वृंदावन गोपिनि  
प्रेम बढावें ॥ ७॥ मारेंगे मल्ल कंस अरु कैसी मल्लन साल सलायो । जस अपार  
महिमा अनंत ब्रह्माहू पार न पायो ॥ ८ ॥ महरिकहति यह भलो दसोंधी  
सबहिन के मन भायो । बाबा बिहँसि आपुने घर तें बकुचा वेगि मंगायो

बंध तें गोपुर दिये किवार खुलाय । सेस सहस्र फन बँद निवारत जमुना  
 चरन परसि भई धाय ॥ ५ ॥ लै वसुदेव गये गोकुल नंद-घरनि की सेज  
 सुवाय । निज सामर्थ्य जोगमाया लै मोहन मथुरा दर्ई है पठाय ॥ ६ ॥  
 जागी महारि उठी जब जसुमति नंदमहर कों लिये बुलाय । जय-जयकार  
 भयो गोकुल में ब्रजजन आनंद उर न समाय ॥ ७ ॥ गोपी-ग्वाल गोप  
 सब ब्रजजन सवन सुनत ही रंक निधि पाय । हरद दूब अच्छत रोरी सों  
 कर कंचन के थार भराय ॥ ८ ॥ बाजत ताल पखावज आवज मुरली  
 दुंदुभी सब सुहाय । नंदमहर घर ढोटा जायो दधि लै छिरकत करत  
 बधाय ॥ ९ ॥ ध्वजा पताका तोरन माला गृह-गृह मंगल कलस धराय ।  
 चित्र विचित्र किये प्रमुदित मन दधि माखन के माट धराय ॥ १० ॥  
 तब ब्रजराज गोप सों मतौ करि अति आदर सों विप्र बुलाय । हेम  
 गो रत्न भूमि दन्धिना दै आसीस बचन विप्र पढ़ाय ॥ ११ ॥ यह विधि  
 भयो महोत्सव ब्रज में सुर-समाज कुसुमनि बरषाय । सचि-पचि देव मुनि  
 चढि विमाननि अंबर लियो है छाया ॥ १२ ॥ 'गोविंद' प्रभु नंदनंदन देखत  
 कोटिक मनमथ गये लजाय । श्रीविट्ठल पद रज प्रताप बल यह लीला  
 संपत्ति पाय ॥ १३ ॥ ❀११३०❀ शयन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ देवकी मन-  
 मन चकित भइ । देखो आय पुत्र मुख काहे न ऐसी कबहूँ होय दइ ॥ १४ ॥  
 माथें मुकुट पीत पट कांधे भृगु रेखा भुज चारि करें । पूरव कथा सुनाइ  
 कही हरि तुम मांग्यो यह रूप धरें ॥ १५ ॥ छूटे निगड सुवाओ पलना  
 द्वार कपाट उधारयो । अब लै जाहु मोहि तुम गोकुल यह कहिकै सिसु  
 रूपहि धारयो ॥ १६ ॥ तबहिं रोय उठे वसुदेव सुनि नंद भवन गये ।  
 बालक धरि वसुदेव कन्या लै आप 'सूर' मधुपुरी आये ॥ १७ ॥ ❀११३१❀  
 ❀ जन्माष्टमी की वधाई में टिपारा धरे तब ❀ शयन भोग आयें ❀ राग कान्हरा ❀ महानिसि  
 आठैं भादों की मथुरा प्रगट भये हरि आय । सेवक समय करनि सेवा कों

पहिले आये धाय ॥ १ ॥ ग्रह-तारा सब उच्च परे हैं अपुने-अपुने ठाय ।  
 दसों दिसा अतिहि प्रफुलित तन उर आनंद न समाय ॥ २ ॥ निर्मल गगन  
 भयो तिहिं औसर उडगन सहज प्रकास । खिरक गाम आँगन रतननि के  
 अवनि भई सुभ वास ॥ ३ ॥ जल पूरन सब नदी भई हैं सर-जल कमल  
 विकास । पंछी अलिकुल नाद करत हैं वृच्छन मन हुलास ॥ ४ ॥ त्रिविध  
 समीर बहत अति पावन विप्र-हुतासन फूले । मन प्रसन्न सब साधुनि के  
 भये तप समाधि अनुकूले ॥ ५ ॥ अजन सरूप भयो तिहिं औसर दुंदुभि  
 देव बजाये । किन्नर और गंधर्व सबै मिलि मुदित परम जस गाये ॥ ६ ॥  
 हरख भयो सिद्धन चारन कें विद्याधर सब नाचे । बाजत ताल मृदंग झालरी  
 देव-वधू सुर साँचे ॥ ७ ॥ सुनि देवता पुहुँप वृष्टिनि कों चढि विमान सब  
 आये । मंद-मंद जलधर गरजत हैं जलनिधि के ढिंग आये ॥ ८ ॥ आधी  
 रात भई जबहीं तब तम आकास गयो । श्रीवसुदेव देवकी के मन परम हुलास  
 भयो ॥ ९ ॥ देवरूप देवकी-कूखतें प्रगटे आनंदकंद । मानो दिसा प्राचीतें  
 उदयो उज्ज्वल पूरनचंद ॥ १० ॥ रूप चतुर्भुज दरसन दीनो हरि संख गदा  
 दिक धारी । पीत बसन सिर बन्यो टिपारौ अंबुज नैन सुधारी ॥ ११ ॥  
 कौस्तुभ मनि श्रीकंठ जगमगे उर श्रीवत्स बिराजे । कुंडल सवन मकर जानो  
 दिनकर कुन्तल ऊपर आजे ॥ १२ ॥ तब वसुदेव भयो मन विस्मय जब सुत  
 दरसन पायो । जनम-जनम के भाग्य खुले अब मन वाञ्छित फल पायो ॥ १३ ॥  
 विनती करत दुहुँकर जोरे पूरनब्रह्म स्वरूप । प्रकृत पुरुष अक्षर हूँ ते पर  
 आनंद अनुभव रूप ॥ १४ ॥ बहुत करत अस्तुति देव की निर्गुन जोति स्वरूप  
 जिन अब रूप दिखायो यह तुम जो बपु धरयो अनूप ॥ १५ ॥ तब हरि  
 वचन कहत दोउनि सों तुम बोहोत तपस्या कीनी । पुनि मैं प्रगट होय बर  
 दीनो यही मांगि तुम लीनी ॥ १६ ॥ दोऊ बेर पहले तुमरे-गृह बालभाव  
 लै आयो । बहोरि अबे निज रूपधारि कै तुमकों प्रगट दिखायो ॥ १७ ॥

हतनो कहि हरि चुप कर बैठे प्राकृत निज बपु धारे । देखत ही मन मात  
 पिता को निज माया विस्तारे ॥ १८ ॥ ताही समै नन्द-गोकुल में प्रगटे  
 गोकुलचन्द । निज भक्तनि हित सुख के कारन पूरन परमानन्द ॥ १९ ॥  
 नाभी कमल में नाल बिराजे घँघरवारे केस । नैन बिसाल मृदु मुसकनि छवि  
 अधरनि देत सुदेस ॥ २० ॥ यही रूप सों दरसन दीनो मथुरा में हरि आय ।  
 संख चक्र धरि दरसन दीनो सो लीनो उर माय ॥ २१ ॥ तब वसुदेव विचार  
 कियो मन श्रीपति लिये उछंग । खुले कपाट पहरुवा सोये नृपति मनोरथ  
 भंग ॥ २२ ॥ निज फन आत-पत्र सों बूँदनि सेस निवारत आवे । गरजत  
 कोंध मेघ दामिनि की चमकि-चमकि उर लावे ॥ २३ ॥ जमना महा भयानक  
 लागत घोर वेग अति भारी । ज्यों रघुनाथ रूप जलनिधि कों त्यों उतरे  
 गिरिधारी ॥ २४ ॥ तब वसुदेव गये श्रीगोकुल ग्वालनि सोवत पाये ।  
 बालक धरयो सेज जसुमति के माया कों लै आये ॥ २५ ॥ महामहोच्छव  
 गोकुल बाढ्यो नन्दहि बढ्यो आनन्द । सुत कौ जातकर्म सब कीनों देखि-  
 देखि मुख चंद ॥ २६ ॥ विप्रजु तिलक करत घसि चन्दन अगनित गैया दान ।  
 बंदी सुत प्रोहित जन कों बहु कीनों सनमान ॥ २७ ॥ दूध दही छिरकत  
 सबहिन कों नाचत गोपी ग्वाल । परम कृपाल 'दास' हित प्रगटे श्रीनवनीत  
 प्रियलाल ॥ २८ ॥ ❀ ११३२ ❀

❀ जन्माष्टमी की बधाई में पगा धरे तब ❀

❀ शृङ्गार ओसरा❀ राग आसावरी❀ जनम सुत कौ होतही आनन्द भयो नन्दराय ।  
 महामहोच्छव आज कीजे बाढ्यो मन न रहाय ॥ १ ॥ विप्र वैदिक बोलिकें  
 करि स्नान बैठे आय । भाव निर्मल पहरि भूषन स्वस्ति वाचन पढाय ॥ २ ॥  
 जातकर्म कराय विधि सों पितर देव पुजाय । करि अलंकृत द्विजनि कों  
 द्वै लच्छ दीनी गाय ॥ ३ ॥ सात पर्वत तिलनि के करि रतन ओघ मिलाय ।  
 कर कनक अंबरन आवृत दिये विप्र बुलाय ॥ ४ ॥ पढ़ें मंगल विप्र मागध

सूत बंदी अधाय । गीत गावें हरखि गायक नाचत नट नचवाय ॥ ५ ॥  
 बाजनियां मन बोहोत हरखे विविध बाजे लाय । जानि मंगल भेरि दुंदुभि  
 फेरि-फेरि बजाय ॥ ६ ॥ ध्वजा पताका ब्रज विचित्रित भवन-भवन धराय ।  
 बसन पल्लव रचे तोरन द्वार-द्वार बंधाय ॥ ७ ॥ वृषभ गाय सुबच्छ हरदी  
 तेल तन लपटाय । बसन बहई सुवर्णमाला धातु चित्र बनाय ॥ ८ ॥ गोप  
 आये भेट लै लै दूध दधि सँग लाय । पाग पटुका भूगा भूषन महामोल  
 सुहाय ॥ ९ ॥ सुनत ही भई मुदित गोपी जसोदा सुत जाय । बसन सकल  
 सिंगार अंजन आदि तन भूषाय ॥ १० ॥ कहा मुख की कहूँ सोभा भई  
 सो बरनि न जाँय । मानो कुम-कुम केसर मधि कमल की सोभाय ॥ ११ ॥  
 लियें बल करि अति उतावल चली तन विसराय । सवन कुंडल पदिक हिरदें  
 पहिरें अति उजराय ॥ १२ ॥ विविध बसन बनाये सिर तें खसि कुसुम  
 विसराय । नन्दजू के भवन पैठी वलय प्रगट लखाय ॥ १३ ॥ अति विराजत  
 भये कुंडल हृदैं हार कँपाय । बहोत दई असीस यों ही रहौ ब्रज सुखदाय  
 ॥ १४ ॥ भई रस उन्मत्त नाचत लोक लाज गँमाय । अजन जन्म निसंक  
 गावें हृदैं प्रेम बढाय ॥ १५ ॥ बजें बाजे जनम उत्सव विविध ध्वनि उपजाय ।  
 नन्द के घर कृष्ण आये धर्म सब प्रगटाय ॥ १६ ॥ गोप नाचत दूध दधि  
 घृत नीर सरस न्हाय । विवस तकि नवनीत लौंदा डारत हाथ उठाय ॥ १७ ॥  
 बड़े मन ब्रजराज भूषन बसन गाय बनाय । सूत मागध विप्र बंदी किये बोल  
 बिदाय ॥ १८ ॥ घरन पठये मनोरथ सब गुनिन के पुरवाय । हरि आरा-  
 धन और सुत को उदै हृदैं लाय ॥ १९ ॥ गृह पुजाये गनिक उत्तम भली  
 भाँति बुझाय । दै असीस चले घरन प्रति परस्पर बतराय ॥ २० ॥ दै  
 बडाइ कंठ भूषन हार बसन मँगाय । नन्द दीने पहिरि फूली फिरत रोहिनी  
 माय ॥ २१ ॥ सकल ब्रज में भई संपति रमारूप बसाय । करन लीला  
 'रसिक' प्रीतम रहे ब्रज में छाया ॥ २२ ॥ दोहा—धन्य सुक मुनि धन्य भागवत

धन्य यह अध्याय । धन्य-धन्य प्रीतम 'रसिक' गाइ सरस बनाय ॥१॥  
 ❀ ११३३ ❀ राजभोग आये ❀ राग मलार ❀ आँगन दधि कौ उदधि भयो ।  
 गोपी ग्वाल फिरत महराने सकल संताप गयो ॥ १ ॥ बक्सत पगा  
 पिछोरी गुनियनि अति आनंद भयो । नंद जसोदा के मन आनंद  
 'धोंधी' के प्रभु जनम लयो ॥ २ ॥ ❀ ११३४ ❀ राजभोग दर्शन ❀ ढाढी ❀  
 ❀ राग धनाश्री ❀ हों वृषभानु को मगा, नंद उदै सुनि आयो । देवें को बडो  
 महर देत न करत गहरु लाल की बधाई पाऊं नंद को भगा ॥ १ ॥ तौलों  
 न बिदा हूँ जाऊं और के कहाँ बिकाऊं जौलों न भवन आवे ऋषि गर्गा ।  
 चिरजीवो नंद को कुमार 'सूर' के प्रान आधार जसुमति सुत चले अपने  
 पगा ॥ २ ॥ ❀ ११३५ ❀ राग धनाश्री ❀ हों ब्रजवासिन को मगा ।  
 श्रीवल्लभराज गोपकुल मंडन ए दोऊ घर कौ जगा ॥ १ ॥ नंदराय एक  
 दियो पिछौरा तामें कनक तगा । श्री वृषभानु दियो एक टोडर हीरा जटित  
 नगा ॥ २ ॥ कीरति दै कुंवरि की भगुली जसुमति सुत को भगा ।  
 'किसोरीदास' कों दियो कृपा करि नील पीत को पगा ॥३॥ ❀ ११३६ ❀

जन्माष्टमी की बधाई में फेंटा धरे तब

❀ भोग के दर्शन ❀ राग काफी ❀ एरी सखी प्रगटे कृष्ण मुरारि ॥ ब्रज  
 घर-घर आनंद भयो ॥ दधिकादों आँगन नंद के । ध्रुव । एरी सखी बाजत  
 ताल मृदंग और बाजे सब साजिकें । भवन भीर ब्रजनारि पूत भयो ब्रजराज  
 के ॥ १ ॥ घोष-घोष तें बाम वसननि सजि-सजि के गई । रोहिनी महा  
 बडभागि आदर दै भीतर लई ॥ २ ॥ बिछुवनि के भनकार गलिन-  
 गलिन प्रति हूँ रहे । हाथनि कंचनथार उर पर श्रमकन च्वै रहे ॥ ३ ॥  
 ग्वाल गोपिका जात रावरो सगरो भरि रह्यो । फूले अंग न मात सबनि  
 को भागि उघरि रह्यो ॥ ४ ॥ जहाँ ब्रजनारी आप सैन कियो ढोटा भये ।  
 तहाँ कुतूहल होत मिलि जुवती जूथनि गये ॥ ५ ॥ निरखि कमल मुख  
 चारु आनंदमय मूरति भई । लये अंचल पट छोर मन भाई असीस दई ॥६॥

राय चौकमें घेरि छिरकत दधि हरदी मेलि । पकरि पकरि कें ग्वाल बोल लेत  
 भुज भुजन पेलि ॥७॥ काँवरि मथना माट अगनित गिने नहीं जात हैं ।  
 धरे भरे सब ठौर कहां लौं सदन समात हैं ॥ ८ ॥ होत परस्पर मार  
 माखन के गेंदुक करे । एक-एक कौं ताकि बदन अंग लेपत खरे ॥ ९ ॥  
 ऊपर ते दधि दूध सीस सीसनि गागरि धरें । घौंटुन लों भई कीच रपटि  
 रपटि सगरें परे ॥ १० ॥ ब्रजगोपिन के चीर भीजि लगे अंग-अंग सों ।  
 गावत हैं जुरि झुंड अपने-अपने रंग सों ॥११॥ हो हो बोले ग्वाल हेरी दैदें  
 गाव हीं । जोरि-जोरि सब बाँह बाबा नंद नचाव हीं ॥१२॥ नंदराय बड-  
 भाग नाचत में देखत बने । फिरत मंडलाकार अंग-अंग सुखमें सने ॥१३॥  
 चिबुक-केस सब स्वेत उर पर सगरे छै रहे । रंग कुमकुमा रंग दधि दूधन  
 उरभे रहे ॥ १४ ॥ भाल विसाल रसाल फेंटा सीस सुहावनो । थोंदि थलक  
 और चाल नाचे मृदंग मिलावनो ॥ १५ ॥ गहि-गहि कें भुज-मूल रहे  
 गोप सुख मानि के । रपटि परे जनि नंद सावधान यह जानि कें ॥१६॥  
 आँगन उदधि आनंद पंक चढ्यो कटि लौं भयो । दर्ई पनारी खुलाइ सरिता  
 ज्यों वीथिनि गयो ॥ १७ ॥ भानुसुता में जाइ मिल्यो रंग आनंद में ।  
 कलंदनंदिनी, आप सुख लूटत यह फंद में ॥ १८ ॥ यह और सब  
 साधि घोष-नृपति जू न्हाइयो । जे बरसोंदी खात ते सब विप्र बुलाइयो  
 ॥ १९ ॥ पूजा पितर कराय दान करत बहु भाय सों । घर के मागध सूत  
 भगरत हैं ब्रजराय सों ॥ २० ॥ मेटत सगरी रारि मन धन देत अघाइ  
 के । करत बहुत सन्मान भूषन पट पहराय के ॥ २१ ॥ विधि सों गाइ  
 सिंगारि दर्ई द्विजनि केइ ठाठसों । जो माँगों सो देहु कहत नंद विप्र भाट  
 सों ॥२२॥ अभरन अंबर छाये सहस्र पाँच दस आइयो । हँसि-हँसि रोहिनी  
 आय ब्रज तरुनी पहिराइयो ॥ २३ ॥ घर-घर घुरत निसान कहीं न जात  
 कछु ये जियकी । मंगलमय ब्रज देस फिरत दुहाई पिय की ॥ २४ ॥



ब्रज दसा कौ रूप कहा कहूँ सखी या समै । निरखि-निरखि 'नंददास'  
नृत्य करत हैं ता समै ॥ २५ ॥ ❀ ११३७ ❀

\* जन्माष्टमी की बधाई में दुमाला धरे तब \*

❀ शृंगार ओसरा ❀ राग आसावरी ❀ प्रथम ही भादों मास अष्टमी रोहिनी  
बुधवारी । प्रगटे कूखि महिर जसोदा के लाडिले गिरिधारी ॥ १ ॥ सुनि  
ब्रजजुबती अपने श्रवनन जहाँ तहाँ तेँ धाई । मंगल थार धरे हाथनि  
पर गावति-गावति आई ॥ २ ॥ मंडित द्वारें धरत साथिये रोपति बंदन-  
माला । पाँइनि परत कहत रानी सों भले जने तुम लाला ॥ ३ ॥ करत बधाई  
जसुमति माई मगन भई रस भारी । तुम्हारी कूखि पर हम नंदरानी वारि-  
वारि सब डारी ॥ ४ ॥ बाजत थारी और मृदंगा और बाजत है ताला ।  
हरद दही की काँवरि लै लै आये गोप गुवाला ॥ ५ ॥ बैठे फूल तबे  
नंद अति ही सबहिन देत बधाई । हरी हरी दुब विप्र भाटन ले रायजू  
के सीस धराई ॥ बिनती करत कहत रायजू सों धन्य जन्म विधि कियो । ऐसो  
सुत प्रगट्यो तुम्हरे गृह आज सुफल है जियो ॥ ७ ॥ नाचत गावत करत  
कुलाहल मगन भये रस भारी । फिरि फिरि पहरि हुलसि देवे कों भूषन  
बसन उतारी ॥ ८ ॥ दीने दान विप्र भाटनि कों माला मूँदरी चीरा । रतन  
जटित कुंडल पहराये मोती भलकत हीरा ॥ ९ ॥ आनंद रस उच्छाह भाव  
सों सब ब्रज उमग्यो आज । फूले डोले यह मुख बोले पुत्र भयो ब्रजराज  
॥ १० ॥ तब नंदरानी अपनी सखनि सों आनंदराय बुलाये । पूरन भाग  
चुंबत रस आनन विहँसत भीतर आये ॥ ११ ॥ हँसि करि बोली जच्चा  
सुहागिन आओ पिय मन भाये । बैठि मतौ करिये विलसनि कों हम धर  
लालन जाये ॥ १२ ॥ चरुवा चढावनि कों पिय मेरी पहलें सास बुलावो ।  
रतन जटित गादी मूढा पर आनि के बैठावो ॥ १३ ॥ चरुवा चढावनि  
कों नख सिख लौं आभूषन पहिरावो । भाँति भाँति के चीर पाटंबर इतनी

बेर मंगावो ॥ १४ ॥ सथिये धरनि कों ननद हमारी तुम पिय बोलि लै  
 आओ । इतने जटित अपने सिंघासन आनिकें बैठावो ॥ १५ ॥ सथिये धरनि  
 कौ नेग बहुत है सो दीजे मन भायो । तातें कहत सुनों पिय तुम सों यह  
 दिन क्योंहु पायो ॥ १६ ॥ हँसि ब्रजराज कहत रानी सों यातें चौगुनो देहैं ।  
 ऐसो सुत तुम जाय दिखायो देतहु न अघे हैं ॥ १७ ॥ चंद्रावली ब्रजमंगल  
 राधे करि करि लाड बुलावो । उनही के भाग दियो फल हमकों उनहीं पे मंडवावो  
 ॥ १८ ॥ हम ही तुमही लालन लेकैं उनकी गोद बैठावो । उनको चीत्यो भयो हमारे  
 लालें तुमहि खिलाओ ॥ १९ ॥ और पिय मेरी घौरानी जिठानी आदर  
 दै बोलि लावो ॥ भाँति-भाँति सारी आभूषन सब ही कों पहिरावो ॥ २० ॥  
 थेला भरि-भरि दाम मंगावो देहु रोहिनी हाथा । हँसि हँसि खरचे रानी  
 रोहिनी जाकी सिरानी गाथा ॥ २१ ॥ गाड़ा भरि-भरि सौंज-पंजीरी इतनी  
 बेर मंगावो । गुड़ घी देखि खुरैरी मेलि पंजीरी बहोत सनावो ॥ २२ ॥  
 भरि भरि मेरी घौरानी जिठानी हँसि हँसि करिके लेहैं । यह दिन हमकों  
 दियो बिधाता देखि देखि सुख पैहें ॥ २३ ॥ हँसि ब्रजराज जू बाहिर आये  
 माय बहनि बोलि लाये । सगरी सौंज धरी लै आगें करौ आप मन भाये  
 ॥ २४ ॥ सास नवलदै चरुवा चढावै आछे चीति बनाये । भांकि-भांकि  
 देखति नंदरानी चरुवा बोहोत मन भाये ॥ २५ ॥ सोनो मोती हीरा के सब  
 आभूषन पहिराये । हंसि-हंसि पहरे सास नवलदे केऊक जोरी मंगाये ॥ २६ ॥  
 बेटी स्यामदे धरत साथिये आछे मोरि संभारे । मोतिन के अच्छत कुमकुम  
 लै चीति किये उजियारे ॥ २७ ॥ गुड़ घी पूजि सात सौंकनि सों दुहुं ओर  
 चिपकाये । सथियन को उद्योत देखिकें रानी जू बहोत सिहाये ॥ २८ ॥  
 देत भतीजे कों भगुली कुलही और हाथन को चूरा । खगवरीया कठुला  
 लटकन और पायन कों पनसूरा ॥ २९ ॥ इतनौ दे करि मानदे स्यामदे रामदे  
 भगरौ ठान्यो । तुमरो देन सुनों वीर मेरे एकौ नहिं मन मान्यो ॥ ३० ॥

हँसि ब्रजराज कहत बहनिनसों कहाँ कहा अरु दीजे । बाँह पकरि के कहत  
 रामदे कह्यो वीर मेरो कीजे ॥ ३१ ॥ लैहों भाभीजू की पायल जे हैं अति  
 बहु मोली । रानी जू को बंटा लाय आय राय जू खोली ॥ ३२ ॥ तुमारी  
 ननद हठीली छबीली ते क्योंहू नहिं माने । बोलि लई पास भाभी जू दे  
 करिके मुसिकाने ॥ ३३ ॥ भांति भांति सारी आभूषन तुम हम सब पहिरायो ।  
 मोंहो माँग्यो सो दियो बधाई जो हमारे मन भायो ॥ ३४ ॥ तुम्हारे धुरसार  
 को अलल बछेरा सो छोरि हौं लेंहों । बहोत ठाठ गाय भैंसिनि के इतनो  
 लै घर जैहों ॥ ३५ ॥ दीने ठाठ गाय भैंसिन के अरु दीने रथ जोरे । घोड़ा  
 घोड़ी बछेरी बछेरा बहु दीने खोलि डोरे ॥ ३६ ॥ गाडा भरि-भरि सोनो  
 दीनो दीने मोती हीरा । के लख गाम दिये अनगिनती ऐसे रायजू वीरा  
 ॥ ३७ ॥ मुरि करि बोली बेटी स्यामदे एक हौंस वीर मेरे । रतन जटित  
 सुखपाल मंगावो जेहैं आछी तेरे ॥ ३८ ॥ इतनी सुनि आनंदरायजू दियो  
 सुखपाल मंगाई । तामें बैठी बेटी स्यामदै भतीजे कौ नेग चुकाई ॥ ३९ ॥  
 इतनो लैकर चली स्यामदै मुरि-मुरि देत असीसा । आनंदराय कुंवर बलि  
 गिरिधर जीवौ कोटि बरीसा ॥ ४० ॥ वीरन मेरे जग उजियारे भाभी कुल  
 उजियारी । चित्र विचित्र कूखि जसोदा की जिन जायो गिरिधारी ॥ ४१ ॥  
 सोने कूखि मढाय जसोदा प्रगट्यो जग सुखदाई ॥ 'श्रीविठ्ठल' गिरिधरन  
 लाल पर बार-बार बलिजाई ॥ ४२ ॥ ❀ ११३८ ❀

### छट्ठी कौ उत्सव ( भादो बदी ७ )

❀ मंगला दर्शन ❀ राग रामकली ❀ माई सोहिलौ आज नंदमहर-गृह बाजे बाजे  
 मंदिलरा अनूपम गति । नर-नारी मिलि मंगल गावैं ऋषि मुनि वेद पढत  
 ब्रह्मा सिव सुर फूले सुरपति ॥ १ ॥ भयो आनंद तिहुँपुर घर-घर भक्त  
 अभय कीने दान अति । 'जगन्नाथ' प्रभु प्रगट भए हैं कूखि सिरानी रानी  
 जसुमति ॥ २ ॥ ❀ ११३९ ❀ शृंगार ओसरा ❀ देवगंधार ❀ लाल कौ जन्मद्यौस दिन

आयो । गाम-गामतें जाति बुलाई मोतिनि चौक पुरायो ॥ १ ॥ दिन दस  
 पहले बाजत बाजें पंच सब्द धुनि घोर । सब मिलि गावत गीत बधाई  
 देख कुतूहल सोर ॥ २ ॥ प्रथम सप्तमी रात ब्यारू कौ सब अपनी मिलि  
 जानि । पूरी बुकनी नाना बिंजन लडुवा मठरी पाति ॥ ३ ॥ इहि विधि  
 करि सब हाथ पखारे बीरा दियो मंगाय । जनम द्यौस दिन बरजत है तातें  
 कोऊ कछू नहिं खाय ॥ ४ ॥ घटिका चार घोखरानी हित सब उठे कृष्ण  
 गुन गाय । लाल न्हावत पंचामृत सों जुवती मंगल गाय ॥ ५ ॥ पुनि  
 फुलेल अरु अंग उबटनौ केसर चंदन गात । उष्णोदक न्हावे लालन अंग  
 अंगोछत मात ॥ ६ ॥ रंग केसरी बागो कुलही सूथन पटका लाल ।  
 आभूषन बहुत से पहिरे काजर नैन विसाल ॥ ७ ॥ लाल के भाल तिलक  
 गोरोचन कमलपत्र दोऊ गाल । मोरचंद गुंजा धरि बैठे सिंघासन नंदलाल  
 ॥ ८ ॥ सनमुख तब सिंगार लडेंती उत भूषन अनूप । स्याम कंचुकी सारी  
 केसरी राजत जुगल स्वरूप ॥ ९ ॥ ऊपर पीतांबर लै ओढे ब्रजजन गावत  
 गीत । कनकथार मोतिनि साथिये मुठियाँ आरती चीत ॥ १० ॥ अच्छत  
 पीरे कुमकुम घोरिकें तिलक करत हैं मात । मुठियाँ वारि आरती वारी भेंट  
 धरत बलि जात ॥ ११ ॥ तिल गुड मिली दूध अचयो पुनि बीरा देत विशेष ।  
 हरखित दान देत नंद बाबा 'द्वारकेस' प्रभु देख ॥ १२ ॥ ❀ ११४० ❀  
 ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ सब मिलि ग्वालनि देत असीस । नंदराय  
 नंदरानी कौ ढोटा जीअो कोटि वरीस ॥ १३ ॥ धन्य ये कूख भई सुभ लच्छन जिन  
 सगरो ब्रज छायो । ऐसो पूत जायो नंदरानी निज ब्रज अटल बसायो  
 ॥ १४ ॥ अब यह बेटा बढौ इन पाँइनि आँगन ठुम-ठुम डोले । 'श्रीविठ्ठल-  
 गिरिधर' रानी तुमसों मैया कहि-कहि बोले ॥ १५ ॥ ❀ ११४१ ❀

## ग्रहण की रीति के पद

राजभोग अरोग के जो ग्रहण के दर्शन खुले तो—

❀ राजभोग आरती पाछे ❀ ❀ राग सारंग ❀ जाकों वेद रटत ब्रह्मा रटत  
संभु रटत सेस रटत नारद सुक व्यास रटत पावत नहीं पार री । ध्रुवजन  
प्रह्लाद रटत कुंती के कुँवर रटत द्रुपद-सुता रटत नाथ अनाथन प्रतिपाल  
री ॥ १ ॥ गनिका गज गीध रटत गौतम की नारि रटत राजन की  
रमनी रटत सुतन दैदै प्यार री । 'नंददास' श्रीगोपाल गिरिवरधर रूप  
रसाल जसोदा कौ कुँवर लाल राधा उर हार री ॥ २ ॥ ❀११४२❀

शयन भोग अरोग के जो ग्रहण के दर्शन होय तो—

❀ राग मालव ❀ पद्म धरयो जन ताप निवारन । चारों भुजा चारों कर  
आयुध धरें नारायन भुव भार उतारन ॥१॥ चक्र-सुदर्शन धरयो कमल-कर  
भक्तन की रच्छा के कारन । संख धरयो रिपु उदर विदारन गदा धरी  
दुष्टन संहारन ॥ २ ॥ दीनानाथ दयाल जगतगुरु आरति हरन भक्त  
चिंतामनि । 'परमानंददास' कौ ठाकुर यह अवसर छाँड़ो जनि ॥ ३ ॥  
❀११४३❀ राग मालव ❀ वन्दौ धरन-गिरिवर भूप । राधिका-मुख कमल  
लंपट मत्त मधुप स्वरूप ॥ १ ॥ रसिकवर संगीत सुखनिधि क्वानित वेनु  
अनूप । 'कृष्णदास' उदार परम लौल माल अनूप ॥२॥ ❀११४४❀

दिवाली के दिन ग्रहण होय तो साँझ कूँ—

❀ शयन दर्शन में ❀ राग कान्हरा ❀ गाय खिलावन खिरक चले री ।  
गिरिधरलाल ललित लरिका संग बाबा नंद बलदाऊ भले री ॥ १ ॥  
श्रीदामा आदि सुबल अर्जुन सब भोज विसाल बने री । नाचत गावत  
करत कुलाहल करौ सिंगार आज दिवारी ॥ २ ॥ सुनि निज नाम नेंचुकी  
निकसी गाँग बुलाई काजर पीरी । कौन लाल कहे कुरुर-कुरुर डाढ मेलि  
आतुर हूँ दौरी ॥३॥ नंदकुमार निवेरि झारि मुख बछरा छोरि दिये री ।

हँसिहँसि कहत सुनोरे भैया हों खेलत खेल नये री ॥ ४ ॥ गोधन पूजि  
ग्वाल पहिराये काहू कों पगा काहू कों पिछौरी । ब्रजभामिनि मिलि मंगल  
गावत 'रसिक' प्रभु करौ राज जुग-जुग री ॥ ५ ॥ ❀ ११४५ ❀ राग कानरा ❀  
गाइ खिलाइ आये नंदनंदन सोभित ताल मृदंग बजाये । हँसिहँसि ग्वाल  
देत कर तारी आछे-आछे मंगल गाये ॥ १ ॥ अति आनंद नंद जू की  
रानी गजमोतिनि के चौक पुराये । बार-बार न्यौछावर वारत जबही लाल  
घर भीतर आये ॥ २ ॥ आछे चीर बहुत भांतिन के गोपी-ग्वाल सब  
पहिराये । 'श्रीविट्ठल गिरिधरन' लाल को मुख चूमत और लेत बलाये ॥  
॥ ३ ॥ ❀ ११४६ ❀

### → शीतकाल संबंधी रीत के ←

लाल वस्त्र को टिपारा धरे तब—

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आमावरी ❀ देखो सखी सुंदरता को पुंज ।  
अंग-अंग प्रति अमित माधुरी देखि मदन भयो लुंज ॥ १ ॥ नखसिख  
सुभग सिंगार बन्यो है सोभा मनिगन रुंज । 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरन  
लाल सिर लाल टिपारौ गुंज ॥ २ ॥ ❀ ११४७ ❀ भोग दर्शन ❀ राग पूर्वी ❀  
नाचत गावत बन तें आवत लाल टिपारौ सीस रह्यो फबि । घन तन वसन  
दामिनी मानों कुंडल किरन निरखि मोहे रवि ॥ १ ॥ 'हित हरिवंस' और  
सोभानिधि गौरज मंडित अलकनि की छवि । स्याम धाम सरस्वती सकुचि  
रही या वानिक बरनत को कवि ॥ २ ॥ ❀ ११४८ ❀ संध्या समय ❀  
❀ राग गौरी ❀ आज लाल टिपारे छवि अति जु बनी । बिच-बिच चारु  
सिखंड बिच-बिच मंजरी-न्यूत बिराजनी ॥ १ ॥ धेनु-रेनु रंजित अलका-  
वलि सगमगात सौंधे सनी । मधुप-जूथ उडिकें बैठत सखी पारिजात  
अवतंस सनी ॥ २ ॥ अंगद वलय कर मुद्रा खचित नग कटित पीत काछे  
काछनी । श्रीवत्स लक्ष्म उरहा विसद सखी कंठलसत कौस्तुभमनी ॥ ३ ॥

त्रिभंग भँवरी लेत सुख ग्रयता निधि धिमि कटि थुंग-थुंगनि ग्वाल-ताल  
गत उघटनी । 'गोविंद' प्रभु त्रैलोक विमोहित नृत्यत रसिक सिरोमनी॥४॥  
❀ ११४९ ❀ शयन दर्शन ❀ राग ईमन ❀ आवत मदन गोपाल त्रिभंगी ।  
नृत्यत आवत बेनु बजावत करत कुलाहल ग्वालन संगी ॥ १ ॥ कटि  
पीतांबर उर बनमाला बन्यो टिपारो लाल सुरंगी । बचन रसाल सुरति यों  
भूली सुनि बन मुरलीनाद कुरंगी ॥ २ ॥ बरखत कुसुम देवगन हरखत  
बाजत ढोल दमामा जंगी । 'परमानंद' स्वामी नटनागर स्याम विनोद सुरति  
रस रंगी ॥ ३ ॥ ❀ ११५० ❀

पीलेवस्त्र को टिपारा धरे तब

❀ संध्या में ❀ राग गौरी ❀ आवत ब्रज कों री गोधन मंगे । मधुव्रत  
मधुमाते सुख देत मुरली बजावत तान तरंगे ॥ १ ॥ पीत टिपारौ लाल  
काछनी कटि बनजु धात अति विचित्र सोहत साँवल अंगे । 'गोविंद' प्रभु  
पिय सखा भुज अंस धरें करत कमल गान श्रुति तरंगे ॥२॥ ❀ ११५१ ❀

\* माणिक और जडाऊ को टिपारा धरे तब \*

❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ आज बने बन तें आवत हैं गोपाल ।  
पाडर-सुगंध सुमन-निवारी कमल मल्लिका माल ॥ १ ॥ कटि पट पीत  
तिखंडी ओढें सीस जटित टिपारौ लाल । वाम दच्छिन चितवत नागर  
चंचल नैन विसाल ॥ २ ॥ फरकत श्रवन चारु चल कुंडल मृगमद तिलक  
सुभाल । संकुचित चलत अधर कर पल्लव कूजत बेनु रसाल ॥३॥ मनिगन  
खचित रुनत पग नूपुर क्वनित किंकिनी जाल । 'कृष्णदास' प्रभु मनमथ  
नायक गोवर्धनधर लाल ॥ ४ ॥ ❀ ११५२ ❀

\* और कोई जात को टिपारा धरें तब \*

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग टोडी ❀ बिमल कदंब मूल अवलंबित ठाडे हैं  
पिय भानु-सुता तट । सीस टिपारो कटि लाल काछिनी उपरैना फरहरत

पीत पट ॥१॥ पारिजात अवतंस रुरत सखी सीस सेहरो बनी अलक लट ।  
 विमल कपोल कुंडल की सोभा मंद हास जीते कोटि मदन भट ॥ २ ॥  
 वाम कपोल वाम भुज पर धरि मुरली बजावत तान विकट छट । 'गोविंद'  
 प्रभु के जु श्रीदामा प्रभृति सखा करत प्रसंसा जय नागर नट ॥ ३ ॥  
 ❀ ११५३ ❀ राग टोडी ❀ नवल निकुंज महल रसपुंज में रसिकराय  
 टोडी स्वर गायो । मिटि गयो मान नवल नागरि को अंग ही अंग अनंग  
 जनायो ॥ १ ॥ दौरी आइ कंठ लपटानी एही तान मेरे मन भायो ।  
 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर नागर नट यह बिधि गाढौ मान मनायो ॥ २ ॥  
 ❀ ११५४ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग पूर्वी ❀ गायन सों पाछें-पाछें काछिनी  
 सों कटि काछे बन्यो है टिपारो आछो लाल गिरिधारी के । धातु को तिलक  
 किये बनी गुंजमाल हियें बनके सिंगार सब बिपिन बिहारी कैं ॥ १ ॥  
 नटवर भेष किये ग्वाल मंडली संग लिये गावत बजावत देत कर तारी के ।  
 'गोविंद' प्रभु बन तें ब्रज आवत दौरि-दौरि ब्रजनारी भाँकत मध्य जारी  
 के ॥ २ ॥ ❀ ११५५ ❀ राग नट ❀ राधे तेरे नैन किधों बट-पारे ।  
 अँखियनि डोरे चटक रहे हैं धूमत ज्यों मतवारे ॥ १ ॥ अंजन दै पिय कौ  
 मन रंजत खंजन मीन मृग हारे । 'सूरदास' प्रभु के मिलिवे कों नाचत ज्यों  
 नटवारे ॥ २ ॥ ❀ ११५६ ❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ चंद्रमा नटवारी  
 मानों साँझ समै बन तें ब्रज आवत नृत्य करन । उडुगन मानों पहाँप-अंजुली  
 अंबर अरुन बरन ॥ १ ॥ नंदमुख सन्मुख हूँ बामदेव मनावन विघ्नहरन ।  
 'नंददास' प्रभु गोपिनि के हित बंसी धरी गिरिधरन ॥ २ ॥ ❀ ११५७ ❀

\* किरिटी धरे तब \*

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग धनाश्री ❀ आज अति सोभित हैं नंदलाल ।  
 क्रीट मुकुट सिर सुभग बिराजत गलें फूलन की माल ॥ १ ॥ ठाडे कुंज-  
 द्वार राधा सँग बेनु बजायो रसाल । 'परमानंददास' कौ ठाकुर बलि बलि



गई ब्रजबाल ॥ २ ॥ ❀ ११५८ ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग पूर्वी ❀ सोहत  
गिरिधर मुख मृदुहास । कोटि मदन कर जोरि उपासित विगलित भ्रूविलास  
॥ १ ॥ कुंडल लोल कपोलन की छवि नासा मुक्ता प्रकास । सोभा सिंधु  
कहाँ लौं बरनों बारने 'गोविंददास' ॥ २ ॥ ❀ ११५९ ❀

— पीलो दुमालौ धरें तब

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग टोड़ी ❀ अधिक रजनी मानी हो नंदलाल ।  
दुलहिन संग बिराजत चित्रसारी सुंदर नैन विसाल ॥ १ ॥ पीत दुमालो सुखद  
सुख सुंदर गुनमै दसित सोभा भारी करत अधरामृत पान रसाल । रंग महल  
बैठे 'नंददास' प्रभु सीत-बस होत मनहुँ अधिक गोपाल ॥ २ ॥ ❀ ११६० ❀  
❀ राग आसावरी ❀ ए, दोऊ एकरंग रंगे गहरे रंग मजीठ । हौं वाके मन वे  
मेरे मन बसि रहे आली री कहा करेगौ बसीठ ॥ १ ॥ पीत दुमालो लाल  
सिर सोहै तासों मेरो मन मोह्यौ अद्भुत छवि देखि मानो सिला भई लीठ ।  
'ब्रजाधीस' प्रभु संग लाज गई मेरी मुसकि ठगौरी लागी तातैं बावरी सी  
डोलों वे तो लंगर ढीठ ॥ २ ॥ ❀ ११६१ ❀

\* रंग-विरंगी दुमाला धरे तब \*

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आसावरी ❀ अति छवि बन्यौ दुमालो सीम ।  
मन्मथ मान हरन हरि चितवत आज बन्यौ गोकुल को ईस ॥ १ ॥ ठाढ़े  
निकसि सिंघद्वार ह्वै संग सखा लीने दस बीस । 'परमानंददास' कौ ठाकुर  
जीअौ कोटि बरीस ॥ २ ॥ ❀ ११६२ ❀

\* दुपेंची खिरकीदार पाग धरे तब \*

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मालकोस ❀ आये हो जु अलसाने जो ए हम  
जानि पाये अनत रंग-रंगे राग के । रीभे काहु तिय सों रीभि को सवाद  
जान्यौ रस के चखैया भँवर काहु बाग के ॥ १ ॥ जहीं ते जु आए लाल  
तहीं क्यों न जाओ जू जाके रस सों रस पागे जाग के । 'तानसेन' के प्रभु